अजय शर्मा कृत 'नौ दिशाएं' उपन्यास का मनोवैज्ञानिक अध्ययन

AJAY SHARMA KRIT NAU DISHAYEN UPNYAS KA MANOVAIGYANIK ADHYAYA

Submitted To
LOVELY PROFESSIONAL UNIVERSITY
In partial fulfillment of the requirements for the award of degree of
MASTER OF PHILOSOPHY(M.Phil) In Hindi

Submitted By
Vikas Prashar
Regd. No. 11512302
Department of Hindi

Supervised By
Dr. Vinod Kumar
Department of Hindi

FACULTY OF ARTS & LANGUAGES
LOVELY PROFESSIONAL UNIVERSITY
2016

घोषणा-पत्र

मैं विकास पराशर घोषणा करता/ करती हूँ कि मैने 'अजय शर्मा कृत 'नौ दिशाएं' उपन्यास का मनोवैज्ञानिक अध्ययन' विषय पर लवली प्रोफ़ैशनल युनिवर्सिटी, फगवाड़ा (पंजाब) के अन्तर्गत हिन्दी विषय की एम.फिल.की उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत्त लघु शोध-प्रबन्ध डॉ. विनोद कुमार, असिस्टेंट प्रोफ़ैसर, स्कूल ऑफ़ आर्टस एंड लैंग्वेजेज़, लवली प्रोफ़ैशनल युनिवर्सिटी, फगवाड़ा (पंजाब) के निर्देशन में स्वयं पूर्ण किया है तथा यह मेरा मौलिक कार्य है।

मैं यह भी घोषणा करता / करती हूँ कि मेरे द्वारा प्रस्तुत्त यह लघु शोध-प्रबन्ध आंशिक अथवा पूर्ण रूप से किसी अन्य उपाधि के लिए अन्य किसी विश्वविद्यालय को प्रस्तुत्त नहीं किया गया है।

दिनांक. 28-11-2016

नाम. विकास पराशर
रजि. 11512302
एम. फ़िल. (हिन्दी)

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि सुश्री/ श्री. विनोद कुमार ने अजय शर्मा कृत,'नौ दिशाएं' उपन्यास का मनोवैज्ञानिक अध्ययन' विषय पर लवली प्रोफ़ैशनल युनिवर्सिटी, फगवाड़ा (पंजाब) के अन्तर्गत हिन्दी विषय की एम.फिल.की उपाधि आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत्त लघु शोध-प्रबन्ध मेरे निर्देशन में स्वयं पूर्ण किया है। तथा जो इनका मैलिक कार्य है। मेरे संज्ञान में यह लघु शोध-प्रबन्ध आंशिक अथवा पूर्ण रूप से किसी अन्य उपाधि के लिए अन्य किसी विश्वविद्यालय को प्रस्तुत्त नहीं किया गया है।

मैं प्रस्तुत्त लघु शोध-प्रबन्ध को एम. फ़िल.(हिन्दी) की उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु मुल्यांकनार्थ प्रस्तुत्त करने की संतुति प्रदान करता हूँ।

दिनांक. 28-11-2016

डॉ. विनोद कुमार (17203)
असिस्टेंट प्रोफ़ैसर,
स्कूल ऑफ़ आर्टस एंड लैंग्वेजेज़,
लवली प्रोफ़ैशनल युनिवर्सिटी, फगवाड़ा (पंजाब)

प्राक्कथन

आधुनिक हिन्दी उपन्यास के विकास में जिनका विशिष्ट प्रतिफलन बड़ी शीघ्रता एवं व्यापकता से हुआ है, उनमें मनोविश्लेषणवाद महत्वपूर्ण है। मनोविज्ञान ने उपन्यास की कथावस्तु को स्थूल से सूक्ष्म चितंन की ओर अग्रसित किया। व्यक्तिवादी चितंन धारा ने व्यक्ति को अत्याधिक आत्मकेन्द्रित और अतंर्मुखी बना दिया है, परिणामत: सामाजिक यथार्थवादिता की अभिव्यक्ति में मानव मन की कुंठा, अनास्था एवं अव्यक्त इच्छाओं के रहस्यों का उदघाटन औपन्यासिक ढंग से हुआ। इस चित्रण में मनोवैज्ञानिकता का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। साहित्य लेखन वास्तविकता तथा कल्पना का ऐसा अद्‌भुत मेल है,जिसमें लेखक के भावों की अभिव्यक्ति होती है। अभिव्यक्ति केवल शब्दों का आदान-प्रदान ही नहीं है, बल्कि जीवन की महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है और अभिव्यक्ति के लिए भावों, भाषा और शब्दों की आवश्यकता होती है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, अत: समाज में सामन्जस्य स्थापित करने हेतु सवांद संचार के माध्यम से उसे अपने आप को अभिव्यक्त करना होता है तथा दूसरी यह पाठक को आनन्द से भरपूर कर देता है। उसकी विचारधारा में बदलाव लाता है। सत्य से काल्पनिकता में तथा कल्पना से वास्तविकता में बदल सकता है। साहित्यिक कार्य हेतु साहित्यकार को सभ्यता, संस्कृति तथा समसामयिक ज्ञान के गहन अध्ययन तथा उसके निर्विघ्न तथा निरंतर यथार्थ चित्रण को कल्पना में डुबो कर बड़े ही प्रभावशाली तरीके से पेश करना होता है, जिस से वह अपनी मानसिक संतुष्टि के साथ-साथ सामाजिक कल्याण में भी सहायक रहे।

'साहित्य' शब्द का शाब्दिक अर्थ स+हित है। अर्थात सब का हित चाहने वाली रचना। ऐसी कोई भी रचना जो मानव के कल्याण में अपना योगदान डालती हो, उसके मार्गदर्शन का कारण बनती है, उसे साहित्य की कोटि में गिना जाता है । इसलिए जीवन के प्रति इस रुझान से रहित जो भी कुछ लिखा गया हो, वह साहित्य नहीं कहला सकता।

साधारणत: एक ऐसी लिखित रचना जो मानव हित में हो, 'साहित्य' कही जा सकती है। वैसे तो कहानी, नाटक, निबन्ध, रिर्पोताज, एंकाकी, उपन्यास इत्यादि को साहित्य के दायरे मे सम्मिलित किया गया है, किन्तु कभी-कभी हम धर्म, दर्शन, इतिहास, राजनीति, अर्थशास्त्र, भूगोल इत्यादि को भी साहित्य में शामिल कर लेते है। उस समय यह साहित्यशास्त्र बन जाता है। संस्कृत में साहित्य शब्द के लिए एक शब्द 'वाड.मय' आता है जिसका अर्थ है भाषा के माध्यम से जो कुछ भी लिखा जाए या कहा जाए वाड़मय है, इसके अन्दर काव्य तो है ही, वह सभी प्रकार के शास्त्र आ जाते हैं जो किसी के विषय के हो सकते हैं। इसलिए साहित्य चाहे किसी भी भाषा से संम्बन्धित हो मानव कल्याण हेतु आदर्शवाद के रूप में विद्यमान रहेगा। वर्तमान समाज का रहन-सहन पदार्थवादी दुनिया की तंगदिली का प्रत्यक्ष प्रमाण है, जो उसे बाहर से खुशहाल एंव अन्दर से कंकाल बने रहने पर मजबूर किये जा रहा है। धर्म, जाति, वर्ण-व्यवस्था, ईष्या, शारीरिक कमजोरी, विचारों में हल्कापन, भाषा, पैसा, अमीरी-गरीबी, बेरोजगारी, कमजोर मानसिकता और झूठे दिखावे ने मानव जाति को अनेकों ऐसी भयानक शारीरिक और मानसिक बीमारियां प्रदान की है, जो मानवता के विनाश हेतु विधयमान रहती हैं।समय के बदलाव ने जीवन के प्रत्येक पहलू पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया है, जिसके कारण प्रत्येक वस्तु, हालात, व्यवहार व

विचारधारा में बदलाव आना स्वाभाविक है। साहित्यकार एवं साहित्य पर भी इसका प्रत्यक्ष प्रभाव देखने को मिलता है।
साहित्य और समाज का घनिष्ठ सम्बन्ध है। जो परिस्थिति समाज में घटित होती है अर्थात समाज का प्रभाव साहित्य पर और साहित्य का समाज पर आवश्य ही पड़ता है।
मानव मन में नई-नई जिज्ञासाएँ उत्पन्न होती रहती है। तर्कशील तथा विवेकसयुंक्त प्राणी होने के कारण मनुष्य अपनी जिज्ञासाओं से सम्बन्धित क्षत्रों में नए-नए प्रयोगों के द्वारा अन्वेषणों में प्रवृत रहता है। शोध जीवन का आधार है। बिना शोध के जीवन भटक जाता है। मनोविज्ञान का मनुष्य के जीवन के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। यदि मनुष्य के मनोविज्ञान को ना समझा जाए तो वह कुंठा का शिकार हो जाता है।

हिन्दी उपन्यास जगत में डा. अजय शर्मा एक जाने-माने साहित्यकार है। उनके उपन्यास मनुष्य के जीवन के साथ सम्बंधित है तथा वास्तविकता को प्रकट करते है। मानव मन की कुंठाओं, अजनवीपन, विकृतियों आदि का वर्णन उन्होंने अपने उपन्यासों में किया हैं। मनुष्य के सूक्ष्म से सूक्ष्म मनोभावों की अभिव्यक्ति उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रकट की है।'चेहरा और परछाई', 'खुली हुई खिड़की','आकाश का सच','बसरा की गलियां','काल कथा','शहर पर लगी आंखें' तथा नौ दिशाएं ऐसे ही उपन्यास है जिनमें उन्होंने मानव मन की अनुभूतियों को अपनी मनोवैज्ञानिक लेखनी के माध्यम से पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। समकालीन समाज की नब्ज को आत्मसात करने में वह सक्षम दिखाई देते है। ज़िदंगी की कठोर विषमताओं और विकृतियों की भावुक एवं कलात्मक अभिव्यक्ति के कारण पाठक के मन में उनकी रचनाओं ने चिरस्थायी प्रतिष्ठा प्राप्त की है। सहज सामान्य भाषा में निश्चल बेबाक अभिव्यक्ति, समाज-सापेक्ष विषयों के शावत संदर्भों में प्रस्तुतीकरण, नारी- मन की सहज पीडाओं की मार्मिक अभिव्यक्ति, मानव मन के गहन एवं जटिल व्यापारों का सहज चित्रण आदि अजय शर्मा की रचनाओं की अपनी विशेषताएँ है। 'नौ दिशाएं' उपन्यास भी इसी कोटि का एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। जिसमें उन्होंने स्त्री-पुरुष की मानसिकता, उनके क्रिया-कलापों का वर्णन मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के आधार पर किया है, जो कि प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध का उद्देश्य है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध पांच अध्यायों में विभाजित है।

अध्याय एक 'सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि' को तीन भागों में विभाजित किया गया है। उपभाग में विषय से संबंधित समस्या-कथन प्रस्तुत्त किया गया है। इसके साथ ही समस्या की प्रासागिंता को भी स्पष्ट किया गया है। प्रत्येक विषय का कोई न कोई उद्देश्य अवश्य ही होता है तभी वह विषय सफल होता है। प्रस्तुत्त शोध को सफल बनाने के लिए उद्देश्यों का निर्माण किया है ताकि लघु शोध प्रबन्ध को एक नई दिशा मिल सके। कार्य जितना सीमा में होगा उतना ही सफल और सुव्यस्थित होगा। प्रस्तुत शोध कार्य की सीमाओं क निश्चित किया है ताकि कार्य सही समय पर तथा सुव्यस्थित ढंग से हो जाए। प्रत्येक कार्य को करने के लिए ज्ञान का होना अति आवश्यक है और यह ज्ञान पुस्तकों, समाचार पत्रों, शोध प्रबन्धों से प्राप्त किया जा सकता है ताकि अपने विषय को सही ढंग से किया जा सके। प्रस्तुत लघु शोध को ठीक ढंग से करने के लिए तथा अपने ज्ञान में वृद्धि के लिए पूर्व सम्बद्ध साहित्यावलोकन की सहायता ली गई है। विषय को करने के लिए उसको एक नई दिशा देने

के लिए विधियों की आवश्यकता होती है। उसके बाद मनोविज्ञान की सैद्धान्तिक अवधारणा को स्पष्ट किया गया है। जिस में मनोविज्ञान की परिभाषा मनोविज्ञान की ऐतिहासिक परम्परा, मनोवैज्ञानिक के सम्प्रदाय, मनोविज्ञान के आधारभूत तत्व तथा मनोविज्ञान के प्रकारों का विस्तृत अध्ययन किया गया हैं। उसके उपरांत लेखक के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है।

अध्याय दो 'नौ दिशाएं उपन्यास में सामान्य मनोविज्ञान' में सामान्य मनोविज्ञान के बारे में बताया गया है तथा सामान्य मनोविज्ञान के तत्वों जैसे सहनशीलता, प्रेम, यथार्थ आदि को डा. अजय शर्मा के उपन्यास 'नौ दिशाएं' के माध्यम से उदाहरणों सहित प्रस्तुत किया गया है ताकि शोध को वैज्ञानिक रूप दिया जा सके।

अध्याय तीन में 'नौ दिशाएं उपन्यास में असामान्य मनोविज्ञान' को प्रस्तुत किया गया है। इस अध्याय में भी असामान्य मनोविज्ञान के बारे में विस्तृत चर्चा की गई है। असामान्य मनोविज्ञान को पूरी तरह से समझने के लिए असामान्य मनोविज्ञान के अर्थ, परिभाषा तथा उसके स्वरूप को प्रकट किया गया है। इसी प्रकार असामान्य मनोविज्ञान के तत्वों को जैसे अंह, क्रोध, संदेहशीलता, ईर्ष्या, कुंठा तथा अंतर्द्वन्द को डा. अजय शर्मा के उपन्यास 'नौ दिशाएं' के माध्यम से उदाहरणों सहित प्रस्तुत किया गया है ताकि शोध कार्य को तर्क संगत बनाया जा सके।

अध्याय चार में 'नौ दिशाएं उपन्यास में नारी मनोविज्ञान' को प्रस्तुत किया गया है। इस अध्याय में नारी के मनोविज्ञान को प्रस्तुत किया गया है। किस प्रकार एक नारी की मानसिक स्थिति में परिवर्तन आता है का चित्रण बड़े ही सशक्त ढंग से किया गया है। इसी अध्याय के अंतर्गत नारी मनोविज्ञान के तत्वों जैसे कि अंतर्द्वन्द्व,ईर्ष्या ,अंह ,क्रोध आदि का वर्णन डा. अजय शर्मा के उपन्यास 'नौ दिशाएं' के माध्यम से उदाहरणों सहित प्रस्तुत किया गया है।

अध्याय पांच में 'नौ दिशाएं' उपन्यास में समाज मनोविज्ञान' को प्रस्तुत किया गया है। जिसमें समाज मनोविज्ञान के अर्थ, उसकी परिभाषाओं को प्रस्तुत किया गया है। इसके साथ समाज मनोविज्ञान केर प्रमुख तत्वों जैसे कि अन्त:क्रिया और नेतृत्व आदि को डा. अजय शर्मा के उपन्यास 'नौ दिशाएं' के माध्यम से उदाहरणों सहित प्रस्तुत किया गया है।

विषयानुक्रमणिका

प्राक्कथन 3-5

अध्याय एक: सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि 1-27

1.1. समस्या कथन

1.2. समस्या का औचित्य

1.3. शोध का उद्धेश्य

1.4. परिकल्पना

1.5. परिसीमांकन

1.6. शोध कार्य में चुनौतियाँ

1.7. शोध प्रविधि

1.8. पूर्व सम्बद्ध साहित्यावलोकन

1.9. मनोविज्ञान की सैद्धान्तिक अवधारणा

1.9.1 मनोविज्ञान की परिभाषा

1.9.2.मनोविज्ञान: एक ऐतिहासिक परम्परा

1.9.3.मनोविज्ञान के प्रकार

1.9.4. मनोवैज्ञानिक के सम्प्रदाय

1.9.5. मनोविज्ञान के आधारभूत तत्व

1.10. अजय शर्मा: व्यक्तित्व एवं कृतित्व

अध्याय दो: 'नौ दिशाएं' उपन्यास में सामान्य मनोविज्ञान 28-48

2.1'नौ दिशाए उपन्यास में सहनशीलता तत्व की अभिव्यक्ति'

2.2 'नौ दिशाएं उपन्यास में प्रेम तत्व की अभिव्यक्ति'

3.3 'नौ दिशाएं उपन्यास में यथार्थ तत्व की अभिव्यक्ति'

अध्याय तीन: 'नौ दिशाएं' उपन्यास में असामान्य मनोविज्ञान 49-56

3.1'नौ दिशाएं उपन्यास में अंह तत्व की अभिव्यक्ति'

3.2 'नौ दिशाएं उपन्यास में क्रोध तत्व की अभिव्यक्ति'

3. 3'नौ दिशाएं उपन्यास में संदेहशीलता तत्व की अभिव्यक्ति'

3.4 'नौ दिशाएं उपन्यास में ईर्ष्या तत्व की अभिव्यक्ति'

3.5 'नौ दिशाएं उपन्यास में कुंठा तत्व की अभिव्यक्ति'

3.6 'नौ दिशाएं उपन्यास में अंतर्द्वन्द्व तत्व की अभिव्यक्ति'

अध्याय चार: 'नौ दिशाएं' उपन्यास' में नारी मनोविज्ञान 57-73

4.1 'नौ दिशाएं उपन्यास में अंतर्द्वन्द्व की अभिव्यक्ति'

4.2 'नौ दिशाएं उपन्यास में ईर्ष्या की अभिव्यक्ति'

4.3 'नौ दिशाएं उपन्यास में अंह की अभिव्यक्ति'

4.4 'नौ दिशाएं उपन्यास में क्रोध की अभिव्यक्ति'

अध्याय पांच: नौ दिशाएं उपन्यास में समाज मनोविज्ञान 74-86

5.1 'नौ दिशाएं' उपन्यास में अन्त:क्रियाओं की अभिव्यक्ति'

5.2'नौ दिशाएं' उपन्यास में नेतृत्व तत्व की अभिव्यक्ति'

उपसंहार 87-89

परिशिष्ट 90-93

संदर्भ ग्रंथ सूची 94-97

अध्याय एक
सैद्धांतिक पृष्ठभूमि
समस्या कथन

डॉ. अजय शर्मा कृत 'नौ दिशाएं 'उपन्यास का मनोवैज्ञानिक अध्ययन

आधुनिकता के साथ-साथ मनुष्य की सोच में भी परिवर्तन आ गया है। आज मनुष्य की सोच उसी तक सीमित हो गई है अर्थात उसमें स्वार्थी पन आ गया है। जिसके कारण उसकी मानसिकता निम्न स्तर की हो गई है जो समाज के लिए एक गंभीर समस्या है।

समस्या का औचित्य

अगर हम सही अर्थों में समाज में सकारात्मक बदलाव चाहते हैं तो हमें खुद ऐसे मुद्दे उठाने चाहिए जो पूर्णत: सामाजिक बदलावो में सहायक हो। हमारे देश में हिन्दु- मुस्लिम वर्गो के मन में कड़वाहट, अपने-२ धर्मों के प्रति कट्टरता, जीवन में चुनौतियों का सामना करने में अक्षमता, मनोविकारो से भरपूर, अमीरों की गरीबों के प्रति उदासीनता, इन सभी के पीछे मनुष्य की सोच है। यदि हम उस सोच को साकारात्मक रूप दे देते हैं तो समाज में बहुत कुछ ठीक हो जाएगा। समाज में नई चेतना का विकास हो जाएगा। मनोविज्ञान के द्वारा हम यह कार्य कर सकते हैं।

शोध के उद्धेश्य

प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किसी भी उद्धेश्य की प्राप्ति के लिए मानव किसी कार्य को अंजाम देता है। तात्पर्य यह है कि प्रत्येक कार्य किसी न किसी निश्चित उद्धेश्य के साथ शुरू किया जाता है तथा उसकी पूर्ति के बाद समाप्त होता है। किसी भी कार्य को करने के लिए उद्धेश्य सीढ़ियों का काम करते हैं। उद्धेश्य के अभाव में मनुष्य अपने गन्तव्य तक नहीं पहुँच पाता तथा रास्ते से भटक जाता है। प्रस्तुत शोध के उद्देश्य निम्नांकित हैं।

मनुष्य की मानसिक वृत्तियों को स्पष्ट करना:

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहते हुए अनेक प्रकार के परिवर्तन मनुष्य में आते है। समाज में रहते हुए उसे अनेक प्रकार के कायदे कानूनों का पालन करना पड़ता है। नैतिक दबावों के कारण उसे अपनी अभिव्यक्ति का अवसर नहीं मिल पाता, जिसके कारण उसमें आन्तरिक द्वन्द्व पैदा हो जाता है, जो मानसिक विकृतियों को जन्म देता है। यदि उसकी मानसिक विकृतियों को दूर नहीं किया अर्थात उसका समाधान नहीं किया तो यही विकृतियां समाज के लिए हानिकारक सिद्ध हो

सकती हैं। हमारा मौलिक कर्त्तव्य है कि हम मनुष्य की इन मानसिक विकृतियों को उजागर करें, ताकि मानव में आन्तरिक द्वन्द्व की स्थिति न बनी रहे।

मानसिक वृत्तियों के कारणों को उजागर करना:

जब मनुष्य असामान्य व्यवहार करने लगता है, तो वह सामान्य से भिन्न हो जाता है अर्थात उस में बुद्धि तथा सहनशीलता की कमी हो जाती है,जो समाज के हित के विरुद्ध होता है। इसके लिए मनुष्य को दोष नहीं दिया जा सकता, क्योंकि बदलती परिस्थियों से या सामाजिक बन्धनों के कारण मनुष्य के मन में विद्रोह उत्पन्न हो जाता है और यही विद्रोह मानसिक विकृतियों को जन्म देता है। यदि हमें मानव को पूर्णतया ठीक करना है, उसे मानसिक रूप से स्वस्थ करना है तो उसकी मानसिक विकृतियों के कारणों को उजागर करना होगा। जव कोई भी समस्या उत्पन्न होती है, तो उसकी जड़े अवश्य ही होती है। इसी प्रकार जब मनुष्य सामान्य से भिन्न हो जाता है, तो इसका भी कारण अवश्य होता है। इसी प्रकार मानसिक विकृतियों के कारणों को उजागर करना भी हमारे शोध का मुख्य उद्देश्य है।

लेखक द्वारा दिए गए संकेतो के माध्यम से मानसिक तत्वों को प्रस्तुत करना:

जब कोई साहियकार अपनी रचना का निर्माण करता है, तो उसका मुख्य उद्देश्य समाज का कल्याण होता है। समाज के कल्याण के साथ- साथ साहित्कार समाज के लिए कई आदर्श भी प्रस्तुत करता है। जब साहित्यकार अपने साहित्य का सृजन करता है, तो उसमें उसकी मानसिकता को भी देखा जा सकता है। उदाहरणस्वरूप इलाचन्द्र जोशी, जैनेन्द्र आदि के उपन्यासों में स्त्री-पुरुष सम्बन्धों , काम भावना, कुंठा का चित्रण अधिक मात्रा में देखने को मिलता हैं क्योंकि बह सभी फायड से प्रभावित थे। इसी प्रकार जब कोई भी साहित्यकार अपना साहित्य लिखता है तो उसमें वह कई ऐसे संकेत देता है जो मानसिक तत्वों को प्रस्तुत करते है अर्थात व्यक्ति की मानसिकता को दिखाते है।

मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में डा.अजय शर्मा के स्थान को निर्धारित करना।

मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में डा.अजय शर्मा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जैनेन्द्र, अज्ञेय इलाचन्द्र जोशी, मन्नू भण्डारी की परम्परा को उन्होनें अग्रसर रखा। अपने पात्रों के मन का विश्लेषण करने में वह सफल रहे। एक आम आदमी की मन की स्थिति कैसे होती है और कब उसमें परिवर्तन आ जाता है,का वर्णन उन्होनें अपनी मनोवैज्ञानिक लेखनी के माध्यम से किया है। 'नौ दिशाए' उपन्यास ही नहीं बल्कि उनके सभी उपन्यास जैसे 'लकीर के आर पार', 'चेहरा और परछाई',' खुली हुई खिड़की', 'आकाश का सच', मनोवैज्ञानिक दृष्टि को उजागर करते है, जो डा शर्मा को एक मनोचिकित्स के रुप में प्रकट करते है।

शोध कार्य में चुनौतियाँ

समस्या जीवन का अभिन्न अंग है। यह मुख्यत: मनुष्य के प्रत्येक कार्य में अपना अस्तित्व दिखाती है।सही अर्थों में यदि देखा जाए तो समस्या किसी भी कार्य को प्रोत्साहित करने का तथा नये कार्यो की खोज करने का एक मात्र साधन है।

मनोवैज्ञानिक आधार ढूंढने में समस्या:- किसी भी कथा साहित्य का विश्लेषण करना सरल कार्य नहीं होता है। इसी प्रकार किसी भी कथा साहित्य का विश्लेषण मनोविज्ञान के आधार पर करना कठिन कार्य होता है।

सैद्धांतिक चुनौतियाँ:

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। अपने आप को सभ्य समाज में समाहित करने हेतु उसे बहुत सारी सैद्धांतिक विचारधाराओं जैसे रीति रिवाजों, धर्म, जाति, सम्प्रदाय, सिद्धांत इत्यादि को अपनाना पड़ता है। शोध में भी शोध के विषयानुसार बहुत सी सद्धैान्तिक समस्याए आती है। जिस समुदाय में प्राणी वास करता है, उसके लिए तो वह अनुकूल है। किन्तु दूसरे समुदाय के लोगों के लिए उस समय प्रतिकूल हो जाता है, जब व्यक्ति के मन में सैद्धांतिक कट्टरता या मानसिक संकुचिता आ जाती है। शोध प्रक्रिया में जब इस से संबंधित कार्य करना पड़ता है तो उस वर्ग या समुदाय की सैद्धांतिक अवधारणा हमारे शोध कार्य मे समस्या पैदा करती है।

भाषा सम्बन्धी चुनौतियाँ:

शोध कार्य में शोधार्थी को भाषा की समस्या का भी सामना करना पड़ता है। मनोविज्ञान का विषय एक अलग विषय है, क्योकि मनोविज्ञान में बहुत सारे ऐसे शब्द होते है जिनका सम्बन्ध विज्ञान के साथ होता है और शोधार्थी को इनका पूरा ज्ञान नहीं होता,जिस से उसे भाषा की समस्या का सामना करना पड्ता है। इसके अतिरिक्त लेखक की क्षेत्रीय भाषा का सामना भी शोधार्थी को करना पड़ता है। डा. अजय शर्मा पंजाब के लेखक है तथा उनके उपन्यास 'नौ दिशाएं' मे पंजाबी के मुहावरों का प्रयोग भी हुआ है जैसे

'तू आपणी संभाल तैनूं होर नाल की,
तू गठ्ड़ी संभाल तैनूं चोर नाल की'

हिन्दी के छात्र होने के कारण इस प्रकार भाषा की समस्या का सामना भी करना पड़ता है।

परिसीमांकन:

कार्य कोई भी हो उसकी सीमाएं निश्चित होती है। प्रत्येक कार्य को करने के लिए उसका दायरा होता है। उस दायरे या सीमा में वह कार्य सम्पन्न होता है तभी उसकी गुणवता बढ़ती है। वैसे तो हिन्दी साहित्य उपन्यास के क्षेत्र में बहुत सारे लेखक है जिन्होनें मनोविज्ञान को आधार बनाकर अपने साहित्य का सृजन किया है, जिनमें उन्होंने मानव मन का सूक्ष्म से सूक्ष्म अध्ययन किया है। लेकिन इस शोध कार्य में मै डा. अजय शर्मा के बहुचर्चित उपन्यास 'नौ दिशाए' को ही अपने शोध का विषय बनाऊगा तथा उस पर ही अपना ध्यान केंद्रित करुगां।

परिकल्पना:

किसी भी कार्य को करने से पहले उसके सम्भावित परिणामों को उजागर करना ही परिकल्पना कहलाता है।

1. उपन्यास के माध्यम से मनोविज्ञान के प्रत्येक पहलू का वर्णन किया गया है।
2. उपन्यास में बदलती परिस्थितियों में घिरते मानव की पीड़ा को उजागर किया है।
3. उपन्यास में मनुष्य के आन्तरिक द्वन्द्व को प्रस्तुत किया गया है।
4. प्रत्येक साहित्यकार मानव कल्याण हेतु अपनी रचनाओं को एक आदर्शवाद के रूप में प्रस्तुत करता है। डा. अजय शर्मा ने भी एक मनोचिकित्सक के रूप में काम किया है।

शोध प्रविधि:

शोध कार्य में शोध प्रविधि का बहुत महत्व होता है। शोध प्रविधि शोधार्थी को उस के कार्य को वैज्ञानिक ढंग से पूर्ण करने में सहायता करती है। मैने अपने शोध कार्य में निम्नलिखित शोध प्रविधियों का प्रयोग किया है।

1.**मनोविश्लेणात्मक प्रविधि -:** सिगमडं फायड जो कि एक जाने माने वैज्ञानिक रहे है, मनोविश्लेणात्मक विधि के जनक माने जाते है। उन्होंने सम्मोहन के माध्यम से तमाम लोगो का हिस्टीरिया का सफल इलाज किया तजुर्बो के आधार पर कुछ मनश्चिकित्सा से संबंधित सिद्धांत पेश किये जो आजकल मनोविश्लेषण –संबंधी सिद्धांत के नाम से प्रसिद्ध है। सिगमंड फायड का मानना था कि व्यक्ति के मन के तीन भाग होते है चेतन, अर्ध-चेतन तथा अचेतन। सिगमंड को विश्वास था कि मनुष्य अपनी इच्छाओं, यौन कामनाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति मे नाकाम

रहने पर होने बाली तकलीफ के एहसास को दबाता है। जिसके कारण उसमें कुंठा, आत्महीनता तथा हिंसा की भावना का विकास हो जाता है। डा. अजय शर्मा के उपन्यास 'नौ दिशाएं' का मनोवैज्ञानिक अध्ययन करने के लिए मनोविश्लेणात्मक विधि न्यायसंगत है।

2. समाजशास्त्रीय प्रविधि:- समाज का साहित्य से घनिष्ठ सम्बन्ध है। साहित्य समाज का दर्पण होता है।जैसा समाज होगा वैसा ही वहाँ का साहित्य होगा। अर्थात यदि समाज के लोग बुद्धिमान होगे तो साहित्य भी समृध होगा। इसके अतिरिक्त यदि समाज में नकारात्मक प्रवृतिया होगी तो साहित्य पर उसका प्रभाव आवश्य ही पड़ेगा। सरल शब्दों में कहा जा सकता है कि जैसा देश होगा वैसा ही साहित्य होगा। इस प्रकार जो भी कथा लिखी जाती है उस पर समाज का प्रभाव आवश्य ही पड्ता है। समाज के लोगो तथा समाज को समझने के लिए समाजशास्त्रीय विधि अधिक सार्थक है। इस लिए मैंने अपने शोध प्रबन्ध में समाजशास्त्रीय विधि का प्रयोग किया है।

3. **तुलनात्मक प्रविधि:-** तुलनात्मक विधि जैसा कि इसके नाम से ही यह प्रतीत होने लगता है कि एक ऐसे विधि जिसका प्रयोग तुलना के लिए किया जाता है। शोध कार्य वैज्ञानिक कार्य विधि पर आधारित होता है। शोध में शोधार्थी के लिए अपनी बात को सिद्ध करने के लिए दूसरे साहित्यकारों का भी सहारा लेना पड़ता हैं। तुलनात्मक विधि में शोधार्थी एक या एक से अधिक साहित्यकारों के दृष्टिकोणों की तुलना करता है। प्रत्येक व्यक्ति में भिन्नता पाई जाती है और यही भिन्नता उसके अपने शोध कार्य में तुलनात्मक विधि का प्रयोग किया है।

पूर्व सम्बद्ध साहित्यावलोकन:

वैसे तो शोध एक ऐसा कार्य है जिसमें जितना प्रवेश करते जायेंगें उतना ही विस्तार से जानकारियां प्राप्त होती जायेंगी। जिज्ञासु-प्रवृति मानव मन की एक ऐसी अवस्था है,जो प्राप्ति के बाद अत्यन्त उग्र हो जाती है 'और आगे क्या हो सकता है?' इस प्रश्न का उतर खोजती रहती है और इस खोजने की प्रक्रिया फलस्वरूप शोध निरंतर चलती रहती है। शोध सही दिशा में निरंतर चलती रहे इसके लिए सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा या सर्वेक्षण एक ऐसा बिन्दु है जो हमारे धन, समय और शक्ति की बचत करता है तथा शोध कार्य की अनावश्यक दोहराई से हमें बचाता है। इसलिए शोध प्रक्रिया का यह मूल बिन्दु है। हमें यहाँ एक और बात का ध्यान रखना है कि सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा करने के भी कई नियम है। जो कि निम्नलिखित है।

1.सर्व प्रथम शोधार्थी को अपनी समस्या के सभी पहलुओं की स्पष्ट जानकारी होनी चाहिए। स्पष्ट जानकारी के अभाव में यदि वह साहित्य पढ़ना शुरू करेगा तो बहुत से असम्बन्धित साहित्य के अध्ययन में समय नष्ट कर देगा।

2.समस्या के सभी पहलुओं की एक पूर्ण सूची तैयार करने के *बाद* यह पता लगाना आवश्यक है कि इन पहलुओं में से प्रत्येक पर कौन- कौन से अनुसंधान कार्य हुए हैं।

डॉ अजय शर्मा के कथा साहित्य के मनोवैज्ञानिक अध्ययन के अन्तर्गत यहाँ पर सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा के दौरान इसे तीन भागों में विभाजित किया गया है।

1. सैद्धांतिक मनोविज्ञान पर उपलब्ध साहित्य।

2. डॉ. अजय शर्मा के साहित्य पर किया गया कार्य।

3. हिन्दी कथा साहित्य पर मनोवैज्ञानिक दृष्टि से किया गया कार्य।

सैद्धांतिक मनोविज्ञान की पुस्तकें : सैद्धांतिक मनोविज्ञान की पुस्तकों में मनोविज्ञान से सम्बधित पुस्तको को लिया गया है अर्थात सिद्धात से सम्बंधित पुस्तको का वर्णन इसमें किया गया है। उदारणस्वरूप मनोविज्ञान किसे कहते है? मनोविज्ञान का अर्थ, मनोविज्ञान के सम्प्रदाय, मनोविज्ञान के प्रकार, मनोविज्ञान का इतिहास, मनुष्य में मनोविज्ञान किस प्रकार से कार्य करता है आदि सभी वर्णन इसके अन्तर्गत किए गए है।

1. बृज कुमार मिश्र, "मनोविज्ञान मानव व्यवहार का अध्ययन", दिल्ली: पी.एच. आई बुक हाउस, 2012: यह पुस्तक मनोविज्ञान पर आधारित है। इस में मनोविज्ञान के बारे मे पूर्ण विस्तार से बताया गया है। मनोविज्ञान क्या होता है? उसका अर्थ, उसकी परिभाषाएं ।मनुष्य में मनोविज्ञान किस प्रकार से कार्य करता है? इस लिए मैंने इसका प्रयोग अपने शोध कार्य में किया है।

2. डॉ. महेश भार्गव तथा डॉ.मीनू भार्गव,''मानव विकास का मनोविज्ञान'', आगरा: एच.पी.भार्गव बुक हाउस, 2008: 'मानव विकास का मनोविज्ञान' पुस्तक में मानव मनोविज्ञान के बारे में बताया गया है कि किस प्रकार मनुष्य की विभिन्न अवस्थाओं में उसके मनोविज्ञान का स्तर बदलता रहता है। शैशव, बाल्यकाल तथा किशोरावस्था में उसका मानसिक स्तर बदलता रहता है। इस पुस्तक के अध्ययन के बाद मनुष्य के मानसिक स्तर को समझने में सहायता मिली है। इस लिए मैंने इसका प्रयोग अपने शोध कार्य में किया है।

3. नारायण शास्त्री, ''भारतीय मनोविज्ञान'', वाराणसी: विश्वविधालय प्रकाशन, 2007: 'भारतीय मनोविज्ञान' पुस्तक में भारतीय मनोविज्ञान के बारे में विस्तार से चर्चा की गई है। भारत में मनोविज्ञान का क्या रुप था तथा कौन- कौन ऐसे ग्रंथ थे जो मनोवैज्ञानिक दृष्टि से पूर्ण थे। उदारणस्वरुप वेदान्त, उपनिषद, भगवतगीता, मनुस्मृति आदि । यह सभी ग्रंथ भारतीय मनोविज्ञान का प्रतिनिधित्व करते थे। इस पुस्तक के अध्ययन के बाद मुझे भारतीय मनोविज्ञान के बारे में पूर्ण जानकारी प्राप्त हुई, जिसका मैंने अपने शोध कार्य मे प्रयोग किया।

4. डॉ अरूण कुमार सिंह, डॉ आशीष कुमार सिंह, "मनोविज्ञान के सम्प्रदाय एवं इतिहास'', आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन, 2012: इस पुस्तक में मनोविज्ञान के विभिन्न सम्प्रदायों के बारे में विस्तार से बताया गया है, जैसे कि संरचनावाद, प्रकियावाद, व्यवहारवाद: गेस्टालल्ट आदि सम्प्रदायों का अर्थ, उनकी परिभाषाएँ तथा उनका इतिहास इत्यादि पर प्रकाश डाला गया है। इस पुस्तक के अध्ययन के बाद शोधार्थी को प्रत्येक सम्प्रदाय की जानकारी प्राप्त हो जाती है। इस लिए मैंने इसका प्रयोग अपने शोध कार्य में किया है।

5. आर.एन सिहं तथा शुभ्रा एस.भारद्वाज, ''मूल मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाएँ'', आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन, 2012: इस पुस्तक में मनोविज्ञान का अर्थ, उसकी परिभाषाएँ जिसमें उसकी दार्शनिक परिभाषा, संरचनावादी परिभाषा, व्यवहारवादी परिभाषा, आधुनिक परिभाषा आदि पर गहराई से प्रकाश डाला गया है। जिसको पढ़ने से शोधार्थी को मनोविज्ञान के प्रत्येक पक्ष का ज्ञान हो जाता है। जिस से बह मनोविज्ञान को भली- भांति समझ जाता है। मनोविज्ञान के प्रत्येक पक्ष की जानकारी के लिए मैंने इस पुस्तक का प्रयोग अपने शोध कार्य में किया है।

6. डॉ. डी एन श्रीवास्तव, ''व्यक्तित्व का मनोविज्ञान'', आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन, 2012: इस पुस्तक में 'व्यक्तित्व का' अर्थ, उसकी परिभाषा के बारे में बताया गया है। व्यक्तित्व मनोविज्ञान (Personality psychology) की वह शाखा है जो व्यक्तित्व एवं व्यक्तिगत अन्तरों का अध्ययन करती है। इस पुस्तक के अध्यय के बाद शोधार्थी को व्यक्ति के विभिन्न दृष्टिकोणों का ज्ञान हो जाता है। जिसे से वह उसे मनोवैज्ञानिक स्तर पर परखने मे सक्षम हो जाता है।

7. डॉ. डी एन श्रीवास्तव, ''फ़्रायड मनोविश्लेषण'', दिल्ली: राजपाल एण्ड सन्ज, 2010: इस पुस्तक में डॉ. डी एन श्रीवास्तव ने 'फ़्रायड के मनोविश्लेषण सिद्धांत को विस्तार से समझाया है। उन्होंने फ़्रायड द्वारा दिए मन के तीन भेदों चेतन,अर्द्धचेतन तथा अचेतन पर विस्तार से चर्चा की है।

कोई भी शोधार्थी जो मनोविज्ञान के क्षेत्र में अपना शोध कार्य कर रहा है, उसे फ्रायड़ के मनोविश्लेषण सिद्धांत की पूर्ण जानकारी होनी चाहिए। फ्रायड़ प्रमुख मनोवैज्ञानिक है। उनके सिद्धांत के बारे में पढ़ना प्रत्येक शोधार्थी के लिए आवश्यक है। इसलिए मैंने इस पुस्तक का अध्ययन किया।

8. बृज कुमार मिश्र, ''मानस रोग असामान्य मनोविज्ञान'', दिल्ली: पी.एच. आई बुक हाउस, 2011: इस पुस्तक में असामान्य मनोविज्ञान के बारे मे बताया गया है कि असामान्य मनोविज्ञान'क्या होता है? असामान्य मनोविज्ञान' के क्या-क्या लक्ष्ण होते है तथा इसे किस प्रकार से दूर किया जा सकता है। इस के साथ-साथ विभिन्न विद्वानों की परिभाषाएँ भी दी हुई है, जिसको पढ़ने के बाद शोधार्थी को असामान्य मनोविज्ञान के अर्थ, स्वरूप की जानकारी हो जाती है। असामान्य मनोविज्ञान मनोविज्ञान की एक शाखा है, जिसका ज्ञान होना शोधार्थी के लिए अति आवश्यक है।

9. डा. मुहम्मद सुलेमान ''असामान्य मनोविज्ञान विषय और व्याख्या'', आगरा: एच.पी.भार्गव बुक हाउस, 2011: इस पुस्तक में असामान्य मनोविज्ञान (Abnormal Psychology) के विषय को गहराई से समझाया गया है। इस के अतिरिक्त इस पुस्तक में असामान्य मनोविज्ञान के अन्तर्गत आने वाले कुछ महत्त्वपूर्ण विषय हैं- जैसे कि असामान्य व्यवहार के सामान्य सिद्धान्त एवं मॉडल, असामान्य व्यवहार के कारण, स्वप्न,चिंता विकृति (Anxiety disorder), मनोविच्छेदी विकृति, मनोदैहिक विकृति, व्यक्तित्व विकृति, द्रव्य-संबंद्ध विकृति, मनोदशा विकृति (Mood disorder), व्यामोही विकृति, (Delusional disorder), मानसिक मंदन, (Mental retardation), मनश्चिकित्सा (Psychotherapy) आदि। इन सभी के ज्ञान से शोधार्थी असामान्य मनोविज्ञान को पूरी तरह से समझ जाता है।

10. एस.एन शर्मा, ''आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान के आधार'', आगरा: एच.पी.भार्गव बुक हाउस, 2011: इस पुस्तक में सामान्य मनोविज्ञान (Normal Psychology) के विषय को गहराई से समझाया गया है। जिसमें सामान्य मनोविज्ञान का अर्थ, उसकी परिभाषाएँ तथा उसके स्वरूप को विस्तार से उजागर किया गया है। सामान्य मनोविज्ञान भी मनोविज्ञान की एक शाखा है, जो सामान्य रूप से सभी व्यक्तियो का प्रतिनिधित्व करती है। इस के अतिरिक्त इस पुस्तक मे सामान्य मनोविज्ञान के तत्व जैसे प्रेम, सहनशीलता, विद्रोह, धैर्य आदि तत्वों का भी वर्णन किया गया है। इस पुस्तक के अध्ययन से शोधार्थी को सामान्य मनोविज्ञान के

स्वरूप तथा उसके तत्वों का ज्ञान भली- भांति हो जाता है, जो मनोवैज्ञानिक शोध के लिए आवश्यक है।

11. हंसराज भाटिया, "सरल मनोविज्ञान' दिल्ली: राजकमल प्रकाशन", 2005: इस पुस्तक में सरल मनोविज्ञान विषय पर चर्चा की गई है। सामान्य मनोविज्ञान का अर्थ, उसकी परिभाषाएँ तथा उसके स्वरूप पर विस्तार से विचार- विमर्श किया गया है। सामान्य मनोविज्ञान के तत्वों पर भी प्रकाश डाला गया है। सामान्य मनोविज्ञान को अच्छी तरह से समझने के लिए इस पुस्तक का अध्ययन आवश्यक है। इसलिए मैंने अपने शोध को सफल बनाने के लिए इस पुस्तक का अध्ययन किया।

12. डा. मैथिली प्रसाद भारद्वाज, ''पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत'', चण्डीगढ़: हरियाणा साहित्य अकादमी,1988: इस पुस्तक में पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत तथा पाश्चात्य विद्वान जैसे प्लेटो, अरस्तू, होरेस, विलियम वर्डस्वर्थ, क्रोचे आदि विद्वानों द्वारा दिए सिद्धांतों का गहराई से वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त साहित्य, समाज और साहित्य का समाजशात्र आदि विषयों की महत्ता पर भी प्रकाश डाला गया है। इस पुस्तक के अध्ययन से शोधार्थी साहित्य तथा सिद्धांत को समझ जाता है तथा उसका प्रयोग अपने शोध कार्य में करता है।

13. डा.मनमोहन सहगल, डा. हुक्मचंद राजपाल,''इन्दु बाली और उनका रचना संसार'', कश्मीरी गेट दिल्ली: आत्माराम एन्ड संस, 1991: इस पुस्तक में हिन्दी की प्रसिद्ध लेखिका इन्दु बाली के व्यक्तित्व और उनकी रचनाओं का विस्तृत वर्णन किया गया हैं। इसके अतिरिक्त उनके उपन्यासों जैसे कि 'वाँसुरिया वज उठी', 'नारी मन की टीस' तथा इसके साथ- साथ समीक्षात्मक शोधपरक निबंध जैसे 'नारी मन की अप्रतिम चित्रकार', 'विखरती आकृतियों में झाँकती नारी' का भी वर्णन किया गया है। लेखिका इन्दु बाली के सभी उपन्यास नारी की मानसिक स्थिति अर्थात नारी मनोविज्ञान पर आधारित है। इस लिए मैंने इस पुस्तक का प्रयोग अपने शोध कार्य में किया है।

14. डॅा.आर.एन सिंह, ''समाज मनोविज्ञान'' आगरा: एच.पी.भार्गव बुक हाउस, 2007: इस पुस्तक में डॅा.आर.एन सिंह ने समाज मनोविज्ञान' के बारे में अपने गहन विचार प्रकट किए है, कि समाज मनोविज्ञान' किसे कहते है, इसके स्वरूप तथा इसके तत्वों जैसे कि भीड़, समुदाय, श्रोता आदि का वर्णन किया है। इस पुस्तक के अध्ययन के बाद शोधार्थी समाज

मनोविज्ञान तथा उसके तत्वों के बारे मे ज्ञान प्राप्त कर लेता है, जो मनोवैज्ञानिक शोध के लिए आवश्यक है।

15. आशापूर्णा देवी ''कसौटी उपन्यास'' नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन, 2010: प्रस्तुत उपन्यास 'कसौटी' में दो लघु उपन्यास है। पहला उपन्यास 'कसौटी' पति-पत्नी के प्रेमसंबंध का अनोखा उदाहरण है। दूसरे उपन्यास में 'उज्जवल उन्मोचन' में प्रेम का एक अलग रूप उन्मोचित होता है। ये दोनों उपन्यास मानवमन की- जटिलताओं पर प्रकाश डालते हैं। कभी-कभी परिस्थितियाँ ऐसी बन जाती है कि एकाएक ह्रदय निवारण हो जाता है और सत्य अपना स्वरूप उन्मोचित करता है। इन दोनों उपन्यासों में इसी सत्य को बड़ी ही कुशलता और सूक्ष्मता के साथ उकेरा है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह इस उपन्यास का अध्ययन करना शोधार्थी के लिए अति आवश्यक है।

डॉ. अजय शर्मा पर किया गया कार्य

1. डॉ. अजय शर्मा के उपन्यासों में परिवेश, कचन पंजाब यूनिवर्सिटी, 2011: यह शोध प्रबन्ध अभी पंजीकृत हुआ है। इस पर शोध कार्य चल रहा है। लेकिन यह शोध प्रबन्ध डॉ. अजय शर्मा के उपन्यासों में परिवेश पर आधारित हैं। जिसमें शोधार्थी ने उनके उपन्यासों के पारिवारक पारिवारिक परिवेश, सामाजिक परिवेश, राजनैतिक परिवेश, आर्थिक परिवेश पर प्रकाश डाला है।

2. प्रो. हरमहेन्द्र सिंह बेदी, , डॉ. सुधा जितेन्द्र (संपा.),' डॉ. अजय शर्मा का कथा – संसार' (जालंधर: साहित्य सिलसिला प्रका, 2010: डॉ. अजय शर्मा का कथा – संसार इस पुस्तक का सम्पादन प्रो. हरमहेन्द्र सिंह बेदी(विभागाध्यक्ष हिंदी विभाग, गुरु नानक देव विश्वविघालय अमृतसर(तथा डॉ. सुधा जितेन्द्र (रीडर हिंदी विभाग, गुरु नानक देव विश्वविघालय, अमृतसर-है। इसके अतिरिक्त इस पुस्तक में पचास से अधिक भिन्न ने किया (भिन्न लेखकों नेडॉ. अजय शर्मा के उपन्यासों पर अपनी कलम चलाई है। इस से यह बात सिद्ध होती है कि डॉ. अजय शर्मा की प्रसिद्धी काफी फैली हुई है। इस पुस्तक के अध्ययन के बाद शोधार्थी डॉ. अजय शर्मा के उपन्यासो को भली भांति समझ जाएगा।

हिन्दी कथा साहित्य पर मनोवैज्ञानिक दृष्टि से किया गया कार्य

1.कोच्चुराणी जोस्फ़, मन्नू भण्डारी की कहानियों में नारी मनोविज्ञान, शो. प्र.(महात्मा गांधी, विश्वविद्यालय, कोटटयम): इस शोधप्रबन्ध में मन्नू भण्डारी की कहानियों में नारी मनोविज्ञान को प्रस्तुत किया गया है। नारी मनोविज्ञान के प्रत्येक पहलू का वर्णन बड़े ही सूक्ष्म ढंग से किया गया है। इस शोधप्रबन्ध के अन्तर्गत पारिवारिक नारी की मानसिकता, मध्यवर्गीय नारी की मानसिकता जिसमें उसके अतद्वन्द्व, अचेतन मन की स्थिति तथा काम वासना को वड़े ही मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया गया। इस शोधप्रबन्ध के अध्ययन के बाद शोधार्थी नारी मनोविज्ञान के प्रत्येक पहलू को भली भांति समझ जाएगा तथा उसका प्रयोग कर पाएगा।

2. सतीश कुमार, आधुनिक हिन्दी रामकाव्य में समाज मनोविज्ञान, शो. प्र. (महात्मा गांधी विश्वविघालय,कोटटयम): इस शोधप्रबन्ध में आधुनिक हिन्दी रामकाव्य में समाज मनोविज्ञान की भूमिका का वर्णन किया गया है। इस के अतिरिक्त समाज मनोविज्ञान को पूरी तरह से रेखांकित किया गया है,जिसमें समाज मनोविज्ञान की परिभाषा तथा उसके तत्वों का वर्णन भी किया गया है। इस शोधप्रबन्ध को पढ़ने के बाद शोधार्थी समाज मनोविज्ञान तथा उसके तत्वों का ज्ञान उसे हो जाता है। इस शोधप्रबन्ध का अध्ययन मनोवैज्ञानिक शोध के लिए अतिआवश्यक है।

3. अगस्टिन जोण, इलाचन्द्र जोशी के उपन्यासों में चरित्र- चित्रण: मनोवैज्ञानिक परिपेक्ष्य, शो. प्र. .(महात्मा गांधी विश्वविघालय,कोटटयम): यह शोधप्रबन्ध इलाचन्द्र जोशी के उपन्यासों के पात्रों के मनोवैज्ञानिक चरित्र पर आधारित है। इस शोधप्रबन्ध में इलाचन्द्र जोशी के विभिन्न उपन्यासों जैसे सन्यासी, पर्दे की रानी, प्रेत और छाया तथा निर्वासित में पात्रों के अहम, काम वासना, क्रोध, लज्जा, हिंसा की भावना को बड़े ही मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। मनोवैज्ञानिक शोध के लिए यह शोधप्रबन्ध शोधार्थी के लिए एक नई रोशनी का मार्ग प्रस्तुत करता है।

4. कुन्जुंजमा सी, जैनेन्द्र के उपन्यासों में नारी मनोविज्ञान, शो. प्र.(महात्मा विश्वविघालय,कोटटयम): इस शोधप्रबन्ध मे जैनेन्द्र के उपन्यासों में नारी मनोविज्ञान को प्रकट किया है। जैनेन्द्र कुमार एक मनोचिकित्सक की भांति मनुष्य के मन के पारखी रहे है और

इसी प्रतिभा का वर्णन उन्होंने अपने उपन्यासों परख, सुनीता, त्यागपत्र तथा कल्याणी मे किया है। जिसमें उन्होंने एक नारी की मानसिक स्थिति का वर्णन बहुत ही सूक्ष्म ढंग से किया है। नारी मनोविज्ञान के अध्ययन के लिए यह शोधप्रबन्ध उचित है।

5. अजीत कुमार सी, जैनेन्द्र के उपन्यासों में अहम् का साक्षात्कार: एक मनोविश्लेणात्मक अध्ययन, शो. प्र.(एन. एस. एस, हिन्दु कालेज, चगंनाचेरी): इस शोधप्रबन्ध में जैनेन्द्र के उपन्यासों में पात्रों के अहम् को प्रस्तुत किया गया है। इसके साथ-साथ आल्फ्रेड एडलर जिन्होंने अंह को व्यक्ति में सर्वोपरि माना है, कि विचारधारा का भी वर्णन किया है। उनकी विचारधारा के अध्ययन के बाद शोधार्थी अहं के रूप को समझ जाता है तथा पात्रों के संवादों के द्वारा उसको प्रकट करता है।

6. इलाचन्द्र के उपन्यासों में नारी-चरित्र, शोधार्थी मीना सिन्ह, डॉ. हुकुमचन्द, राजपाल,"शब्द सरोकार त्रैमासिक साहित्यिक हिंदी पत्रिका" (जनवरी-मार्च 2013): इस साहित्यिक पत्रिका में शोधार्थी ने इलाचन्द्र जोशी के उपन्यासों में नारी-चरित्र को मनोवैज्ञानिक ढंग से उजागर किया है। इस में उसने नारी की मानसिक स्थिति को प्रकट किया है।

7. यशपाल के उपन्यासों में व्यक्त बाल मनोविज्ञान, डॉ. हुकुमचन्द, राजपाल," शब्द सरोकार त्रैमासिक साहित्यिक हिंदी पत्रिका" (अप्रैल-जून 2010): इस साहित्यिक पत्रिका में शोधार्थी ने यशपाल के उपन्यासों में व्यक्त बाल मनोविज्ञान को प्रकट किया है। यशपाल ने अपने उपन्यासों में जैसे कि 'मेरी तेरी उसकी बात', झूठ सच', 'अमिता',' पार्टी कामरेड' आदि उपन्यासों के माध्यम से बच्चों की मानसिकता को बड़े ही सूक्ष्म ढंग से प्रस्तुत किया है। बाल मनोविज्ञान को समझने के लिए मैने इस साहित्यिक हिंदी पत्रिका का प्रयोग किया है।

मनोविज्ञान की सैद्धांतिक अवधारणा

मनोविज्ञान का अर्थ:

मनोविज्ञान मानव मन का विज्ञान है। 'मनोविज्ञान प्राणियों के व्यवहार एवं मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करने वाला विज्ञान है। [1] मन भावों, मनोविकारों और अनुभूतियों का कोष है। मनोविज्ञान के द्वारा इन्ही भावों, मनोविकारों और अनुभूतियों की व्याख्या प्रस्तुत की जाती है। मनोविज्ञान के विषय की ओर मनुष्य का मन सदा आकर्षित रहा है। उसे अपने और दूसरों के स्वभावों, गुणों, व्यवहारों, संबंधों, प्रयासों, सुख-दुखों तथा अन्य अनुभवों में रुचि रही है। मनुष्य की इस सब उधेडबुन की सदियों तक प्रेक्षणों, अनुमानों, वाद- विवादों एव खोजों की अनेक धाराएँ चलती रही है। उन्हीं मे से मनोविज्ञान का जन्म एंव विकास हुआ।

मनोविज्ञान शब्द की उत्पत्ति:

मनोविज्ञान शब्द का पहला प्रयोग सत्रहवीं शताब्दी में हुआ। मनोविज्ञान को अंग्रेज़ी में ' Psychology ' कहते है। 'इस शव्द की उत्पति ग्रीक भाषा के 'Psyche' और ' Logos ' शब्दों के मेल से हुई है। 'Psyche का अर्थ है ' आत्मा और Logos का अर्थ है ' विचार करना '। इस प्रकार साइकोलॉजी का अर्थ है- आत्मा का अध्ययन।'[2] ऐसा भी कहा जाता है कि ग्रीक भाषा के सुखी शब्द से ' सैक्किक ' शब्द निकला है। प्लेटो, अरस्तु जैसे यवन आचार्यों ने इस शब्द के लिए जीवन, चेतन, आत्मा जैसे अर्थो का प्रयोग किया है। इस के आधार पर कहा जा सकता है कि सैक्किक से संबंधित शास्त्र है साइकोलॉजी (मनोविज्ञान)

मनोविज्ञान की परिभाषाएँ:

मनोविज्ञान की निश्चित परिभाषा देना कठिन कार्य है क्योकि मन की क्रियाशीलता को विज्ञान के नियमों में बांधना सरल कार्य नहीं है। जितनी इसकी खोज होती है उतनी ही नई परते खोलती जाती है। मनोविज्ञान एक अध्ययन प्रक्रिया है, जिसके आधार पर मन की गतिविधियों को कार्य कारण में बांधने का प्रयास किया जाता है। समय- समय पर विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने अपने चिंतन,मनन, परीक्षण एंव अध्यनन के आधार पर विभिन्न विचार प्रकट किये है। जो कि निम्नलिखित है। जिनको पढ़ने के पश्चायत हम मनोविज्ञान को अच्छी तरह से समझ जाएगें

पाश्चात्य विचारधारा के अनुसार मनोविज्ञान:

1. वेब्स्टेर्स डिक्शनरी के अनुसार, "मन एवं मानसिक प्रक्रियाओं, अनुभवों, इच्छाओं इत्यादि से संबंधित विज्ञान मनोविज्ञान है।" [3]

2. ओक्सफोड डिक्शनरी के अनुसार,"मानव की आत्मा तथा मन की प्रकृति कार्यो का विज्ञान मनोविज्ञान है।" [4]

3. जेम्स के अनुसार,"मनोविज्ञान वह विज्ञान है, जो मनुष्य तथा पशु के व्यवहार का अध्ययन करता है। जहाँ तक व्यवहार का अर्थ है यह व्यवहार अन्तर्जगत के मनोभावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति है।"[5]

4. वुड्वर्थ के अनुसार,"मनोविज्ञान सम्बन्धित वातावरण में व्यक्ति की क्रियाओं का विज्ञान है।[6]

5. वाटसन के अनुसार, "मनोविज्ञान, व्यवहार का निश्चित या शुद्ध विज्ञान है।" [7]

भारतीय विचारधारा के अनुसार मनोविज्ञान:

1. बृहत हिन्दी कोश के अनुसार," मनोविज्ञान मानव मन की प्रकृति, वृत्तियों आदि का विवेचन करने वाला विज्ञान एवं मानस शास्त्र है।"[8]

2. मानक हिन्दी कोश में, "मनोविज्ञान वह विज्ञान या शास्त्र है जिसमें मनुष्य के मन उसकी विभिन्न अवस्थाओं तथा क्रियाओं, उस पर पडने वाले प्रभावों आदि का अध्ययन तथा विवेचन होता है।"[9]

3. डाँ नगेन्द्र के अनुसार, "मनोविज्ञान के अंतर्गत मस्तिष्क की विविध क्रियाओं एवं शक्तियों का तथा मानव स्वभाव एंव कार्यो की मूल प्रवृत्तियों एंव प्ररेणाओं का अध्ययन किया जाता है।"[10]

मनोविज्ञान: एक ऐतिहासिक परम्परा

मनोविज्ञान की भारतीय परपरा:

प्राचीन भारत में मनोविज्ञान प्रत्येक विषय के रूप में प्रचलित नहीं था। लेकिन मानव की चित्तवृत्तियों के विविध पहलूओं का अध्ययन करने के लिए भारतीय आचार्यों ने विशेष बल दिया। वेदान्त, न्याय, साहित्य के माध्यम से इसका अध्ययन किया जाता था। भारतीय मनोविज्ञान का प्रारंभिक रूप उपनिषद काल में मिलता है। जिसमें मानव मनोविज्ञान का अध्ययन किया गया है जिसमें मुख्य है-जीव और आत्मा। आत्मा को स्वतंत्र माना गया है और उसकी चार अवस्थाएँ बताई गई है- जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति और मुक्ति। इन सब का उल्लेख भगवतगीता सत, रज,तम जैसे गुण के आधार पर किया गया है। भारतीय संस्कृति के अनुसार भगवतगीता एक मनोवैज्ञानिक ग्रंथ है। गीता में भगवान कृष्ण ने काम का महत्त्व स्वीकार करते हुए कहा है,"काम को वश में किया जा सकता है। मनुष्य ही आत्मा है और आत्मा किसी भी पक्ष पर अपना अधिकार जमा सकती है अर्थात आत्मा काम को वश में कर सकती है"[11] जैन संप्रदाय में भी आत्म विकास की प्रकिया और आत्मा के स्वरुप की व्याख्याएँ मिलती हैं। बौद्ध चिंतकों में मन तथा ज्ञान के स्वरुप और प्रकिया का अध्ययन मिलता है। गौतम के न्यायदर्शन और कपिल के सांख्य दर्शन में बुद्धि, अहंकार, मन , कामेंद्रिय,ज्ञानेन्द्रिय आदि मानसिक क्रिया व्यापारों से संबंधित स्पष्ट दर्शन हमें मिलते है। भारतीय दार्शनिकों ने मन को अपने शरीर का भाग समझा है और प्रकृति को नियंत्रक। इसके द्वारा भावना, अनुभूति और सौंदर्यबोध से प्रेरित मानसिक भावों की पुष्टि होती है। बीसवी शताब्दी में महर्षि अरविंद ने चेतन का सूक्ष्म विश्लेषण किया। भारतीय चिंतकों में आत्मा का विकास, चरित्र निर्माण, मानव व्यवहार, पशु मनोविज्ञान, यौन मनोविज्ञान, मानसिक रोग, बाल स्वभाव, चिकित्सा पद्धति आदि मनोविज्ञान के विभिन्न पक्षों की जानकारी हमें दी है। कुछ लोग मनुस्मृति के स्चयिता मनु से मानव की उत्त्पति मानते हैं। 'कामायनी' नामक महाकाव्य में प्रसाद जी ने मनु को मन का प्रतीक माना है। मनुष्य जीवन के उतार चढाव, उसकी विभिन्न प्रवृतियाँ, अच्छाई-बुराई आदि की पहचान मन पर केंद्रित हैं। इसलिए मन से 'मानव संज्ञा' निकली है। विभिन्न मनोंभावों, भिन्न-भिन्न इच्छा-अनिच्छाओं, परिवर्तित मानव विधियों आदि मनुष्य में दृष्टिगत होती हैं। मनुष्य जन्म से मृत्यु तक की विभिन्न अवस्थाओं में विभिन्न मनोभावों का अनुभव करता है। समय और संदर्भानुसार यह बदलता रहता है

'भारतीय मनोविज्ञान के बारे में डॉ. सीताराम जसवाल इस प्रकार लिखते है,"भारतीय मनोविज्ञान अध्यात्मिक चिंतन का फल है। वह जीव, आत्मा, मन में भेद करता है। भारतीय चिंतन अतिसामान्य तथ्यों और पुनर्जन्म जीव के आवागमन इत्यादि के प्रति निष्ठावान है"।[12] और यह भी कहते है," भारतीय मनोविज्ञान दर्शन की एक शाखा के रूप में पल्लवित पोषित हुआ है जब कि पाश्चायत काव्य शास्त्र का उदगम स्त्रोत यूनानी मनोविज्ञान में खोजा जाता है।"[13]

मनोविज्ञान की पाश्चात्य परंपरा:

मनोविज्ञान के अध्ययन प्रारंभिक अवस्था में आत्मा से मन को और मन से शरीर और पुन: मन और शरीर के महत्त्व को जानने में है। ग्रीक संस्कृति के आरंभ से ही पाश्चात्य लोग मन के संबंध में विशेष रूचि प्रकट करने लगे थे। पाश्चात्य मनोवैज्ञानिक चिंतनधाराओं का आविर्भाव ग्रीक से हुआ। प्लेटो ईश्वर और आत्मा में कोई भेद नहीं मानता है। अरस्तु के अनुसार,"हम पहले किसी वस्तु को देखते हैं तो उसका बोध होता है फिर उसे पाने की भावना होती है और उसके पाने का प्रयत्न करते हैं।"[14] प्रसिद्ध दार्शनिक पिनोस के अनुसार,"मन और शरीर एक वस्तु के पक्ष हैं अर्थात मन न पदार्थिक हैं न मानसिक।" [15] गेस्टाल्वादियों ने समग्र प्रत्यक्षीकरण को मनोविज्ञान का कार्यक्षेत्र माना है। उन के अनुसार जो भी मनुष्य को अनुभव होता है वह सब कुछ मनोविज्ञान का ही क्षेत्र है। इसलिए ही वुडवर्थ कहता," मनोविज्ञान परिवेश के संपर्क में होने वाले व्यक्ति के व्यापारों का विज्ञान है।" [16]

आधुनिक मनोविज्ञान और प्रमुख विचारक:

आधुनिक मनोविज्ञान दिन-प्रतिदिन प्रगति की ओर अग्रसर हो रहा है। यह मानव के सर्वांगीण विकास की ओर उन्मुख है। मनोविज्ञान का मुख्य उद्देश्य मानव की समस्याओं का समाधान करना है। यदि मनुष्य की समस्या का समाधान न किया जाए तो वह कुंठा, हीन भावना आदि का शिकार हो जाता है। जो समाज के लिए हानिकारक है तथा स्वय मनुष्य के लिए भी। मनोविज्ञान व्यक्ति की जटिल मानसिकता का अध्ययन वैज्ञानिक रीति से करता है और भविष्य में उसके जीवन को सरल से सरल बनाता है। आधुनिक मनोविज्ञान व्यक्ति की चेतना, स्मृति, कल्पना जैसी मानसिक शक्तियों का वैज्ञानिक परीक्षण करके उनका समुचित विकास करता है। शिक्षा, न्याय, धर्म, अर्थ, समाज तथा व्यापार की समस्याओं का समाधान कर देश के विकास में अपना योगदान देना आधुनिक मनोविज्ञान का प्रथम लक्ष्य है। आधुनिक मनोविज्ञान के प्रमुख विचारको में 'फ्रायड', 'एडलर', ' युंग', 'आटोरांक' , ' सेण्डर','फेरंजी', 'एलैक्सैण्डर',' केरन हार्नी', 'कोल्हर' तथा वाटसन' हैं। इसमें भारतीय मनोवैज्ञानिक जो है वे उपर्युक्त पाश्चात्य विचारकों से प्रभावित हैं। पाश्चात्य विचारकों में प्रमुख रूप से फ्रायड ने मनोविश्लेष्ण के क्षेत्र में युंग ने विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान के क्षेत्र में तथा एडलर ने वैयक्तिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में विशेष बल दिया है। इन सभी विचारकों के विचारों को हिन्दी साहित्यकारों ने अपने साहित्य में आत्मसात किया।

सिगमंड फ्रायड:

आधुनिक मनोविज्ञान में फ्रायड का नाम बहुत महत्त्वपूर्ण है। वह मौलिक विचारक थे। मन के तीन भेदों का अध्ययन करने में उनको अधिक सफलता मिली है। उन्होंनें मानव मन की अचेतन क्रियाओं का गहन अध्ययन किया। उन्होंने व्यक्ति के प्रत्येक क्रिया–कलापों एंव चेष्टाओं का

ध्यानपूर्वक निरीक्षण करके उसके कारणों पर प्रभाव डाला। फ्रायड के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति के मन में काम संबधिंत भावनाएँ रहती है। सामाजिक बन्धनों तथा भय के कारण बह इन इच्छाओं को जो कि काम से संबधिंत होती हैं, को प्रकट नहीं कर पाता है। बह अपनी इच्छाओं का दमन कर लेता है। वह समाज में स्नेह तथा आदर प्राप्त करना चाहता है, इसलिए अपनी काम भावनाओं को उजागर नहीं कर पाता। फ्रायड ने काम शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थ में किया है। इसमे प्रेम, स्नेह , ममता आदि समस्त भावनाएँ समाहित हो जाती है। इस शक्ति को उन्होनें 'लिविडों' कहा है, उन्होंनें "काम शक्ति का प्रवाह ६ प्रकार से माना है। 'वहिर्मुखीकरण, अंतर्मुखीकरण, केंद्रयण, प्रत्यावर्तन, प्रतिवर्धन तथा दिशांतरण।" [17] फ्रायड का एक और सिद्धांत है मिथुन भाव संबंधित सिद्धात। यह मौलिक और कांतिकारी है। जन्म के साथ ही वच्चों में काम भाव उत्पन्न हो जाता है। दो वर्ष की अवस्था के बाद बालक या बालिका की लिबिडो शक्ति माता –पिता में केद्रित होनी लगती है। पर इस तरह की भावना समाज में निंदनीय समझी जाती है। इसलिए इसके दमन से बालक में मातृ शक्ति ग्रंथि और बालिका में पितृ शक्ति ग्रंथी का जन्म होता है। फ्रायड के अनुसार," लिबिडों से तीन मानसिक संस्थाओं का जन्म होता है- इदम, अहम, नैतिक अहम। व्यक्ति के यह तीन मन के भाग हैं जो मूल शक्ति के स्रोत लिबिडो से ही विकसित यथार्थ के संस्कारों में अनुकूलित सामाजिक एवं नैतिक मानदंडों द्वारा परिमार्जित होकर कार्य करते है।" [18] फ्रायड ने फिर बताया है कि मनुष्य चेतन मन से नहीं ब्लकि अचेतन मन से प्रभावित होता है। यह चेतन में अपनी अभिव्यक्ति चाहता है। किंतु चेतन और अचेतन के बीच अर्धचेतन एक प्रहरी के समान रहता है जो चेतन तक पहूँचने वाली निंदनीय , निराशा जनक, लज्जोउत्पादक विचारों को रोक देता है। फ्रायड ने मनुष्य के मन को एक बडा आईस वर्ग कहा है। अचेतन मन की कार्य पद्धति निम्नलिखित रुपों में होती है।

विस्थापन: अचेन मन अपनी दबी हुई और कुंठित इच्छायें प्रकट करने के लिए विस्थापन पद्धति प्रयोग में लाता है।

संक्षिप्तीकरण : चेतन मन बहुत कुछ अनुकूल बनाने के लिए कुंठित इच्छाओं को संक्षेप में व्यक्त किया जाता है।

तादाद्म्य: अतीत के किसी दबे कुंठित विषय का सम्बंध किसी नये बाहरी विषय से कल्पना में स्थापित करता है कि इस से नय विषय के प्रति उसके अन्दर वही भावना बन जाती है जो अतीत के उस मूल विषय के प्रति थी।

प्रतीकीकरण: अचेतन मन की दमित इच्छाओं कामवासना के घोतक प्रतीकों द्वारा स्वप्नों में प्रकट होती है। स्वप्नों में माता- पिता, सम्राट- सम्रागी, राजा- रानी आदि व्यक्तियों के रुप में दिखाई देती है।

कल्पना: 'व्यक्ति के कल्पना के संसार में अचेतन मन की सारी इच्छाओं की संतुष्टि हो जाती है। वह अपनी अपूर्ण इच्छाओं की पूर्ति कल्पना के माध्यम से पूर्ण करता है।' [19]

आल्फ्रेड एडलर:

वैयक्तिक मनोविज्ञान के प्रणेता एडलर के विचारानुसार मनुष्य में सबसे प्रमुख प्रवृति काम न होकर आत्म सम्मान की है। एडलर ने जीवन शैली के अंतर्गत जीवन ल्क्ष्य को प्रमुख स्थान दिया है। उन्होंनें फ्रायड की तरह बाल कामुकता को प्रधानता नहीं दी है। उसके अनुसार जीवन में कायिकहीनता का अधिक प्रभाव रहता है। असहाय बालक में आरम्भ से ही हीनता की भावना आ जाती है। दूसरे में निर्भर रहने वाले बालक में आत्मविश्वास पैदा नहीं होता है। अत: उसे सबसे पहले हीनता की ग्रन्थि का सामना करना पड़ता है। यह हीनता की भावना सर्वप्रधान है, इसलिए क्षतिपूर्ती के लिए शक्तिशाली बनने का प्रत्यन भी होता है। हीन भावना से वशीभूत होकर व्यक्ति स्वंय को पूर्ण प्रदर्शित करना चाहता है। वह नहीं चाहता उसे कोई अपूर्ण समझे। एडलर ने कहा है," if an individual finds himself something inferior or lacking, he is driven to dia or else to make self superior in some way or atleast pretend to himself and to others that he is superior." [20]

कार्ल गुस्ताव युंग:

फ्रायड से पृथ्क होकर युंग ने अपने मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का प्रतिपादन किया। विश्लेष्णात्मक मनोविज्ञान के क्षेत्र में इनको प्रमुख स्थान प्राप्त है। युंग ने मन की तुलना सागर से की है। जिसमें एक अज्ञात मन एक द्वीप के समान है। उन्होंनें फ्रायड द्वारा दिये गए सिद्धांत को स्वीकार किया है, कितुं अधिक स्पष्ट करने के लिए उन्होंनें 'इसको अचेतन मन को दो भागों में विभगत किया है- वैयक्तिक अचेतन और समस्त चेतन। प्रत्येक व्यक्ति में अपनी जाति ,संस्कृति तथा सभ्यता के अनुरुप कुछ गुण और विशेषताएँ प्रारंभ से ही होती है। युंग ने व्यक्ति को अंतर्मुखी तथा वहिर्मुखी कहा है।"[21]

मनोविज्ञान के प्रकार :

मनोविज्ञान का विषय मानव मन और उसकी विभिन्न प्रक्रियाएं हैं। यह निर्विवाद है कि आज मनोविज्ञान का प्रभाव दिन प्रति दिन वढ़ता ही जा रहा हैं। शिक्षा , चिकित्सा, व्यापार आदि जीवन के सभी क्षेत्रों पर इसका प्रभाव स्पष्ट दिखाई दे रहा हैं।

सामान्य मनोविज्ञान:

समकालीन मनोविज्ञान में विभिन्न कसौटियों के आधार पर अनेक शाखाएं हैं जो विकास की विभिन्न अवस्थाओं और व्यवहारिक प्रयोग में विभिन्न क्षेत्रों से जुड़ी हुई विद्या-विशेषों की विस्तृत पद्धतियां हैं। ठोस सक्रियता, विकास तथा मनुष्य के समाज से संबंधों के आधार पर मनोविज्ञान की शैक्षिक, विधिक, चिकित्सीय, तुलनात्मक और अन्य शाखाओं के विपरीत सामान्य मनोविज्ञान, जैसा कि इसके नाम से ही ध्वनित होता है, मनोवैज्ञानिक परिघटनाओं का नियमन करने वाले सामान्य नियमों तथा सैद्धांतिक मूलतत्वों से और मनोवैज्ञानिक अध्ययनों में प्रयुक्त आधारभूत वैज्ञानिक अवधारणाओं तथा शोध प्रणालियों से संबंध रखता है। सरल शब्दों में यदि कहा जाए तो मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों एवं नियमों की व्याख्या करने वाली शाखा है 'सामान्य मनोविज्ञान' । इस में प्रयुक्त नियमों का उपयोग एवं परीक्षण अन्य शाखाओं में भी किया जाता है। ये नियम और सिद्धांत हर व्यक्ति पर लागू होते है। इसमें भाव ,विचार, स्वप्न, चिंतन आदि का अध्ययन किया जाता है। सामान्य मनोविज्ञान की परिभाषा देते हुए डा. अरूण कहते है,"सामान्य मनोविज्ञान वह विज्ञान है जिसके नियम और सिद्धांत हर व्यक्ति पर लागू होते है।" [22]

असामान्य मनोविज्ञान:

असामान्य मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है, जो मुख्यत: उन व्यक्तियों का अध्ययन करती हैं जो मानसिक रूप से विकृत या रुग्ण होते हैं। सरल शब्दों में उनके व्यवहार में इतनी अधिक भिन्नता होती है कि उन्हें सामान्य व्यक्ति की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता है। असामान्य मनोविज्ञान के मुख्यत: दो रूप हैं प्रथम सैद्धान्तिक तथा द्वितीय व्यावहारिक। सैद्धान्तिक रूप से यह इस बात को स्पष्ट करता हैं कि कौन सी विशेषताओं के कारण अमुक व्यक्ति असामान्य है या उसे कौन सा रोग है। विशिष्ट मानसिक रोगों का वर्गीकरण तथा उनका वर्णन करना भी इसी रूप में आता है, दूसरे शब्दों में, असामान्य मनोविज्ञान असामान्य व्यवहार व व्यक्तितत्व के सैद्धान्तिक पक्ष का विस्तृत वर्णन करता हैं। यहाँ यह भी बताना उचित होगा कि असामान्य मनोविज्ञान का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष व्यावाहारिक भी हैं। अन्य शब्दों में, वह केवल विभिन्न मानसिक व शारीरिक रोगों का वर्णन मात्र ही नहीं करता बल्कि यह भी बताता हैं इनका निदान कैसे हो, कौन कौन सी उपचारात्मक पद्धतियों का उपयोग किया जाए तथा एक सामान्य व्यक्ति अपने मानसिक स्वास्थ्य को किस प्रकार से स्वस्थ रखे। असामान्य मनोविज्ञान इस कारण भी अधिक व्यवहारिक है कि वह यह स्पष्ट करता है कि यह पूर्णत: सम्भव है कि सामान्य व्यक्ति असामान्य हो जाए और यदि असामान्य व्यक्ति का सही उपचार किया जाए तो उसे सामान्य व्यक्ति बनाया जा सकता है। इस प्रकार व्यावाहारिक शाखा से सामान्य व असामान्य दोनों प्रकार के व्यक्तियों को लाभ पहुँचता है।

साईमण्ड के अनुसार," सामान्य व्यक्ति वह है जो जीवन के संघर्षों एवं विपरीत परिस्थितियों का सामना कर सके और असामान्य व्यक्ति वह है जो साधारण सी कठिनाइयों के प्रति समायोजन करने में असमर्थ हो।" [23]

आइजेक के अनुसार," असामान्य मनोविज्ञान असामान्य व्यवहार या असामान्य व्यक्तित्व का अध्ययन है।"[24]

आपराधिक मनोविज्ञान:

आपराधिक मनोविज्ञान एक चुनौतीपूर्ण क्षेत्र है, जहां अपराधियों के व्यवहार विशेष के संबंध में कार्य किया जाता है। अपराध शास्त्र, मनोविज्ञान आपराधिक विज्ञान की शाखा है, जो अपराध तथा संबंधित तथ्यों की तहकीकात से जुड़ी है। साधारण शब्दों में हम कह सकते है कि आपराधिक मनोविज्ञान अपराध से संबंधित है जिसका कार्य अपराध के कारणों को ढूढंना तथा उनका निवारण करना है।

बाल मनोविज्ञान:

'बाल मनोविज्ञान की वह शाखा है, जिसमें गर्भावस्था से लेकर प्रौढ़ावस्था तक के मनुष्य के मानसिक विकास का अध्ययन किया जाता है। जहाँ सामान्य मनोविज्ञान प्रौढ़ व्यक्तियों की मानसिक क्रियाओं का वर्णन करता है तथा उनको वैज्ञानिक ढंग से समझने की चेष्टा करता है, वहीं बाल मनोविज्ञान बालकों की मानसिक क्रियाओं का वर्णन करता और उन्हें समझाने का प्रयत्न करता है।'(25)

विकासात्मक मनोविज्ञान:

एक वैज्ञानिक अध्ययन है जो मनुष्य के जीवन मे हो रहे परिवर्तन के बारे मे बताता है। मूल रूप से यह शिशुओं और बच्चो से संबंध रखता है ,पर इस क्षेत्र मे किशोरावस्था, वयस्क विकास, उम्र बढ़ने और पूरे जीवनकाल को भी लिया गया है। 'विकासात्मक मनोविज्ञान के तीन लक्ष्य हैं- विकासात्मक को वर्णन करना, समझाना और अनुकूलन करना। एरिक एरिक्सन एक प्रभाविक मनोविज्ञानी हैं जिन्होंने विकासात्मक विकास के बारे मे अध्ययन किया है। मानव जीवन का मनोवैज्ञानिक विकास पर चर्चा करने के लिए एरिक एरिकस ने मनोसामाजिक विकास के अपने चरणों का प्रसताव दिया। विकासात्मक मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की शाखा मानी जाती है।' [26]

शैक्षिक मनोविज्ञान (Educational psychology)

मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसमें इस बात का अध्ययन किया जाता है कि मानव शैक्षिक वातावरण में सीखता कैसे है तथा शैक्षणिक क्रियाकलाप अधिक प्रभावी कैसे बनाये जा सकते हैं। दूसरे शब्दों में हम कह सकते है कि शैक्षिक मनोविज्ञान शिक्षक तथा अधिगम के मध्य कार्य करता है तथा उन कठिनाईयों को दूर करता हैं, जो शिक्षा के क्षेत्र में रुकावट डालती है। यह शिक्षकों को बच्चे की मानसिक आयु के अनुसार पढ़ाने का निर्देशन भी देता है। शिक्षा की प्रक्रिया निरंतर चलती रहे तथा बच्चे का सर्वांगीण विकास होता रहे, जिस से उसे जीवन में नए-नए अवसर मिलते रहे । यही शैक्षिक मनोविज्ञान का मुख्य कार्य है तथा यही उसका उद्धेश्य है।

शिक्षा मनोविज्ञान की परिभाषाएँ:

स्किनर के अनुसार,"शिक्षा मनोविज्ञान मानवीय व्यवहार का शैक्षणिक परिस्थितियों में अध्ययन करता है।"[27]

क्रो एंड क्रो के अनुसार, "शिक्षा मनोविज्ञान, व्यक्ति के जन्म से लेकर वृद्धावस्था तक सीखने के अनुभवों का वर्णन तथा व्याख्या करता है।"[28]

समाज मनोविज्ञान: (Social Psychology)

मनोविज्ञान की वह शाखा है, जिसके अन्तर्गत इस तथ्य का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है कि किसी दूसरे व्यक्ति की वास्तविक, काल्पनिक उपस्थिति हमारे विचार, संवेग, अथवा व्यवहार को किस प्रकार से प्रभावित करती है। सामाजिक मनोविज्ञान में हम जीवन के सामाजिक पक्षों से सम्बन्धित अनेकानेक प्रश्नों के उत्तरों को खोजने का प्रयास करते हैं। इसीलिए सामाजिक मनोविज्ञान को परिभाषित करना सामान्य कार्य नही है। जॉन बायर्न ने ठीक ही लिखा है कि, 'सामाजिक मनोविज्ञान में यह कठिनाई दो कारणों से बढ़ जाती है : विषय क्षेत्र की व्यापकता एवं इसमें तेजी से बदलाव।' सामाजिक मनोविज्ञान को परिभाषित करते हुए उन्होंने लिखा है कि, ''सामाजिक मनोविज्ञान वह विज्ञान है जो सामाजिक परिस्थितियों में व्यक्ति के व्यवहार और विचार के स्वरूप व कारणों का अध्ययन करता है।''[29] ऐसा ही कुछ किम्बॉल यंग का भी मानना है। उन्होनें सामाजिक मनोविज्ञान को परिभाषित करते हुए लिखा है कि, ''सामाजिक मनोविज्ञान व्यक्तियों की पारस्परिक अन्तक्रियाओं का अध्ययन करता है, और इस सन्दर्भ में कि इन अन्तःक्रियाओं का व्यक्ति विशेष के विचारों, भावनाओं संवेगो और आदतों पर क्या प्रभाव पड़ता है।''[30]

शेरिफ और शेरिफ के अनुसार, ''सामाजिक मनोविज्ञान सामाजिक उत्तेजनापरिस्थिति के सन्दर्भ में - तथा व्यवहार का व्यक्ति के अनुभव वैज्ञानिक अध्ययन है।''[31]

प्रयोगात्मक मनोविज्ञान:

प्रयोगात्मक मनोविज्ञान में मुख्य रूप से उन्हीं समस्याओं का मनोवैज्ञानिक विधि से अध्ययन किया जाने लगा, जिन्हें दार्शनिक पहले चिंतन अथवा विचार विमर्श द्वारा सुलझाते थे। अर्थात् संवेदना तथा प्रत्यक्षीकरण के बाद में इसके अंतर्गत सीखने की प्रक्रियाओं का अध्ययन भी होने लगा। प्रयोगात्मक मनोविज्ञान, आधुनिक मनोविज्ञान की प्राचीन शाखा है। मनुष्य की अपेक्षा पशुओं को अधिक नियंत्रित परिस्थितियों में रखा जा सकता है, साथ ही साथ पशुओं की शारीरिक रचना भी मनुष्य की भाँति जटिल नहीं होती। पशुओं पर प्रयोग करके व्यवहार संबंधी नियमों का ज्ञान सुगमता से हो सकता है। सन् 1912 ई के लगभग थॉर्नडाइक ने पशुओं पर प्रयोग करके तुलनात्मक अथवा पशु मनोविज्ञान का विकास किया। किंतु पशुओं पर प्राप्त किए गए परिणाम कहाँ तक मनुष्यों के विषय में लागू हो सकते हैं, यह जानने के लिए विकासात्मक क्रम का ज्ञान भी आवश्यक था। थी । धीरे धीरे ज्ञान- की विभिन्न शाखाओं पर मनोविज्ञान का प्रभाव अनुभव किया जाने लगा। आशा व्यक्त की गई कि मनोविज्ञान अन्य विषयों की समस्याएँ सुलझाने में उपयोगी हो सकता है। साथ ही साथ, अध्ययन की जानेवाली समस्याओं के विभिन्न पक्ष सामने आए। परिणामस्वरूप मनोविज्ञान की नई नई शाखाओं-का विकास होता गया। इनमें से कुछ ने अभी हाल में ही जन्म लिया है, जिनमें प्रेरक मनोविज्ञान, सत्तात्मक मनोविज्ञान, गणितीय मनोविज्ञान विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

मानव प्रयोगात्मक मनोविज्ञान:

मानव प्रयोगात्मक मनोविज्ञान का एक ऐसा क्षेत्र है, जहाँ मानव के उन सभी व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है जिस पर प्रयोग करना सम्भव है। सैद्धान्तिक रूप से ऐसे तो मानव व्यवहार के किसी भी पहलू पर प्रयोग किया जा सकता है परंतु मनोविज्ञानी उसी पहलू पर प्रयोग करने की कोशिश करते हैं जिसे पृथक किया जा सके तथा जिसके अध्ययन की प्रक्रिया सरल हो। इस तरह से दृष्टि, श्रवण, चिन्तन, सीखना आदि जैसे व्यवहारों का प्रयोगात्मक अध्ययन काफी अधिक किया गया है। मानव प्रयोगात्मक मनोविज्ञान में उन मनोवैज्ञानिकों ने भी काफी अभिरुचि दिखलाई है जिन्हें प्रयोगात्मक मनोविज्ञान का संस्थापक कहा जाता है। इनमें विलियम वुण्ट, टिचेनर तथा वाटसन आदि के नाम अधिक मशहूर हैं।

पशु प्रयोगात्मक मनोविज्ञान:

मनोविज्ञान का यह क्षेत्र मानव प्रयोगात्मक विज्ञान (Human experimental Psychology) के समान है। सिर्फ अन्तर इतना ही है कि यहाँ प्रयोग पशुओं जैसे—चूहों, बिल्लियों, कुत्तों, बन्दरों, वनमानुषों आदि पर किया जाता है। पशु प्रयोगात्मक मनोविज्ञान में अधिकतर शोध सीखने की प्रक्रिया तथा व्यवहार के जैविक पहलुओं के अध्ययन में किया गया है। पशु प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के क्षेत्र में स्कीनर, गथरी, पैवलव, टॉलमैन आदि का नाम प्रमुख रूप से लिया जाता है। सच्चाई यह है कि सीखने के आधुनिक सिद्धान्त तथा मानव व्यवहार के जैविक पहलू के बारे में हम आज जो कुछ भी जानते हैं, उसका आधार पशु प्रयोगात्मक मनोविज्ञान ही है। इस मनोविज्ञान में पशुओं के व्यवहारों को समझने की कोशिश की जाती है। कुछ लोगों का मत है कि यदि मनोविज्ञान का मुख्य संबंध मानव व्यवहार के अध्ययन से है तो पशुओं के व्यवहारों का अध्ययन करना कोई अधिक तर्कसंगत बात नहीं दिखता। परंतु मनोविज्ञानियों के पास कुछ ऐसी बाध्यताएँ हैं जिनके कारण वे पशुओं के व्यवहार में अभिरुचि दिखलाते हैं। जैसे पशु व्यवहार का अध्ययन कम खर्चीला होता है। फिर कुछ ऐसे प्रयोग हैं जो मनुष्यों पर नैतिक दृष्टिकोण से करना संभव नहीं है तथा पशुओं का जीवन अवधि (life span) का लघु होना प्रमुख ऐसे कारण हैं। मानव एवं पशु प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के क्षेत्र में कुछ मनोविज्ञानियों की संख्या का करीब 14% मनोविज्ञानी कार्यरत है।

मनोवैज्ञानिक सम्प्रदाय:

मनोविज्ञान में दर्शन शास्त्र से लेकर वैज्ञानिक स्वरुप पाने तक की अपनी यात्रा में काफी उतार चढाव है। मनोविज्ञान में अनेक छूटने तथा बहुत कुछ जुड़ने की प्रक्रिया होती है। इस से ही मनोविज्ञान के क्षेत्र में विस्तार हुआ। इस के साथ- साथ अनेक सम्प्रदायों का विकास भी हुआ। यहाँ उन्ही का उल्लेख किया जा रहा है। जो 19- 20 वी शती में निर्मित हुए। जिन्होनें लोक सस्कृति को तथा साहित्य को भी प्रभावित किया।

संरचनावाद:

इस सम्प्रदाय की स्थापना लिपाजिंग में हुई। इस सम्प्रदाय के अंतर्गत मनोविज्ञान को चेतना का विज्ञान माना गया है। चेतन अनुभवों को मनोविज्ञान की विषय- वस्तु माना गया है। इस की स्थापना करने का गौरव वुट को जाता है। "वुंट ने बताया कि भाव ,संवेग एवं प्रतिभा के मिलन से चेतना का विकास होता है।"[32]

प्रकियावाद:

"वुंट के शिष्य कैटल ने चेतना को नजर अंदाज़ करके जीवन की विभिन्न दैनिक मनोवैज्ञानिक समस्याओं का अध्ययन किया। ''डार्विन का विकासवाद तथा जेम्स का परिणाममूलक दर्शन इसके मूल स्त्रोत रहे है।"[33]

व्यवहारवाद:

"प्रतिकियाओं के बाह्रा अध्ययन की महत्ता पर मूल रुप से बल देने वाला मनोवैज्ञानिक सम्प्रदाय है व्यवहारवाद। जे.बी वाटसन ने अमेरिका में इसकी स्थापना की। यह सम्प्रदाय व्यक्ति के व्यवहार पर अधिक बल देता है।"[34]

गेस्टालल्ट मनोविज्ञान:

मनोवैज्ञानिक घटनाओं के अध्ययन में उसकी संपूर्णता , अविभाज्यता और अखंडता पर जोर देने बाला सम्प्रदाय है गेस्टालल्ट। इस सिद्धांत का निरुपन शिक्षा और संज्ञान विवेक क्षेत्रों में हुआ है।

साहित्य और मनोविज्ञान में आपसी सम्बन्ध:

मनोविज्ञान के अनुसार साहित्य रचनाकार की अतृप्त कामनाओं का उदात्तीकृत रुप होता है। वैदिककालीन साहित्य से लेकर आधुनिक समय की साहित्यिक कृतियों तक मानव मन का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सम्बन्ध परिलक्षित है। "आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी के शब्दों में " साहित्य मे मनुष्य का जीवन ही नहीं, जीवन की वह कामनायें जो अनन्त जीवन में भी पूरी नहीं हो सकती, निहित रहती है।"[35] मनोविज्ञान मानव मन का विज्ञान है। साहित्य का केन्द्र बिन्दु मानव जीवन है। 'फ़्रायड के अनुसार मानव मन के तीन भाग होते है- चेतन, अर्धचेतन, अचेतन। मनोविश्लेष्ण के आधार पर यह स्वीकार किया गया है कि कला साहित्य का सृजन अचेतन मन की अतृप्त कामनाओं के उदात्तीकरण द्वारा होता है।'[36] साहित्यकार मानव मन के विविध भावों, विचारों और कल्पनाओं को साहित्य में व्यक्त करता है। जॉर्ज इलियट ने कहा था कि "जब वह 'ऐडम बेड' लिख रही थी तो उसे मालूम हो रहा था जैसे किसी दूसरे ने उसकी कलम पकड़ ली हो और उसे चलाना शुरु कर दिया हो।"[37]

मनोविज्ञान के आधारभूत तत्व:

1.मानवीय व्यवहारों तथा विचारों का अध्ययन: मनोविज्ञान एक ऐसा विज्ञान है जो मनुष्य के मन के साथ-साथ उसके व्यवहार का भी अध्ययन करता है। मनोविज्ञान व्यक्ति के सूक्ष्म से सूक्ष्म

मनोभावों की अभिव्यक्ति करता है। व्यक्ति के व्यक्तित्व का अध्ययन सिर्फ मनोविज्ञान के द्वारा ही किया जा सकता है।

2.सकारात्मक मनोविज्ञान: सकारात्मक मनोविज्ञान के मनोविज्ञान के एक काफी हाल शाखा है। यह स्वस्थ लोगों की मानसिक स्थिति में सुधार लाने और प्रतिभा पोषण पर, बजाय मानसिक बीमारी पर केंद्रित है।

डा. अजय शर्मा का जीवन परिचय:

उपन्यासकार, कहानीकार व पत्रकर डा. अजय शर्मा का जन्म जालंधर शहर में 31 अगस्त, 1960 को हुआ। उनके पिता रत्नलाल शर्मा थे। उनका अब देहांत हो चुका है। शिक्षा की दृष्टि से अजय शर्मा ने गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर से बी.ए.एम.एस किया हुआ है। इसी साहित्य प्रेम के कारण आज यह सफल उपन्यासकार व कहानीकार हैं। अब तक विभिन्न साहित्यिक हिंदी, पंजाबी, पत्र- पत्रिकाओं में इनकी कहानियाँ लेख एवं आवरण कथाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं। इनकी पहली कहानी 'तस्वीर' सन् 1980 में हिन्दी दैनिक पंजाब केसरी में प्रकाशित हुई थी। पंजाबी कहानियों में इनका 'लकीर के आर पार' कथा संग्रह है। इनकी कुछ रचनाएँ बगंला भाषा में अनूदित करके त्रिपुरा विश्वविघालय में कम्पेरिटिव लिटरेचर के कोर्स में शामिल की गई हैं। इनका कहानी संग्रह 'हरी साड़ी वाली औरत भी काफी प्रसिद्ध रहा। उपन्यासों में 'वढ़े हुए नाखून' अपनी अलग पहचान रखता है। उपन्यासकार, कहानीकार व पत्रकार होने के साथ- साथ यह इलैक्ट्रानिक मीडिया में भी अनुभव रखते है। डा. अजय शर्मा की कृतियाँ इस प्रकार है।

प्रकाशित कृतियां

लकीर दे आर पार (पंजाबी कहानी सग्रंह) 1998

चेहरा और परछाई (हिन्दी उपन्यास) 2001

खुली हुई खिड़की (हिन्दी उपन्यास) 2002

आकाश का सच (हिन्दी उपन्यास) 2003

बसरा की गलियां (हिन्दी उपन्यास) 2004

काल कथा (हिन्दी उपन्यास) 2006

शहर पर लगी आंखें (हिन्दी उपन्यास) 2010

नौ दिशाएं (हिन्दी उपन्यास) 2011

कागद कलम ना लिखणहार (हिन्दी उपन्यास) 2016

'नौ दिशाएं' उपन्यास डा शर्मा का एक ऐसा उपन्यास है जो मनोविज्ञान से सम्बधिंत होने के साथ-साथ यथार्थ को भी व्यक्त करता है। आज के समय में किस प्रकार अर्थ को लेकर पारिवारिक विखण्डन हो रहे हैं। अजय शर्मा ने उसको बड़े ही कलात्मक ढंग से अपने उपन्यास में व्यक्त किया है। इसी कारण कोई भी विद्वान उनकी प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकता है। चित्रा मुदगल डा शर्मा के बारे में कहती है," डा अजय शर्मा पंजाब के यशस्वी उपन्यासकार है। अकादमिक जगत में डा शर्मा की उपन्यास कला को स्वीकृति भी मिली है।" [38] 'नौ दिशाएं' उपन्यास स्त्री-पुरुष के संबंधो पर आधारित एक ऐसा उपन्यास है जो मानव को यह शिक्षा देता है कि स्त्री और पुरुष एक ही सिक्के के दो पहलू है। दोनों का साथ में ही अस्तित्व है। अकेले व्यक्ति का कोई महत्त्व नहीं है।

सन्दर्भ सूची

1. डा. पदमा अग्रवाल, मनोविश्लेष्ण और मानसिक क्रियाएँ पृ .16
2. बैजनाथ सिंहल, शोध स्वरुप एव मानक व्यावहारिक कार्यविधि, पृ.37
3. The Webster's new 20th century Dictionary.1454
4. The oxford English Dictionary's 1552
5. James, The study of Mental Life 212
6. डा. पदमा अग्रवाल, मनोविश्लेष्ण और मानसिक क्रियाएँ पृ. 129
7. विलिम्स जेम्स, प्रिंसीपल आफ साइकालाजी, पृ .169
8. कालिक प्रसाद तथा अन्य, बृहत हिन्दी कोश, पृ 1050
9. रामचन्द्र वर्मा, मानक हिन्दी कोश, पृ. 263
10. डॉ. नगेन्द्र, मानविकी परिभाषा कोश, पृ .237
11. श्रीमद भगवदगीताअध्याय) कर्मयोग ,-3) श्लोक- 6
12. डा. सीताराम जयसवाल, मनोविज्ञान, पृ. 30
13. वही, पृ .30
14. विलियम जेम्स, प्रिंसीपुल्स आफ साइकॉलजी, पृ .220
15. किगन पॉल, माडर्न मैन इन सर्च आफ ए सोल, पृ .126
16. Woodworth, Contemporary School Of Psychology, P.170
17. वही, पृ 30
18. मोहन चंद्र जोशी तथा मीरा जोशी, फायडवाद, पृ .230
19. विलियम जेम्स, प्रिंसीपुल्स आफ साइकॉलजी, पृ .169

20. एस.वी चौबे, असामान्य मनोविज्ञान और आधुनिक जीवन, पृ .125
21. रामकुमार ओझा, असामान्य मनोविज्ञान, पृ. 208
22. गोविन्द तिवारी, असामान्य मनोविज्ञान, पृ. 66
23. डा. पदमा अग्रवाल, 'मनोविश्लेष्ण और मानसिक क्रियाएँ' पृ .16
24. डॉ. महेश भार्गव तथा डॉ.मीनू भार्गव,' मानव विकास का मनोविज्ञान', पृ.13
25. डा. पदमा अग्रवाल, मनोविश्लेष्ण और मानसिक क्रियाएँ ,पृ .40
26. डॉ. लाभ सिंह तथा डॉ. गोविन्द तिवारी,' असामान्य मनोविज्ञान, पृ. 71
27. John Shamrock, Educational Psychology, P 45
28. Jack Snowman and Robert Bailer, 'Psychology Applied To Teaching', P 52
29. अरुन कुमार सिंह, समाज मनोविज्ञान की रुपरेखा,पृ .40
30.दिनेश कुमार, मनोविज्ञान और सामाजिक समस्याएँ, पृ .25
31. अरुन कुमार सिंह, समाज मनोविज्ञान की रुपरेखा, पृ. 11
32. https://hi.wikipedia.org/wiki/ संरचनावाद, 11, 7, 2016
33. डा. परमानन्द सिंह,' इतिहास दर्शन,', पृ. 202
34. डा. सीताराम जयसवाल, मनोविज्ञान, पृ .55
35. नन्ददुलारे वाजेपयी, आधुनिक साहित्य,पृ. 430
36. अग्रवाल डा. पदमा, मनोविश्लेष्ण और मानसिक क्रियाएँ ,पृ .121
37. क अहमद, मनोविश्लेष्ण और साहित्यालोचन, पृ 19
38. डा. अजय शर्मा , `नौ दिशाएं', पृ .111

अध्याय दो

डा. अजय शर्मा के उपन्यास 'नौ दिशाएं ' में सामान्य मनोविज्ञान

सामान्य मनोविज्ञान:

सामान्य मनोविज्ञान का अर्थ होता है जो सामान्य हो अर्थात असामान्य से भिन्न हो। सामान्य मनोविज्ञान को अग्रेज़ी में (General psychology) कहते है। सामान्य मनोविज्ञान का मुख्य सरोकार व्यवहार घटनाओं एवं अनुभूतियों की मूलभूत विशेषताओं का अध्ययन करना होता है। सामान्य मनोविज्ञान में प्राणी की शारीरिक एवं मानसिक क्रियाओं पर शोधमूलक अध्ययन कर व्यवहारों की उत्पत्ति, वृद्धि एवं विकास से संबंधित प्रामाणिक तथ्य एकत्रित किए जाते हैं तथा इन प्रमाणों के आलोक में सामान्य नियमों (General laws) की खोज करना , उनका वर्णन करना एवं व्याख्या प्रस्तुत करना सामान्य मनोविज्ञान का मुख्य ध्येय होता है। इस प्रकार सामान्य मनोविज्ञान व्यक्ति के सामान्य व्यवहारों – शिक्षण, चिंतन, स्मृति, प्रत्यक्षीकरण, सांवेदनिक अनुभवों, प्ररेणाओं आदि के बारे में सामान्य वर्णन एवं व्याख्या प्रस्तुत करता है साथ ही ये व्यक्ति के व्यवहार जिन नियमों द्वारा शासित होते हैं, उनका अध्ययन भी सामान्य मनोविज्ञान के अंतर्गत किया जाता है। "सामान्य मनोविज्ञान व्यक्ति के हर उस पक्ष का अध्ययन करता है जो व्यक्ति में सामान्य रुप से विधयमान रहता है। ऊपरलिखित विवेचन से यह वात स्पष्ट हो जाती है कि मनोवैज्ञानिक नियमों एवं सिद्धातों की व्याख्या करने वाला मनोविज्ञान है सामान्य मनोविज्ञान। इस में अभिव्यक्त नियमों का प्रयोग एवं परीक्षण अन्य शाखाओं में भी किया जाता है। ये नियम और सिद्धांत हर व्यक्ति पर लागू होते है। इसमें भाव, विचार, संवेदना, बुद्धि, स्वप्न, चिंतन, संवेग, कल्पना आदि का विस्तृत अध्ययन किया जाता है।" [1]

सामान्य मनोविज्ञान के तत्व: सहनशीलता, प्रेम, यथार्थ

'नौ दिशाएं उपन्यास में सहनशीलता तत्व की अभिव्यक्ति'

सहनशीलता का अर्थ होता है ऐसा व्यक्ति जो सब कुछ सहन करने में सक्षम हो अर्थात परिस्थितिया चाहे उसके कूल हो या प्रतिकूल हो वह हमेशा शांत रहता है। सहिष्णुता यानी सहनशीलता। सहिष्णु व्यक्ति को सभी पसंद करते हैं। असहिष्णु को कोई भी पसंद नहीं करता है।

सहिष्णु बनना कठिन जरूर है, पर असंभव नहीं। किसी भी प्रकार की तनातनी होने पर हमें चाहिए कि हम सहिष्णुता का परिचय दें। इससे बात नहीं बढ़ेगी तथा वातावरण सामान्य बना रहेगा। सहिष्णुता यानी कमजोरी नहीं कई लोग सहिष्णुता का अर्थ कमजोरी समझ लेते हैं। यह उनकी गलती ही कही जाएगी। कई लोग ईंट का जवाब पत्थर से देने को आतुर रहते हैं। इससे बात खत्म नहीं होती, बल्कि बढ़ती है। आरोपप्रत्यारोप का दौर शुरू हो जाता है। खामख्वाह- तनाव उत्पन्न होता है व वातावरण में बेवजह की गर्मी व तनातनी व्याप्त हो जाती है। सहिष्णुता के जरिए ही वातावरण को तनावमुक्त कर सामान्य बनाया जा सकता है। सहनशीलता सामान्य मनोविज्ञान का परिचय देती है। जब व्यक्ति सामान्य होता है तो वह सामान्य व्यवहार करता है। सहनशीलता भी सामान्य मनोविज्ञान का एक तत्व है। सभी धर्मों में बताया गया है कि सहनशीलता हमारे व्यक्तित्व को निखारती है। सहनशील व्यक्ति अपने जीवन में नहीं प्राप्त होने बाली वस्तु को भी सुगमता से हासिल कर लेता है। यहाँ तक कि वह साधना के मार्ग पर आगे बढ़कर सिद्धि को भी प्राप्त करने की क्षमता रखता है। सहनशीलता व्यक्ति का एक ऐसा आभूषण है जिसे ना तो कोई चोर चुरा सकता है और ना ही यह कभी गुम हो सकता है। जब तक मनुष्य का जीवन है तब सहनशीलता उसके साथ ही रहती है। लेकिन जब यही सारी बातें एक अहंकारी व्यक्ति के जीवन से गौण हो जाती है तो वह सहनशीलता के अभाव में अपने लक्ष्य से भटक जाता है। वह फूल तो सकता है, पर फलित या पुष्पित नहीं हो सकता। हमें अहंकार दिखाई नहीं देता, पर हमेशा हमारे सिर पर ही सवार रहता है। सहनशील व्यक्ति गंभीर तथा कम बोलने वाला होता है। वह जब भी बोलेगा, अपनी भाषा में मिठास और योग्य का ध्यान रखते हुए ही बोलेगा। वह सिर्फ उतना ही बोलेगा, जिसमें उसकी बात का सम्मान हो।

'वाणी और व्यवहार व्यक्ति के चिंतन की कसौटी है। वाणी वशीकरण मंत्र है। संयमित बोलने वाला अनेक झंझटों से अपने आप को बचाता है जबकि अधिक बोलने वाला अनेक मुसीबतों को निमंत्रण देता है। वह स्वयं अपनी नजरों में भी गिर जाता है। व्यक्ति को हमेशा अच्छे विचारों अथवा चिंतन में रहना चाहिए। यह भी एक परम सत्य है कि जहाँ स्नेह हो, वहाँ लक्ष्मी स्वयं दौड़ी चली आती है।"[2] पुण्य योग से अर्जित लक्ष्मी का सदुपयोग ही जीवन में शांति का कारण बनता है। जीवन पर अकेले हमारा ही नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र का भी उतना ही अधिकार है, जितना हमारे बच्चों का, हमारे परिवार का होता है। इसलिए हर व्यक्ति को चाहिए की वह अहंकार का मार्ग छोड़कर सहनशीलता का रास्ता अपनाएँ ताकि उसका, उसके परिवार, समाज और राष्ट्र का जीवन उज्ज्वल हो। यही सहनशीलता व्यक्ति को सिद्धि की प्राप्ति के ओर ले जाती है और मानव जीवन का कल्याण होता है। आज के मानव की सबसे बड़ी विडंबना सहनशक्ति में निरंतर आ रही गिरावट है। कहते हैं कि जो सहना जानता है , वही जीना जानता है। सहनशक्ति के अभाव में सद्गुणों का कोई महत्व नहीं रह जाता है। दोषपूर्ण सोच के कारण छोटीछोटी- बातों पर नियंत्रण खो देना आम बात हो गई है। इसी के परिणाम हैं कलह , तोड़फोड़ , तलाक , आत्महत्या आदि। भौतिकता की चकाचौंध आग में घी का काम कर रही है। जो व्यक्ति सच के कड़वे घूंट पीना जानता है , वही वास्तव में हर

परिस्थिति में सरलता से जी सकता है। सहनशीलता के बिना आनंदमय जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। समस्या तो यह है कि आज का व्यक्ति कहना बहुत चाहता है , लेकिन सुनना और सहना नहीं चाहता। अपनी हजार भूलें भी नजरअंदाज कर देता है , लेकिन दूसरे की एक भूल को भी सहन नहीं करता। जीवनयापन के- लिए सभी का सहयोग अपेक्षित है। समूह में अनुकूल और प्रतिकूल घटनाएं घटित होती रहती हैं। ऐसी परिस्थिति में शांत जीवन जीने के लिए सहनशील होना आवश्यक है। सहनशीलता से ऊर्जा जग जाती है और जीवन व्यवहार में उतर जाती है। फिर व्यक्ति समूह में रहकर भी सुखी जीवन जी सकता है। इसी का परिणाम है कि मैत्री की अपेक्षा शत्रुत्व की भावना तेजी से विस्तार पा रही है। सहना कायरता नहीं है , बल्कि मजबूती और ताकत है। इसके प्रभाव से कठिन से कठिन कार्य भी अविलंब संपन्न हो जाते हैं। सहनशीलता की साधना सरल नहीं है।सहनशीलता की साधना के लिए विचारों में परिवर्तन की भी जरूरत होती है क्योंकि वैचारिक परिवर्तन ही व्यवहारिक परिवर्तन की पृष्ठभूमि का निर्माण करता है। धार्मिक होना सहिष्णुता की ओर पहला कदम बढ़ाना है। असहिष्णु व्यक्ति कभी भी धार्मिक नहीं हो सकता। जो जितना सहिष्णु होता है , वह उतना धार्मिक भी होगा , अन्यथा धर्म के प्रति उसका लगाव मात्र एक पाखंड और प्रदर्शन ही बनकर रह जाता है। गौर करें कि असहिष्णुता की प्रवृत्ति के कारण ही हमारी कोर्टकचहरियां भरी पड़ी रहती हैं। असहिष्णुता- के रंग पर कभी भी धर्म का रंग नहीं चढ़ सकता।

पत्थर का एक टुकड़ा जब हथौड़े की लगातार चोटों को सहन करता है तभी वह हम सबके लिए भगवान की पूज्य मूर्ति का स्वरूप पाता है। सहनशीलता हमारा रक्षा कवच है। सहन कर लेने की प्रवृति मन में ऐसी अटल शांति का संचरण करती है कि बाह्य प्रतिकूलताएं पराजित हुए बिना नहीं रहती और मानव देव तुल्य बन जाता है। अत: अनेक सद्गुणों की जननी सहनशीलता ही है। एक बार इसका प्रयोग करके देखें तो सही जीवन की दिशा और दशा बदल जाएगी। ऐसे अद्भुत आनंद की प्राप्ति होगी जिसकी कभी कल्पना भी न की होगी। अशांति,तनाव और क्षोभ का सबसे बड़ा कारण असहिष्णुता ही है। समस्त वातावरण इसके दुष्प्रभाव से प्रदूषित है। वातावरण में माधुर्य घोलने और पर्यावरण को विशुद्ध एवं जीवनोपयोगी बनाने के लिए इसकी साधना परमावश्यक है। यह मानव देह पुण्य के संयोग से मिली है और हमें इसको शुभ भावों के आलोक से प्रकाशवान बनाना है। प्रत्येक क्षण को परोपकार में लगाकर सार्थक करना है।कहने सुनने से नही बल्कि आचरण करने से ही अभीष्ट फल की प्राप्ति संभव है। माना कि मनुष्य गलतियों का पुतला है। थोड़ीबहुत कमियां प्रत्येक व्यक्ति में होती हैं। कोई भी व्यक्ति परिपूर्ण नहीं होता। लेकिन लोगों को गलती करते देखकर उन पर गुस्सा करने वाला भी भयंकर गलती करता है। इससे बचने का एकमात्र उपाय है सहनशीलता।इसका अर्थ यह नहीं है कि दूसरों को गलती का अहसास ही न कराएं। अवश्य कराएं पर यह ध्यान रहे कि गलती बताते समय उन्हें अपमानित या नीचा दिखाने की मानसिकता नहीं होनी चाहिए। एक मात्र पवित्र लक्ष्य सुधार का होना चाहिए। डा. अजय शर्मा के उपन्यास 'नौ दिशाएं' में भी कुछ ऐसे पात्र है जिनमें सहनशीलता है। जो वढ़ते तनाव को शांत करने के लिए सहनशीलता का सहारा लेते है। वह सहनशीलता को एक शस्त्र के रुप में इसका प्रयोग करते है। सहनशील व्यक्ति अपने इस गुण के कारण दूसरे व्यक्ति को भी प्रभावित करता है। साहित्य का सम्बन्ध मानव के साथ होता है । सहनशीलता जैसे अतुल्नीय गुण ने साहित्यकारों को बहुत

प्रभावित किया। साहित्कारों ने भी अपने पात्रों के माध्यम से इस गुण को ओर अधिक विकसित किया। गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपने महाग्रन्थ रामचरितमानस की रचना सहनशीलता जैसे अतुल्नीय गुण के आधार पर ही की है। राम और सीता के माध्यम से उन्होने लोगो को सहनशीलता की परिभाषा दी। राम के चौदह वर्ष के वनवास के पीछे उनकी सहनशीलता ही प्रदर्शित होती है। निम्नलिखित दोहा सहनशीलता को उजागर कर रहा है।

"यदि अंकुश हो क्रोध पर, सहनशीलता पास
वहां पाप होता नहीं हो खुशियों का वास"।[3]

रजनी की मां में भी सहनशीलता विधयमान है। वह जानती है कि जब भी कोई मुसीबत आए तो व्यक्ति को धैर्य अर्थात सहनशीलता को अपनाना चाहिए। अपनी बेटी का घर बसाने के लिए वह सहनशीलता का सहारा लेती है। जो निम्नलिखित संवाद से स्पष्ट हो जाता है। मां ने अपनी बेटी की तरफ देखा और कहा," मैं जानती हूँ बेटी , लेकिन कहते है कि बदलाव का कोई समय नहीं होता। हमें धैर्य रखना चाहिए।" [4] सहनशील व्यक्ति हमेशा धैर्य में विश्वास रखता है, क्योंकि उसका मानना होता है कि धैर्य से सब काम ठीक हो जाते है तथा प्रतिकूल समय भी व्यक्ति के कूल हो जाता है। धैर्य व्यक्ति का दिमाग संतुलन में रखता है और वह सही समय का इंतजार करता है।रजनी में भी सहनशीलता दिखाई देती है। बह भी अपनी मां से प्रभावित है। उसी मां कहती है कि यदि घर बसाना है तो स्त्री को सहनशील होना चाहिए तभी बह अपने घर को स्वर्ग बना सकती है। कई बार उसका अपने पति के साथ झगड़ा होता है लेकिन इसके अतिरिक्त उसमें समर्पण की भावना है जो उसकी सहनशीलता को प्रर्दिशत करती है। रजनी का अपने पति संजीव से किसी बात को लेकर झगडा हो जाता है उसका पति उसे भला बुरा कहता है लेकिन इसके बाबजूद रजनी चुप रहती है और कहती है," आप ऊंचा मत बोलिए। आप बताएं तो सही आखिर बात क्या है?" [5] रजनी के यह वाक्य उसकी सहनशीलता को प्रस्तुत करते है। सहनशील व्यक्ति कभी भी क्रोध से उत्तेजित नहीं होता। वह सदैव क्रोध की आग शांत करने का प्रयास करता है। जब व्यक्ति में सहनशीलता का गुण आ जाता है तो उसमें विन्रमता अपने आप ही आ जाती है। संजीव भी अपने बाँस की आज्ञा का पालन करते हुए कहता है,"बाँस का हुकुम सर आंखों पर।" [6] विन्रम व्यक्ति सदैव बड़ों की आज्ञा का पालन करना अपना धर्म तथा कर्त्तव्य समझता है। संजीव एक पढ़ा लिखा व्यक्ति है। उसे पता है कि अपने से वड़े व्यक्ति से किस प्रकार बात करनी है। शिक्षा भी व्यक्ति को सहनशील बनाती है।

'नौ दिशाएं' उपन्यास में प्रेम तत्व की अभिव्यक्ति'

संसार में जितने भी शब्द कोष हैं उनमे प्रेम शब्द उपलब्ध है।वास्तव में प्रेम शब्द अर्थ क्या है,सब अपने विवेकानुसार अनुसार इसकी व्याख्या करते हैं ।परन्तु यह शब्द इतना सस्ता भी नहीं है कि इसका वास्तविक अर्थ जाने बिना इसका किसी भी स्थान पर उपयोग कर लिया जाये ।इस शब्द का जितना दुरूपयोग समाचार जगत ने किया है उतना शायद ही किसी ने किया है ।मैं एक दो समाचारों का उदहारण देना चाहूँगा ,जो आये दिनों आपको अखबारों में पढने को मिल जाते हैं। जैसे प्रेमी ने प्रेमिका की हत्या की,एकतरफा प्रेम में प्रेमी ने एक लडकी की जान ली आदि ।अब जरा सोचियेक्या कोई लड़का वास्तव में- किसी लड़की को प्रेम करता हो तो वह उस लड़की की जान ले सकता है ? नहीं,कदापि नहीं ।फिर समाचारपत्र ऐसा क्यों लिखते हैं ?मैं आज तक समझ नहीं पाया हूँ । प्रेम तो आपस में एक दूसरे के लिए मिटना सिखाता है,एक दूसरे को मिटाना नहीं।जहाँ एक दूसरे के प्रति सम्पूर्णता के साथ समर्पण का भाव नहीं है वहाँ प्रेम कैसे हो सकता है?यहाँ अगर लड़का किसी लड़की की हत्या करता है ,तो स्पष्ट है कि उस लड़के का उस लड़की के साथ प्रेम तो कदापि नहीं था।अगर आप वासना,कामना या लगाव को ही प्रेम का नाम देते हैं,तो बात अलग है । प्रेम शब्द को शब्दों की सीमा में नहीं बांधा जा सकता। यह एक विशाल शब्द है प्रेम शब्द को सुनते ही मन हर्ष तथा उल्लास से भर जाता है। प्रेम के कई रूप हो सकते है जैसे माता-पिता का अपने बच्चो से प्रेम, पति-पत्नी का प्रेम तथा भाई-बहन का प्रेम इत्यादि। प्रेम सिर्फ शरीर तक ही सीमित नहीं होता है। बल्कि यह एक उच्च भावना है। जिसमें उस परमात्मा के दर्शन होते है। प्रेम के कारण ही एक साधक अपने भगवान को पाता है। प्रेम से ही यह दुनिया चलती है। आज इस कामनाओं और इच्छाओं से भरे संसार में प्रेम बचा ही कहाँ है,सिवाय शब्द कोष के।हम आकर्षण और लगाव को ही प्रेम का नाम दे रहे हैं ।प्रेम तो मानव मन में उठ रही वो तरंगे है जो अपने प्रेमी के मन की बात मीलों दूर बैठे ही महसूस कर लेता है ।प्रेम में जुबान तो एकदम मौन ही हो जाती है ।जिस प्रेम की अभिव्यक्ति के लिए आपको शब्दों का सहारा लेना पड़े ,तो फिर आप किसी और की बात कह रहे है ,प्रेम की नहीं।आज प्रेम का इज़हार लोग उपहारों और शब्दों के माध्यम से कर रहे है। क्या अब प्रेम को इन उपहारों और शब्दों की जरुरत पडने लग गयी है। नहीं ,प्रेम कोई उपहार या शब्दों का मोहताज नहीं है। अगर कोई व्यक्ति आपके प्रेम की अभिव्यक्ति के लिए उपहार,शब्द या अन्य माध्यम का इंतज़ार करता है,समझ लीजिए उसका आपके प्रति मात्र आकर्षणहै।

प्रेम को समझ पाना और इस शब्द की व्याख्या करना बहुत ही मुश्किल है।कोई एक परमात्मा को समर्पित,प्रेम को समर्पित व्यक्ति भले ही ऐसा कर सकता हो।मैंने तो जितना इस

शब्द के बारे में पढ़ा है और समझा है ,शब्दों से उस प्रेम को व्यक्त कर रहा हूँ ।हालाँकि मैं जानता हूँ कि प्रेम कोई शब्दों में व्यक्त करने की बात नहीं है।

" प्रेम प्रेम सब कोई कहै, प्रेम न चीन्हे कोई।
आठ पहर भीगा रहे, प्रेम कहावे सो॥" [7]

प्रेम शब्दार्थ:

वह मनोवृत्ति जो किसी को बहुत अच्छा समझकर हमेशा उसके साथ अथवा पास रहने के लिए प्रेरित करती है। " महुब्बत, प्रीति, प्यार।" [8] स्त्री तथा पुरुष जाति के ऐसे प्राणियों का पारस्परिक स्नेह जो गुण, रूप, सान्निध्य या कामवासना के कारण होता है। "गुण, रूप तथा स्वभावादि के कारण उत्पन्न होने बाला आकर्षण एवं सुखद मनोभाव जिस से प्रभावित होकर एक व्यक्ति दूसरे को सदा अपने साथ तथा प्रसन्न रखता हैं।" [9]

अंग्रेजी शब्द को कोशों के अनुसार " लव" का अर्थ:

" Love: Affection, Friendliness, Strong liking, Attachment, Devotion.

A sexual passion, strong passionate affection, attachment felt for person of opposite sex."[10]

" A feeling of warm personal attachment or deep affection, as for a parent, child or friend.'' [11]

"A strong fondness or enthusiasm for something.''[12]

अंग्रेजी के प्रसिद्ध साहित्यकार विलियम शेक्सपीयर के अनुसार," प्रेम शरीर की आँखों से नहीं, विवेक की आँखों से देखा जाता है।" [13]

हिन्दी साहित्य के आलोचक आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी ने " चिंतामणि के एक निबंध " लोभ और प्रीति" में प्रेम का विश्लेषण इस प्रकार किया है " विशिष्ट वस्तु या व्यक्ति के प्रति होने पर लोभ वह सात्विक रूप प्राप्त करता है जिसे प्रीति या प्रेम कहते है।" [14]

आचार्य रामतीर्थ के मतानुसार," प्रेम सूर्य के समान विकसित होता है, ईश्वर का साक्षात्कार होने के लिए उसे पहचाने के लिए प्रेम की जरुरत होती है।" [15]

संसार के अन्य साहित्यों की तरह हिन्दी साहित्य में भी प्रेम भावना की खूब अभिव्यक्ति हुई है। हिन्दी का साहित्य विकसित साहित्य है। प्रेम के बिना कोई भी रचना पूरी नहीं होती। जब तक रचना मे प्रेम का भाव ना हो तब तक पाठक को उसको पढकर आनंद नहीं आता। उसका मन उल्लास से नहीं भरता। प्रेम के बिना मानव का अस्तित्व असंभव सा है। हिन्दी साहित्य के आदिकाल या वीरगाथा काल की सबसे प्रमुख रचना है चन्दबरदाई कृत "पृथ्वीराज रासो। इस का प्रतिपाध पृथ्वीराज चौहान के सौन्दर्ययुद्ध कौशल का वर्णन करना है। इसके ,साहस ,पराक्रम , चारों क्रिया का भी वर्णन किया है। भक्तिकाल की-रति ,प्रेम ,अतिरिक्त कवि ने राजा की कामुकता -शाखाओंज्ञानाश्रयी शाखा, प्रेमाश्रयी शाखा, राम-भक्ति शाखा, *कृष्ण भक्ति शाखा में प्रेम के भिन्न रूप प्रकट हुए है।* ज्ञानाश्रयी शाखा के संत कबीरदास का प्रेम त्याग और षौरूष का है।

"पिया मोरा मिलिया सत्त गियानी।
सब मैं व्यापक सब की जानैं ऐसा अंतरजाम॥" [16]

इसी प्रकार प्रेमाश्रयी शाखा के सूफी कवि मलिक मुहम्मद जायसी ने भी अपनी रचनाओं में प्रेम का चित्रण किया है। उनकी रचनाएँ प्रतीको से भरपूर है। उन्होनें आत्मा-परमात्मा के संबंध को प्रेमी-प्रेमिका के रूप में चित्रित किया है।
भक्तिकाल के प्रमुख कवि सूरदास जी द्वारा रचित 'सूरसागर' में प्रेम की कई स्थितिया दर्शनीय हैं। वैष्णव रस पद्धति के अनुसार संभोग श्रगार के सात भेद होते है। सूरसागर में सातो भेदों का वर्णन गोपियों तथा *कृष्ण के मध्य पाया जाता है।*

" राधा माधव भेट गई।
राधा माधव, माधव राधा कीट भंग गति हवै जुगई॥" [17]

तुलसीदास की रचनाओं में शुद्ध प्रेम का वर्णन मिलता है। रामचरितमानस में उन्होने राम तथा सीता के माध्यम से प्रेम को प्रकट किया।

*प्रेमचन्द पूर्व उपन्यासों का कथ्य अधिकतर नीतिपरक तथा उपदेशात्मक था और इसलिए इन उपन्यासों में प्रेम भावना कम ही व्यक्त हुई। परीक्षा गुरू,नूतन*ब्रहमचारी आदि इसी कोटि के उपन्यास है। डा. शांति भारद्वाज के अनुसार," प्रेम के चित्रण में 'परीक्षा गुरू अछूता नहीं है।" [18]

प्रेमचन्द हिन्दी के प्रसिद्ध कलाकार तथा उपन्यासकार है। उनकी रचनाओं में चित्रित प्रेम का स्वरूप कोरी कल्पना का प्रतिफलन नहीं है वरन जीवन की ठोस परिस्थितियों से होता हुआ पग-पग पर प्ररेणा प्रदान करने वाला है।

वीसबीं शताब्दी प्रगति तथा जागरण का युग था। ब्रिटिश शासन की जंजीरों से भारत को मुक्ति मिली। जैनेन्द्र कुमार, अज्ञय, इलाचन्द्र जोशी आदि उपन्यासकारों ने मनोवैज्ञानिक पद्धति को आधार बनाकर उच्च कोटि के उपन्यासो की रचना की। इनके उपन्यासों में प्रेम का मनोवैज्ञानिक विवेचन प्रचुर मात्रा में हुआ है। जैनेन्द्र ने अपने उपन्यासों में प्रेम का सफल चित्रण किया है जो प्रेम सनातन एकता और परमात्मा की उपलब्धि का एक मात्र साधन होता है। उनके 'परख' उपन्यास का पात्र कहता है," प्रेम जो कब्जा चाहता है वैसे प्रेम की छूट समाज के लिए अनिष्टकर है।" [19] इलाचन्द्र जोशी के ' प्रेत और छाया', ' मुक्तिपथ', ' सन्यासी', ' जिप्सी' आदि प्रसिद्ध उपन्यास हैं। जोशी जी ने अपने उपन्यासों मे प्रेम का चित्रण बड़े ही कलात्मक ढंग से किया है। डा. शांति भारद्वाज के अनुसार," प्रेम इलाचन्द्र जोशी के उपन्यासों का अविभाज्य अंग है प्रेम का मर्म ही व्यक्ति को जीवन के समीप ले जाता है। प्रेम की अनुभूति के बिना जीवन मशीन है।" [20] प्रेम के बिना जीवन नीरस है। प्रेम के कारण ही व्यक्ति अपने जीवन को समझ पाता है तथा उसे उचित ढंग से जी पाता है। कमलेश्वर, नरेश महेता, उषा प्रियवंदा, रमेश बख्शी, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना आदि हिन्दी साहित्य के जाने-माने साहित्यकारों की औपन्यासिक रचनाओं में प्रेम भावना की विभिन्न दष्टिकोणों से अभिव्यक्ति हुई हैं। इसी प्रकार डा. अजय शर्मा भी एक ऐसे साहित्यकार है जिन्होनें प्रेम भावना का वर्णन अपने प्रसिद्ध उपन्यास ' नौ दिशाएं' में किया है। डा. शर्मा के अधितर उपन्यास यर्थात से संबंधित है। लेकिन फिर भी इस आधुनिकता के समय में उनके पात्रों में प्रेम पाया जाता हैं। उपन्यास की नायिका रजनी है और नायक संजीव है। रूकमणि का अपनी बहू रजनी से प्रेम तो शून्य है लेकिन अपने पुत्र संजीव के प्रति असीम प्रेम है। संजीव की चिंता को दूर करने के लिए मां ने बड़े प्यार से अपने बेटे को कहा," तो क्या हो गया? हम लोगों ने अपनी जिंदगी की गाड़ी को किसी तरह से खींच लिया, लेकिन तुम्हारे सामने तो पूरी जिंदगी पड़ी है।" [21] मां सदैव अपने बच्चों की चिंता को दूर करती है। वह स्वयं चिंतित रहकर अपनी संतान को खुश रखती है। रूकमणि का भी अपने बेटे संजीव से बहुत प्यार है। वह अपने बेटे को गर्व से कहती है," तू मेरा बेटा है, मैं तेरी मां हूं, यह रिश्ता तो हमेशा रहना ही है।" [22] मां को अपनी संतान पर हमेशा गर्व होता है। प्रत्येक मां-बाप की यही चाहत होती है कि बुढापे में उसकी संतान उसकी सेवा करे। उसके सुख-दुख को साथ बांटे। खून का रिशता खून का ही होता है। रूकमणि का प्रेम जो अपने बेटे के साथ है वैसा प्रेम वह अपनी बहू से नहीं करती। इस से यह बात सिद्ध होती है कि रूकमणि का प्रेम असीमित नही बल्कि सीमित है जो उसके परिवार तक ही सीमित है। वास्तव में सच्चा प्रेम तो वह है जो असीमित हो। जो दुश्मन को भी मित्र वना दे। संतान को भी पता होता है जो प्रेम मां करती है, जो सुख मां देती है, जो शांति मां से प्राप्त होती है। वह संसार में कहीं भी प्राप्त नहीं हो सकती। संजीव भी अपनी मां से बहुत प्रेम करता है। वह स्बयं कहता है," जो सुख मां के आंचल में मिलता है, वह कही नहीं मिलता। मां के आंचल के बिना सब सुख अधूरे है।" [23] संजीव द्वारा कहे गए यह शब्द सत्य है। दुनिया में मां का रिश्ता अतुल्नीय है। जिसकी किसी भी रिशते के साथ तुलना नहीं की जा सकती है। मां का रिशता ही ऐसा है जो देना चाहता है लेना नहीं। "पूत कपूत सुने है पर न माता सुनी कुमाता।" [24] यह उक्ति मां के ममता को प्रकट करती है। पूत अर्थात पुत्र कपूत हो सकता है लेकिन माता क्भी भी कुमाता नहीं बनती। वह प्रत्येक पल पुत्र

का कल्याण ही चाहती है। बेटा जब कठिनाई में होता है तब मां उसकी कठिनाई को दूर करने का भरपूर प्रयास करती है। रूकमणि भी अपने बेटे संजीव की प्रत्येक समस्या को दूर करने का प्रयास करती है। अपने बेटे के मना करने पर भी वह पानी का गिलास लेने रसोई में चली जाती है। वह कहती है," बैठ जा बेटा , पानी लेकर आती हूं।" [25] मां का दिल ही भगवान ने ऐसा बनाया है कि वह अपनी संतान को दुखी नहीं देख सकती तथा उसकी सेवा करना अपना सौभाग्य समझती है। व्यक्ति कितना भी बड़ा आदमी क्यों ना बन जाए? सभी उसकी तरक्की से जलते है। लेकिन मां सदैव खुश होती है। संजीव अपनी मां को कहता है," सब रिश्ते बदले में किसी न किसी चीज की मांग करते है। गिव एंड टेक।" [26] संजीव के कहने का भाव यह है कि एक मां का रिश्ता ही निस्वार्थ भाव से सेवा करता है। इसलिए सब रिश्तो में वह उच्च है। इसी प्रकार जिस भी रिशते में प्रेम होता है वह रिशता अटूट हो जाता है। पति-पत्नी के रिशते में प्रेम होना सफल दाम्पत्य का सूचक है। परिस्थितिया चाहे कूल हो या प्रतिकल हो यदि पति-पत्नी में प्रेम है तो उनके दाम्पत्य जीवन पर किसी प्रकार का कोई भी संकट नहीं आएगा। वह परिस्थिति पर विजय प्राप्त कर लेगें। डा. अजय शर्मा अपने उपन्यास 'नौ दिशाएं' में इसी प्रेम को अपने पात्रो के माध्यम से अभियक्त किया है। इस के साथ-साथ इस बात को भी सिद्ध किया है कि प्रेम में अदभूत शक्ति होती है। यदि रिशतों में प्रेम का संचार हो जार तो मूरझाए हुए रिशते भी हरे हो जाते है। जिस के कारण व्यक्ति में एक नवीन शक्ति का उदय होता है। संजीव और रजनी दोनों पति-पत्नी है। लेकिन विपरीत परिस्थियों के कारण दोनो में क्रोध आ गया है। जिस के कारण उनके दाम्पत्य जीवन में दराड़ आ गई है। लेकिन जैसे ही उनके रिशते में प्रेम का आगमन होता है वैसे ही उनका रिशता फिर से प्रज्जवलित होने लगता है। संजीव पर जब प्रेम का प्रभाव होता है तब वह सोचता है कि वह अपनी शादी को शादी ही रहने देगा,बर्वादी में नहीं बदलने देगा। प्रेम होता ही ऐसा है, सच्चा प्रेम व्यक्ति की बुद्धि को नेक कार्य में लगाता है, जिस से उसका कल्याण हो सके। संजीव खुद ही कहता है," आज बह अपने विवाह की सालगिरह ऐसे मनाएगा, जैसे उसकी ज़िंदगी की पहली सुहागरात हो।" [27] प्यार सर्मपण मांगता है। प्रेम में व्यक्ति अपनी पुरानी जिंदगी को भूल लाकर भविष्य की चिंता करता है। वह आने वाले प्रत्येक पल का खुशी से इंतजार करता है। वह छोटी-छोटी बातों में अपने भविष्य को देखता है। प्रेम से व्यक्ति में सुंदरता आती है। वह प्रत्येक वस्तु में सुंदरता को अनुभव तथा देखता है। संजीव भी सुंदरता की ओर आकर्षित हुआ। वह प्रत्येक पल को सुंदर बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ना चाहता था। उसके द्वारा कहे गए यह शब्द इसी बात को प्रमाणित करते है। संजीव कहता है," संदुर ग्रीटिंग कार्ड के साथ- साथ उस पर लिखे हुए शब्द भी उतने ही सुंदर हो, ताकि जिंदगी के सारे गिले-शिकवे उन शब्दों की नीचे दब जाएं।" [28] प्रेम का आगमन मानो खुशी का आगमन। खुशी में व्यक्ति प्रत्येक वस्तु को सुंदर बनाता है ताकि उसकी खुशी दुगनी हो जाएं। यही प्रयास संजीव का भी था। "जिनके जीवन में जितना कम प्रेम है, उनके जीवन में उतना ही विद्वेष होगा। जिनके जीवन में जितना कम प्रेम है, उनके जीवन में उतनी ही ईर्ष्या होगी। जिनके जीवन में जितना कम प्रेम है, उनके जीवन में सुख कम दुख अधिक होगें।"[29] इन सभी बातों का यही अर्थ है कि जीवन में प्रेम का बहुत महत्त्व है। प्रेम के अभाव में मनुष्य ,मनुष्य नहीं रहता तथा जीवन नर्क बन जाता है। संजीव यह बाते भली भांति जानता था। प्रेम के कारण व्यक्ति

का मन विशालता से भर जाता है। वह अपने जीवन साथी के लिए प्रत्येक बह वस्तु खरीद लाना चाहता है। जिससे उसके मुँह पर प्रसन्ता आ जाए। संजीव भी अपनी पत्नी के लिए सब कुछ खरीद लाना चाहता था। संजीव द्वारा कहे गए शब्द उसके मन की विशालता को दर्शाते है। संजीव ने कहा," भाई साहब, एक चादर दिखाओ, जो गुलाबी रंग की हो और मखमली हो।" [30] गुलाबी रंग प्रेम का प्रतीक है। संजीव गुलाबी रंग से अपनी बेरंग जिंदगी को रंगों से भर देना चाहता था। रंगों की भरी जिंदगीं प्रत्येक क्षण को खुशियों से भर देती है। व्यक्ति अपने प्रेम का इजहार कई तरह से करता है, ताकि वह प्रतिकूल समय को अपने कूल कर सके। संजीव का भी यही प्रयास था। उसने भी अपनी पत्नी रजनी के समक्ष अपने प्यार का इजहार करने के लिए बहुत चीजे जैसे " चादर, रूम, स्प्रे और अंगूठी" [31] खरीद ली। खासकर महिलाओं को यह चीजे बहुत पसंद होती है। प्रेम ही ऐसा साधन है जिस से फिर से खुशियां प्राप्त की जाती है। बेरंग पलो को रंगों से भरा जा सकता है। संजीव अपने दाम्पत्य जीवन को खुशियों से भर देना चाहता था । संजीव द्वारा कहे गए यह शब्द," तुम केवल आंखे बंद कर लो। देखो आज हम दोनों के बीच कोई नहीं है। केवल तुम हो और मैं हूं।" [32] अपनी पत्नी के प्रति असमीम प्रेम को प्रकट करते है। संजीव को पता था कि हमारे जिंदगीं बिखर रही है। आज का दिन उसके लिए बहुत नसीव वाला था। वह रंगों से भरे इस दिन को बर्बाद नहीं करना चाहता था। वह अपनी पत्नी को वह बहुमूल्य चीजे देना चाहता था जिस से उसका प्रेम एक यादगार बन जाए। रजनी भी इस खुशियों भरे समय को पूरी तरह से जी लेना चाहती थी। वह भी पूरी ईमानदारी से अपने पति संजीव का साथ दे रही थी। रजनी का अपने पति संजीव के प्रति शुद्ध प्रेम है। वह अपने पति से कहती है," कोई पास हो या दूर, प्यार तो सात समंदर पार रहने पर भी बरकरार रहता है।" [33] रजनी की प्यार के प्रति यह भावना उसके चरित्र को एक पतिव्रता नारी में परिवर्तित करती है। सच्चा प्रेम इस को ही कहते है। प्रियतम चाहे अपनी प्रेयसी से कितना भी दूर क्यों न हो शुद्ध प्रेम उन तक पहुंच ही जाता है। आज रजनी की सारी ईगो जीरो हो गई थी। वह उस प्रेम से भरे सरप्राइज को देखना चाहती थी जो संजीव उसके लिए लेकर आया था। रजनी को आज ऐसा लग रहा था मानो वह एक ऐसी जिंदगीं जी रही है, जो उसने पहले कभी ना जी हो। वह अपने पति से कहती है," क्या मेरे लिए कोहेनूर का हीरा खरीद लाए हो?" [34] संजीव आज के समय को नष्ट नहीं करना चाहता था। उसका मानना था जो व्यक्ति समय का आदर नहीं करता समय उसका समान नहीं करता। संजीव सारे गिले-शिकवे भूल देना चाहता था। वह अपने पति को बड़े प्यार से कहता है," अरे मेरी जान,कोहेनूर का हीरा तो इन चीजों के सामने कुछ भी नहीं। इन शब्दों से संजीव का असीम प्रेम प्रकट हो रहा है। वह अपनी पत्नी को हीरे से भी बहुमूल्य मानता है। प्रेम तो भावात्मक होता है। बडी से बड़ी कीमती बस्तुओं से प्रेम को खरीदा नही जा सकता। अपने भावों को लिखकर प्रकट करना आसान होता है। व्यक्ति लिखते समय ऐसे शब्द भी लिख देता है जो उसने कभी सोचे भी नहीं होगें। संजीव ने भी अपने प्रेम की अभिव्यक्ति के लिए कार्ड को माध्यम बनाया। वह जानता था कि कार्ड पर लिखे हुए शब्द व्यक्ति में प्रेम को जगाते है। अपने प्रेम से भरे कार्ड को अपनी पत्नी के हाथो में समा दिया और कहा," डार्लिंग आखें खोलो।" [35] प्रेम से किसी को भी जीता जा सकता है। क्रोध जीवन को नष्ट कर देता है और प्रेम जीवन को एक नई दिशा दिखाता है। व्यक्ति के जीवन में प्रेम भिन्न-भिन रूपों में

आता है। कभी यह मां-बेटे, मां-बेटी, पति-पत्नी, देश भक्ति आदि विभिन्न रूपों में व्यक्ति को खुशी प्रदान करता है। रजनी का अपनी मां से बहुत प्रेम है। यह स्वाभाविक भी है कि प्रत्येक बेटी अपनी मां से प्रेम करती है। उसके सुख दुख की साथी बनती है। वह उसे अपने जीवन का आधार मानती है। रजनी भी जब अपने ससुराल बालो से दुखी होती थी तव वह अपने मां के पास आ जाती थी। जब रजनी की मां का देहांत हो जाता है तो वह पूरी तरह से टूट जाती है। उसके आंखों के सामने अंधेरा छा जाता है। वह करुणा भरे शब्दों में कहती है," संजीव के चले जाने का इतना अफसोस नहीं था। लेकिन मां के चले जाने के बाद मेरा तो सारा संसार ही उजड़ गया है।" [36] इस से यह प्रतीत होता है कि रजनी का जीवन ही उसकी मां थी। मां ही उसको नई दिशाएं दिखाने वाली थी। रजनी अपनी मां से बड़े ही भावात्मक रूप से जुड़ी हुई थी। रजनी का भी अपनी बेटी रेखा से बहुत प्रेम है। जब वह संजीव से अलग हो जाती है तो वह अपनी बेटी को पिता का प्यार भी देती है। वह उसे कभी इस बात का अनुभव नहीं होने देती कि उसके पिता कहाँ है। रजनी द्वारा कहे गए यह शब्द," मैं अपनी बेटी को बड़ा करूंगी। उसे पढ़ा-लिखा कर उसे किसी चीज़ की कमी महसूस नहीं होने दूंगी।" [37] अपनी बेटी के प्रति अगाध प्रेम को प्रकट करते है। प्रत्येक मां का सपना होता है कि वह अपनी संतान को पढ़ा-लिखा कर एक नेक इंसान वनाए। जिस से वह अपने समाज तथा अपने माता-पिता की सेवा कर सके।

'नौ दिशाएं' उपन्यास में तत्व यथार्थ की अभिव्यक्ति'

यथार्थ के लिए अँग्रेजी में 'Reality' शब्द प्रयुक्त होता है। संस्कत में इसके लिए समानार्थक शब्द ' सत्य,' 'वास्तव', ' तथ्य', ' यथार्थ' आदि है। इन सब में यथार्थ ही Reality का सामानर्थी बनने में समर्थ हुआ है। ' यर्थाथ दो शब्दों के मेल से बना है: 'यथा और अर्थ'। 'यथा अव्यय है जिसका हिन्दी सामानर्थी पद है 'जैसा'। 'अर्थ' के प्रमुख हिन्दी सामानर्थी पद है 'वस्तु, तत्व, द्रव्य, पदार्थ आदि। यर्थाथ का सामान्य अर्थ होता है जैसा होना चाहिए ठीक वैसा, वाजिब, सच्चा, असली ,उचित इत्यादि। इन सभी बातों से यही बात सामने आती है कि जो वस्तु हमें सत्य, उचित, वास्तविकता का बोध कराए वह यथार्थ है।

हिन्दी के प्रसिद्ध आलोचक डा. गुलाब राय ने यथार्थ को बहुत ही गहन शब्दों में प्रकट किया है।" यथार्थ वह है जो नित्य प्रति हमारे सामने घटता है। उसमें पाप-पुण्य,धूप-छाँव और सुख-दुख *मिश्रित रहता है।* यह सामान्य भाव भूमि के समतल रहता है और वर्तमान की वास्तविकता में सीमाबद्ध रहता है। स्वर्ग की स्वर्णिम सपने उसके लिए परी देश की वस्तु है जो उसकी पहुँच से बाहर है। भविष्य उसके लिए कल्पना का खेल है। वह संसार के हाहाकार और करूण क्रंदन का यथातथ्य वर्णन करता है। वह कठोर सत्य को कहने में नहीं हिचकिचाता। वह वास्तविकता के नाते संसार में पाप और बुराई का विजय घोष करने में संकुचित नहीं होता।।" [38]

यथार्थ की परिभाषाएँ: भारतीय विद्वानों के अनुसार

- "यथार्थ से तात्पर्य, जो वस्तु अथवा घटना जैसी घटी, उसका वैसा ही वर्णन करना। मनुष्य का जीवन अच्छाई और बुराई दोनों से परिपूर्ण होता है। मानव-जीवन शक्ति तथा दुर्बलता,लघुता तथा महत्ता, कुरूपता तथा सुरूपता का समन्वय है। इन सभी का मिला-जुला वर्णन ही यथार्थ के अंतर्गत आता है।" [39]

- "सबसे बड़ा यथार्थ जो हमारे अन्दर है, जो शब्दों में नहीं रखा जा सकता। शब्दों में कभी-कभी क्या, बल्कि अक्सर इसका उपहास सा हो जाता है। शब्दों में आकर बह वदल जाता है, गल्त सा हो जाता है और अपना पूरा मतलब खो देता है।" [40]

- "मुंशी प्रेमचंद की यथार्थवादी कला की सवसे बड़ी विशेषता है- सजीव चरित्र-चित्रण उनके पात्र एकदम जिदां है। वे अपनी सच्चाई से पाठक को प्रभावित करते हैं और उनकी स्मति में हमेशा के लिए अंकित हो जाते है। प्रेमचंद ने जो पात्र चुने हैं, बह भले-बुरे दोनों के हैं। जमीदारों, महाजनों, नौकरशाहों 'जमींदार देशभक्तो' आदि के प्रतिनिधित्व आमतौर पर बुरे हैं। प्रेमचंद ने उनकी धूर्तता, निदर्यता, लालच और खुशामदीपन का भण्डाफोड़ किया है।" [41]

पश्चिमी विद्वानों के अनुसार:

जार्ज ल्यूकाक्स: यथार्थवाद के मानदण्ड के रूप में विशिष्टा के साथ ही ऐसी अदभूत संलेषण क्षमता को महत्व दिया है जिसमें सामान्य एवं विशिष्ट तथा चरित्र एवं परिस्थितियाँ सम्बद्ध हो जाए। चरित्र की विशिष्टा वैयक्तिक विशिष्टा की मुखापेक्षी नहीं है। चरित्र की विशिष्टा के लिए उसमें सभी ऐसे मानवीय एवं सामाजिक निर्णायक तत्त्वों का पूर्ण विकसित रूप में विकसित होना अति आवश्यक हैं कि उनके आधार पर सभी अन्तर्निहित संभावानाओं का स्पष्टीकरण हो सके।"[42]

यथार्थ के विविध स्वरूप:

सामाजिक यथार्थ

मनौवैज्ञानिक यथार्थ

सामाजिक यथार्थ:

उपन्यास आलोचना मे मैक्सिस गोर्की को सामाजवादी यथार्थवाद का प्रयोक्ता माना जाता है। गोर्की मजदूर वर्ग की एतिहासिक भूमिका से परिचित है और उनका मानना है कि मानवता का भविष्य केवल मजदूर वर्ग में ही सुरक्षित है। सामाजिक यथार्थ के मूल में अर्थ की महता को दिखाने का प्रयास किया गया है। यह एक ऐसा यथार्थ है जिसे सामाज भी ग्रहण करता है। सामाजवादी यथार्थ कोई रूढ़िबद्धता की शर्त नहीं रखता बल्कि वह भी देश और काल के अनुसार परिवर्तनीय एवं संशोधनीय है। सामाजवादी यथार्थ का विश्वास है कि मनुष्य स्वयं अपने भाग्य व इतिहास का निर्माता है। इतिहास का विकास वर्ग- संघर्ष के माध्यम से हुआ है और यह समाज निरंतर परिवर्तनशील है। शैली ने लिखा है

> "The world's great age begins a new.
> The goldens year return.
> The earth cloths like a snake renew.
> Its winter weed out worn." [43]

जिस प्रकार जीवन जीने के लिए रोटी, कपड़ा और मकान चाहिए ठीक उसी प्रकार साहित्य में यथार्थ भी।

मनौवैज्ञानिक यथार्थ

मनुष्य के होने वाले कार्य-व्यपारों को लेकर ही नहीं,बल्कि उसके विचारों को लेकर ही उपस्थित किए गये चित्र मानव जीवन के यथार्थ चित्र कहे जा सकते हैं। मनोविज्ञान का अर्थ होता है मन का विज्ञान अर्थात विज्ञान की वह शाखा जिसमें मानव मन के स्वरूप और कार्य-व्यपारों का सूक्ष्म अध्ययन किया जाता हैं। " फ्रायड के अनुसार मानव की वास्तविक परिस्थितियों का ज्ञान कर लेना ही वास्तविक यथार्थ हैं। ज्ञान का आरम्भ तो मानव मन के अंदर पलने वाले क्रिया-कलापों के अध्ययन से आरम्भ होता है।" [44]

साहित्य और यथार्थ का आपसी सम्बन्ध:

साहित्य और यथार्थ का गहरा संबंध है। दोनो एक दूसरे से घनिष्ट रूप से जुड़े हुए है। यथार्थ का अधिक प्रभाव आधुनिक साहित्य पर पडा है। विशेषकर उपन्यास विधा में यह प्रभाव अधिक सक्रिय है। साहित्यकार और साहित्य, दोनों को समाज ही बनाता है । एक साहित्यकार अपने जीवन और समाज से जो भी पाता है, वही साहित्य में उडेलता है और यदि वह कहीं बाहर से कुछ भी लेता है तो वह हमारे जीवन से मेल नहीं खाता, वह निरर्थक हो जाता है।

साहित्य का उद्देश्य व्यक्ति को ऊँचाइयाँ देना ही नहीं होता, बल्कि वह व्यक्ति के व्यक्तित्व को यथार्थ से भी परिचित कराता है। साहित्यकार स्वयं ही प्रगति नहीं करता, बल्कि समाज को भी प्रगति के मार्ग पर अग्रसर करने के लिए पथप्रशस्त करता है।साहित्यकार जब समाज- के यथार्थ से गुजरता है तब उसके अनुभवों में कडुवापन आ जाता है। वह चाहता है कि इसे ज्यों-त्यों साहित्य में उकेर दे। किंतु ऐसा करने से उसके मन का-का मैल तो साहित्य में बिखर जाता है। वहीं पाठकों को भी वैसा साहित्य कडुवाहटों की ओर ले जाता है। वह आशाओं को छोड़कर उस कडुवाहट को भी जीवन की सच्चाई मानने लगता है। ही, जीवन सभी को सिर्फ कड़वाहटें देता हो, ऐसी बात नहीं है, इसमें मिठास भी होती है; आदर्श रूप भी होते हैं, जो समाज के लिए स्वयमेव आदर्श बन जाते हैं। आदर्श जीवन के आधार पर ही आदर्श साहित्य की रचना होती है।

साहित्य मानव समाज से सत्य और सुंदर चुनकर समाज के समक्ष रखता है। मनुष्य स्वयं ही अपनी आलोचना किसीकिसी रूप में किया-न- करता है। हिंदी साहित्य में आदर्शवाद और यथार्थवाद तलाशा जाए तो दोनों के अलगअलग क्षेत्र प्राप्त होते हैं। भक्तिकाल में सूरदास-, कबीर, रैदास, जायसी, तुलसी, मलूकदास, मीराबाई आदि भक्त कवियों ने समाज और वास्तविक जीवन से अलग हटकर ईश्वर की आदर्श प्रतिमा स्थापित की है।वे ईश्वर या परमात्मा को सर्वोच्च सत्ता समझकर उसे अपने साहित्य का विषय बनाते हैं। आदर्शवाद की इससे बड़ी उपलब्धि और कोई न होगी, जिसमें अनदेखे अनजाने सत्ताधारी को अपना सारा जीवन ही समर्पण कर दिया गया हो। मृगारकाल में लगभग सभी कवियों ने प्रेमपरक रचनाएँ की हैं तथा प्रेम और नायिका सौंदर्य को आदर्श रूप प्रदान कर दिया है। उस काल की रचनाएँ मूलत प्रशस्तिगान होती थी। अतं में यथार्थ की झलक कम ही मिलती है। मृगारकाल के साहित्य को वास्वविक जीवन से परे होने के कारण यथार्थ की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता और आदर्श रूप न होने के कारण आदर्श की श्रेणी में भी नहीं रखा जा सकता। उस काल का साहित्य अलंकारों के चमत्कार का उत्कर्ष कहा जा सकता है।मृगार युग को पीछे छोड़ते हुए जब साहित्य आगे बढ़ा, तब वह प्रकृति में उलझ गया। छायावादी कवियों ने अपनेअपने प्रेम - की आदर्शवादिता बघारी और यौन कुंठाओं को भूलने के प्रयास में अपने प्रेम को आदर्श प्रेम के रूप में स्थापित किया।

छायावाद का प्रचलन सन् 1920 तक हो चुका था। छायावाद हिन्दी साहित्य की रोमांटिक धारा है।एक तरफ तो महादेवी किसी अदृश्य प्रिय को संबोधित कर रहस्यवाद की स्थापना करती हैं, जो कि उपनिषद् और वेदों से आता हुआ छायावाद का एक अंग बनता है। दूसरी तरफ निराला 'सरोजस्मृति-', 'कुकुरमुत्ता' और 'कुल्लीभाट', 'बिल्लेसुर बकरिहा' में जीवन का नग्न यथार्थ चित्रित करते हैं।छायावादी कवियों में निराला ही ऐसे व्यक्ति हैं जो प्रकृति चित्रण साथ-के साथ यथार्थ के धरातल पर भी अपने पैर मजबूती से जमाए हुए हैं। यथार्थचित्रण में कुछ कवियों ने स्वतंत्रतापरक कविताएँ भी की हैं और उनमें एक आदर्श राष्ट्र की स्थापना की

छटपटाहट दिखाई पड़ती है, वे कभी ललकारते हैं, कभी वीरों को आगे बढ़ाते हैं और कभी स्वार्थी जीवन को धिक्कारते भी दिखाई देते हैं ।हिंदी साहित्य में आदर्शवाद और यथार्थवाद का मूल प्रश्न गद साहित्य में उठ खड़ा दिखाई देता है। जिसकी स्थापना भारतेंदु हरिश्चंद्र कर चुके थे और परिष्करण आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा किया गया था ।इसका बीज पड़ चुका था। सिर्फ उसे खादपानी की आवश्यकता थी और वह काम किया प्रेमचंद ने । उनकी परवर्ती पीढ़ी जिसने प्रेमचंद के द्वारा लगाए गए वृक्ष को हरा-भरा रखा। प्रेमचंद ने अपने निबंध 'साहित्य का उद्देश्य' में लिखा है -"जब साहित्य की सृष्टि भावोत्कर्ष होती है, तब यह अनिवार्य है कि उसका कोई आधार हो । हमारे अंतःकरण का सामंजस्य जब तक बाहर की वस्तुओं या प्राणियों से न होगा, जागृति हो ही नहीं सकती" [45] पाश्चात्य विद्वान डीफो , रिचाडर्सन और फीलिंडग के उपन्यासों में यथार्थ चित्रण मिलता है। इन्होंने अपने कथानक इतिहासपुराण या प्राचीन साहित्य से ना लेकर सीधे जीवन से लिए है। , साहित्य मनुष्य की ज्ञान शक्तिस्थिति कर्म शक्ति और भाव शक्ति का अभिव्यजंन है। मानव की ,इच्छा शक्ति , बहुत ही विचारणीय विषय है। मानव सभ्यता दो अतियों के छोर में बंधी हुई है। एक छोर वह दष्टिकोण है जो जगत को सत्य और यथार्थ समझता है तथा परलोक आत्मोद्धार एवं परम शक्ति को नकार देता है। यह दष्टिकोण यथार्थवादी और भौतिकवादी है। साहित्य और यथार्थ जगत के संबंध पर विचार करना इसलिए आवश्यक होता है कि यूरोप और अमरीका के अन्य साहित्यकार यथार्थ जगत के अस्तित्व या महत्त्व को अस्वीकार करके अपने मानस से साहित्य-सृष्टि करने का दावा करते हैं।इसके लिए वे भाववादी दर्शन की विभिन्न विचारधाराओं का सहारा लेते हैं। इस सबका प्रभाव हिंदी साहित्य पर भी पड़ रहा है और अनेक हिंदी लेखक भारतेंदु से लेकर प्रेमचन्द तक के साहित्यविकास को बढ़ाने के बदले उसे किसी न किसी रूप-में अस्वीकार करते हैं और विदेश की उन भावधाराओं को ग्रहण करते हैं जिनमें लेखक के अहम् की तुलना में समग्र संसार नगण्य ठहरता है। विश्वसाहित्य- में अपने समय के समाज और मुख्यरूप से उनसे जुडी समस्याओं को जैसा देखा वैसा ही रचनात्मकता के साथ प्रस्तुत करने वाले यथार्थवादी रचनाकारों की परम्परा में अंग्रेजी साहित्य में चार्ल्स डिकेंस (1812-1870) और भारतीय (साहित्य में प्रेमचंद)1880-1936) निर्विवाद रूप से उच्चकोटि के उपन्यासकार माने जाते हैं। अपनेअपने देश-, काल व परिस्थितियों के अनुसार उन्होंने साहित्य के माध्यम से जो प्रस्तुत किया वो आज भी लगभग सभी वर्ग के पाठकों पर अमिट छाप छोडने में सक्षम है। दूसरे शब्दों में कहें, तो कालजयी है। एक ही परम्परा के वाहक होने के बावजूद दोनों लेखक अपनेअपने स्थान पर बेजोड- हैं इसलिए तुलनात्मक चर्चा करना शायद न्यायसंगत न हो। पर, वैश्वीकरण के युग में एक का नाम आते ही दूसरे के स्मरण से बच पाना भी सम्भव नहीं है। डिकेंस अंग्रेजी साहित्य के इतिहास में 19 वीं शताब्दी में रानी विक्टोरिया के नाम से प्रसिद्ध विक्टोरियन युग के प्रतिनिधि रचनाकारों में से एक रहे, तो वहीं दूसरी ओर प्रेमचंद 20 वीं शताब्दी के शुरुआती दौर में आधुनिक हिंदी साहित्य में यथार्थवाद का सूत्रपात

करने वाले पहले उपन्यासकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। जब इंग्लैंड लगभग हर क्षेत्र में समृद्धि और सम्पन्नता के शीर्ष पर माना जा रहा था, उस समय डिकेंस ने अपने औपन्यासिक चरित्रों के माध्यम से लंदन जैसे शहरों में व्याप्त सामाजिक समस्याओं और कुरीतियों का यथार्थवादी चित्रण अपने साहित्य के माध्यम से किया। अपनी रचनाओं में तत्कालीन समाज के ठेकेदारों की परवाह न करते हुए भारत की सामाजिक दशा और समस्याओं का बडा ही सटीक यथार्थ प्रस्तुत किया। उनकी रचनाओं में वरदान (1912) सेवासदन (1918) प्रेमाश्रम(1922) रंगभूमि(1925) कायाकल्प (1926) निर्मला(1927) प्रतिज्ञा(1929) गबन(1929) कर्मभूमि(1932) गोदान(1936) आदि उपन्यास प्रमुख हैं। उन्होंने कहानियां और नाटक भी लिखे। प्रेमचंद ने उर्दू और हिंदी साहित्य के साथ-साथ पश्चिमी साहित्य का भी अध्ययन किया था जिसमें रूसी, फ्रेंच और अंग्रेजी साहित्यकारों की कृतियां शामिल थीं। अंग्रेजी साहित्य में मुख्यरूप से उन्होंने यथार्थवादी साहित्यकारों को पढा। डिकेंस भी उनमें से एक रहे। इसकी चर्चा उन्होंने अपने लेखों में की है। एक दर्जन से भी अधिक उपन्यासों के लेखक रहे डिकेंस द्वारा यथार्थवादी दृष्टिकोण के साथ लिखी गयी प्रमुख कृतियों में पिकविक पेपर्स (1836-37), ऑलिवर ट्विस्ट(1837-39), निकॅलस निकिलबाई(1838-39), दि ओल्ड क्यूरिआसिटी शॉप (1840-41), मार्टिन च्वॅजिलेविट (1843-44), द क्रिसमस बुक्स (1843-48), डॉम्बे एंड सॅन् (1846-48), डेविड कॉपरफील् (1849-50), ब्लीक हाउस(1852-53), हार्ड टाइम्स (1854), लिटिल डॅरिट (1855-57), ग्रेट एक्सपेक्टेशन्स (1860-61), अवर म्यूचुअल फ्रेंड (1864-65), आदि उल्लेखनीय हैं। अधिकांश रचनाओं में अपने बचपन से जुडी स्मृतियों के माध्यम से डिकेंस इंग्लैण्ड की सामाजिक व आर्थिक दशा के साथसाथ उस समय के बच्चों की - हैं। ब्लीक दयनीय दशा को भी दर्शाते हाउस, लिटिल डॅरिट, डेविड कॉपरफील्ड, डॉम्बे एंड सॅन् आदि उपन्यासों में उनके खुद के बचपन की झलक आत्मकथात्मक शैली में मिलती है। अन्य कृतियों जैसे ऑलिवर ट्विस्ट, ग्रेट एक्सपेक्टेशन्स आदि में भी उनके जीवन की कुछ घटनाएं अप्रत्यक्ष रूप से देखी जा सकती हैं। ज्ञात हो कि डिकेंस का बचपन अभावों में बीता था। अपने परिवार की खराब आर्थिक स्थिति के कारण उन्हें स्कूल छोडना पडा और कारखानों आदि में मजदूरी जैसे कार्य करने पडे। इसीप्रकार प्रेमचंद ने भी अपनी शिक्षादीक्षा प्रतिकूल - परिस्थितियों में पूरी की थी। बचपन में ही माता और युवा होते होते पिता की मृत्यु के-साथ-साथ उन्हें अनेक तरह की पारिवारिक समस्याओं से भी दोचार होना पडा। उस समय के उच्च - व निम्न वर्ग के बीच के सामाजिक संघर्षो का उन्होंने प्रत्यक्ष अनुभव किया था। इसका उदाहरण उनके गोदान में मजदूरमध्य के अति कटु किसान और महाजनों के- संबंधों के मार्मिक वर्णन में मिलता है। डिकेंस के सफल यथार्थवादी उपन्यासों के पीछे उनकी वर्णनात्मक शैली का बहुत बडा योगदान माना जाता है। इसकी वजह से आलोचकों ने उनके कुछ उपन्यासों के कथानकों में जटिलताएं भी पायीं। पर, घटनाओं व चरित्रों का विस्तृत रूप से किया गया वर्णन तत्कालीन अंग्रेजी समाज से जुडी घिनौनी वास्तविकताओं को साहित्यिक पृष्ठों पर आज

भी जीवन्त कर देते हैं। इस संदर्भ में उनका उपन्यास ब्लीक हाउस उल्लेखनीय है, जो उपकथानकों व चरित्रों की अधिकता के बावजूद सामाजिक समस्याओं का यथार्थवादी चित्रण पाठकों के समक्ष रचनात्मकता के साथ प्रस्तुत करता है। उपन्यास में व्यंग्य के पुट उनके शैलीगत विशेषताओं में से एक है। जैसे किसी यंत्र के ठीक ढंग से कार्य करने में चिकनाई हेतु तेल आदि का उपयोग है, डिकेंस के समान प्रेमचंद ने भी यथार्थवादी दृष्टिकोण को अपनाते हुए अपनी रचनाओं में आम जनमानस की विवशताओं को व्यंग्यात्मक शैली में उकेरने का सफल प्रयास किया है। इस संदर्भ में गोदान के होरी का यह प्रसिद्ध कथन उल्लेखनीय है। कहीं पता न लगता कि किधर गये। गांव में इतने आदमी तो हैं किस पर बेदखली नहीं आयी, किस पर कुडकी नहीं आयी। जब दूसरों के पांवों तले अपनी गर्दन दबी हुई है, तो उन पावों को सहलाने में ही कुशलता है। शोषितों के प्रति संवेदना के स्तर पर कहीं भी समझौता न करते हुए उस समय के शोषक समाज पर व्यंग्यात्मक शैली में धारदार भाषा का प्रयोग उनकी कहानियों दो बैलों की कथा, पूस की रात, कफन आदि में भी देखा जा सकता है। प्रेमचंद के अतिरिक्त हिन्दी साहित्य में यथार्थ की अभिव्यक्ति करने बाले लेखकों मे मन्नू भण्डारी इन्दू ,मोहन राकेश ,डा. अजय शर्मा का नाम उल्लेखनीय है। डा. शर्मा के अतिरिक्त उपन्यास यर्थाथ को प्रकट करते है। उनके उपन्यासों में समाज का वास्तविक चेहरा दिखाई देता है। 'शहर पर लगी आँखे', चेहरा और परछाई,' बसरा की गलिया',' आकाश का सच' तथा नवीतम उपन्यासों में 'नौ दिशाएं , कागद कलम ना लिखणहार आदि ऐसे उपन्यास है जो सत्य पर आधारित है। नौ दिशाएं उपन्यास वास्तविकता का सशक्त उदाहरण है। किस प्रकार धन की लालसा व्यक्ति को इतना अंधा बना देती है वह खून के रिश्तों में ही अपनी लालसा की प्यास को बुझाने का प्रयास करता है। किस प्रकार अंह, क्रोध. स्वार्थ की आग पारिवारिक रिश्तों को खोखला कर देती है। किस प्रकार कामवासना की आग अपने ही रिश्तों को जला देती है का वर्णन शर्मा जी ने 'नौ दिशाओं में किया है। पती-पत्नी के टूटते रिश्तों का वर्णन करने में तथा सत्य क प्रकट करने में डा.शर्मा का उपन्यास सर्वथा उचित है। अपने अंह में व्यक्ति चाहे वह स्त्री हो या पुरूष अपना मानसिक संतुलन खो बैठते है जिस कारण इंसान दूसरे के साथ अमानवीय व्यवहार करने लगता है। 'नौ दिशाए' उपन्यास में डा. शर्मा ने आज के समय की कहानी को अपनी लेखनी के माध्यम से ऐसा व्यक्त किया है कि कोई भी उनकी प्रशंसा किए नहीं रह सकता। डा. अविनाश शर्मा, डा. अजय शर्मा के बारे लिखते कहते है कि,"डा. शर्मा उपन्यासकारों की ऐसी पीढ़ी के प्रतिनिधि है, जिनके पास यथार्थ को धरती पर खड़े होकर सामाजिक और पारिवारिक संबंधों में उभरते ह्रास को रेखांकित करने की रचनात्मक शक्ति है।"[46]'नौ दिशाएं उपन्यास वास्तविकता का एक ऐसा ही उदाहरण है जिसको पढ़कर पाठक यथार्थ के धरातल पर विचरने लगता है। पात्रों के संवाद आम जीवन के साथ संबंधित हैं। पात्रों की वातचीत पाठक को इतना प्रभावित कर देती है कि वह उपन्यास में ही समस्त जीवन को देख लेता है। आधुनिकता की द्रौड़ मनुष्य को कठोर वना देती है। उसे अपने और पराए में अंतर भूल जाता है, जिसके कारण उसमें अहं की भावना प्रबल हो जाती है। रजनी की सास रूकमणि भी अपनी बहू के साथ अमानवीय व्यवहार करती है। रुकमणि द्वारा अपनी बहू को कहे गए शब्द," ड्रामा

मत किया कर, तुमने तो अभी एक बच्चा भी नहीं जना, मेरी तरफ देख छह के छह लड़के।"[47] वास्तविकता को प्रकट करते है। आज की स्थिति भी ऐसी ही है। आज लड़की को ताने मारे जाते है यदि वह लड़के को जन्म नहीं देती और यदि वह लड़की पैदा कर देती है तो सारा जीवन ही उसे मानसिक और शारीरिक तौर पर प्रताड़ित किया जाता है। वास्तव में वह ही लेखक सफल है जो वास्तविकता को अपने साहित्य का आधार बनाता है। व्यक्ति का जीवन तभी सफल है जब वह खुद कमाता है। अपनी कमाई में जो बरकत होती है बह दूसरे की कमाई से नहीं हो सकती। आज का युग आधुनिक होने के साथ-साथ महंगा भी है। इसलिए गुजारा तभी है यदि घर का प्रत्येक सदस्य कमाई करे। रूकमणि द्वारा कहे गए शब्द," देखो संयुक्त परिवार है, कमाओं चाहे जितना लेकिन काम के बिना गुजारा नहीं है।"[48] आज के समय के साथ संबंधित है। प्रत्येक सदस्य को अपनी –अपनी जिम्मेदारिया सभालनी चाहिए तभी तो परिवार का पालन-पोषण होगा। आज महंगाई के युग में परिवार का प्रत्येक व्यक्ति कमाए तभी गुज़ारा सम्भव है। परिवारिक विखण्डन का मुख्य कारण व्यक्ति का आपसी ना समझ है। आपसी ना समझ के कारण व्यक्ति ना स्वंय को समझ पाता है ना की दूसरे पारिवारिक सद्स्यों को, जिसके कारण अलगाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। आज व्यक्ति के अधिक उसके धन को अहमियत दी जाती है। जिसके पास धन होता है उस साथ ही समाज होता है। गरीव के साथ तो कोई खड़ा भी नहीं होता। आज लोगों की ऐसी मानसिकता बन चुकी है कि वही बहू चाहे जो कमाती भी हो और घर का काम भी करती हो। डा. शर्मा ने अपने उपन्यास के माध्यम से एक ऐसी स्त्री का वर्णन किया है जो आज के समय के साथ संबंधित है। रजनी द्वारा कहे गए शब्द अपनी दोहरी जिंदगीं से परेशान होकर घर के सभी सदस्यों से समक्ष कहती है "दोहरी जिंदगीं में पिस रही हूं, जब मैं कहती हूं कि नौकरी छुड़वा दो घर का सारा काम कर दिया करूगीं तो उत्तर मिलता है तुमें तो इसलिए लाये है क्योंकि तुम हमें कमाकर देती हो।"[49] दोहरा जीवन जीना प्रत्येक व्यक्ति के लिए कठिन है चाहे बह पुरूष है या स्त्री। कोई भी एक दिन बाहर का और घर का काम नहीं कर सकता। लेकिन सत्य तो यही है आज की ताजा तस्वीर को लेखक ने पाठकों के सामने प्रस्तुत किया हैं। रूकमणि घर की सबसे बड़ी सदस्य होने के बाद भी घर में कलेश डालने का मुख्य कारण है। बह जलती आग में अग्नि डालने का काम करती है। वह भी अपने बेटे के कान भरने में लगी रहती है जिस से दोनों के रिश्ते में दराड आ जाए। उसके द्वारा कहे गए शब्द उसकी मानसिकता तथा समाज के यथार्थ को प्रकट करते है। वह अपने बेटे को कहती है,"बाह बच्चू तुम भी अपनी बीवी की बकालत पर उतर आए, उसकी करतूत सुनाऊ तो आखें शर्म से झुक जाएगीं।" [50] आज की सास भी अपनी बहू को नीचा दिखाने में कोई कसर नही छोड़ती जिसके कारण पारिवारिक विखण्डन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। लेखक समाज के साथ गहरे रूप से जुड़ा होता है। समाज के प्रत्येक वर्ग का उसे ज्ञान होता है। इसी ज्ञान को वह अपनी कलम के माध्यम से लोगों के समक्ष प्रस्तुत करता है। मां बनना प्रत्येक स्त्री का सपना होता है। शास्त्रों में कहा गया है कि स्त्री तभी सम्पूर्ण होती है जब वह मां बनती है। रजनी द्वारा कहे गए शब्द," नौ महीने जो कष्ट मैं सहूंगी, उसके बारे कोई नहीं जान सकता। मां के सिवा" [51] यह बात विल्लकुल सत्य है। एक स्त्री नौ महीने बच्चे को

गर्भ में रखकर बहुत कठिनाईयों के साथ वच्चे को जन्म देती है। उसकी पीड़ा का अनुभव तो एक स्त्री ही जाने। पति-पत्नी में आपसी प्रेम का होना अति आवश्यक है। दोनों को एक-दूसरे का आदर करना चाहिए। लेकिन आज के समय में तलाक के केस बहुत बढ़ गए है। इसका मुख्य कारण दोनो का आपसी न समझ है। एक अकेली स्त्री जीवन की कठिनाओ का सामना नहीं कर सकती। यदि उसका पति उसके साथ है तो उसमे आत्मविश्वास उत्पन्न होता है और वह प्रत्येक समस्या का सामना करने में सक्षम हो जाती है। लेकिन इसके विपरीत यदि उसका जीवनसाथी ही उसके साथ नहीं है तो वह कुछ नहीं कर सकती। एकता में ही बल होता है। ससुराल में स्त्री को दूसरे लोग चाहे जैसे मर्जी ताने दे। वह सहन कर लेती है। रजनी को भी इसी बात की चिंता है कि उसका पति उसका साथ नहीं देता। वह उसकी कोई बात सुनने को तैयार नहीं है। किस प्रकार वह अपना जीवन व्यतीत करे। वह अपनी मां से कहती है," जब मेरा पति ही मेरा साथ नहीं देता, तो मै दूसरों का दोष कैसे निकालू।" [52] प्रत्येक स्त्री यही चाहती है कि उसका पति उसके साथ कदम से कदम मिलाकर चले। जीवन के प्रत्येक मोड़ पर उसके साथ विचार-विमर्श करे। लेकिन सत्य तो यही है आज का इंसान अहं से प्रभावित है। बेटी की पीड़ा तो एक मां ही जान सकती है ना ही उसकी सास। मां का दिल ही भगवान ने ऐसा वनाया है कि यदि उसकी बेटी तकलीफ में है तो मां का दिल बेचैन हो जाता है। रजनी भी जब समस्या में होती है तो बह अपनी मां के पास आ जाती है। रजनी की मां के कहे गए वाक्य सत्य की अभिव्यक्ति करते है। "जब एक मां अपनी बेटी को तड़पता देखती है तो उसके क्या-क्या घट जाता है, कोई अनुमान भी नहीं लगा सकता।" [53] मां के लिए उसकी संतान सर्वोपरि होती है। वह अपनी संतान में अपने भविष्य को देखती है। रजनी की मां भी अपनी बेटी से बहुत प्यार करती है। कानून प्रक्रिया में एक स्त्री को पुरुष से अधिक प्राप्त है ताकि वह शोषण से वच जाए और घरेलू हिंसा की शिकार न हो सके। रजनी की मां महिला अधिकारों से भली-भांति परिचित है। वह संजीव को कहती है," उन्हें तो हमें दुआएं देनी चाहिएं, यदि हम लोग थाने में जाकर शिकायत दर्ज करवा देते तो जमानत तक नहीं होनी थी।" [54] रजनी की मां के शब्द वास्तविकता को प्रकट करते है यदि महिला अपने ससुराल पक्ष पर कोई भी आरोप लगा दे तो सारा परिवार कानून के कट्टघरे में आ जाता है। आपसी न समझ तर्क-वितर्क की भावना को जन्म देती है। जिसके कारण रिश्तो में टूटन आ जाती है,जो पतन का कारण बनती है। प्रत्येक पति यही चाहता है कि उसकी पत्नी अपने मायके ना जाए। यदि वह मायके चली जाती है तो उसके लौटते ही परिवार में महाभारत जैसे स्थिति बन जाती है। शर्मा जी ने इसी यथार्थ की स्थिति को संजीव के माध्यम से प्रकट किया है। इसी यथार्थ स्थिति को संजीव के माध्यम से प्रस्तुत किया है। संजीव अपनी पत्नी पर गुस्सा करता हुआ कहता है," जब तुम लड़कर मायके चली जाती हो, तो कई-कई दिन लौट कर नहीं आती हो।" [55] संजीव के शब्दों में वास्तविकता है लेकिन जब एक स्त्री दुखी होती है तो वह अपनी मां के पास नही जाएगी तो कहां जाएगी। यदि स्त्री को अपने ससुराल में ही प्यार मिले ,सब उसका आदर करे, उसके सुख-दुख के साथी बने तो सुसराल ही मायका बन जाता है पर ऐसा माहौल बनाना प्रत्येक के लिए संभंव नहीं है। जो व्यक्ति अपनी जिम्मेदारियों को नहीं निभाता, पारिवारिक रिश्तों की परवाह नहीं करता, अपने कर्तव्यों का पालन नहीं करता वह हमेशा एक अंजान दिशा में ही

घूमता रहता है। 'नौ दिशाएं' उपन्यास के माध्यम से डा. शर्मा ने यह बात पाठकों बहुत ही बारीकी से समझा दी है। यदि व्यक्ति अपने परिवार का पालन-पोषण उचित ढंग से करे तो उसे जो मानसिक शांति मिलती है वह और कही नहीं मिलती। "कहते है न जो सुख छज्जू दे चौबारे न बलख न बुखारे।" [56] इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को सुखी जीवन के लिए घर में ही आना पड़ता है जो कि शाश्वत सत्य है।

सन्दर्भ

1. एस.एन, शर्मा, 'आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान के आधार' पृ .16
2. http://www.bharatdarshan, रोहित कुमार, 15 Jan, 2013
3. http://www.bharatdarshan, रोहित कुमार, 15 Jan, 2013
4. डा. अजय शर्मा , नौ दिशाएं, पृ .17
5. डा. अजय शर्मा , नौ दिशाएं, पृ .25
6. डा. अजय शर्मा , नौ दिशाएं, पृ. 45
7. http://pckachhwal.blogspot.in/2013/12/blog-post_23.html, डा. प्रकाश कचनबाल, 12 Dec, 2013
8. बृहत हिन्दी कोश, पृ. 60
9. नालंदा विशाल शब्द सागर, पृ. 922
10. Webster Universal Dictionary, P.836
11. The Random House Dictionary of Modern English Language, P.1139
12. Readers Digost Universal Dictionary, P.11
13. दी न्यू डिक्शनरी आफँ थाँटस: लव, पृ. 353
14. रामचन्द्र शुक्ल,' चिंतामणि', पृ. 55
15. ओशो,' संभोग से समाधि की ओर', पृ. 78
16. कबीर ग्रंथावली, पृ. 11
17. सूरसागर पद, पृ. 26
18. डा. शांति भारद्वाज,' हिन्दी उपन्यास प्रेम और जीवन', पृ. 80
19. जैनेन्द्र कुमार उपन्यास,' परख', पृ. 89
20. डा. शांति भारद्वाज,' हिन्दी उपन्यास प्रेम और जीवन', पृ. 89
21. डा. अजय शर्मा , 'नौ दिशाएं', पृ .41
22. डा. अजय शर्मा , 'नौ दिशाएं', पृ .41
23. डा. अजय शर्मा , 'नौ दिशाएं', पृ .41
24. https://spiritualvilla.wordpress.com, 12 Dec, 2011

25. डा. अजय शर्मा , 'नौ दिशाएं', पृ .40
26. डा. अजय शर्मा , 'नौ दिशाएं', पृ .41
27. डा. अजय शर्मा , 'नौ दिशाएं', पृ .57
28. डा. अजय शर्मा , 'नौ दिशाएं', पृ .53
29. ओशो,' संभोग से समाधि की ओर', पृ. 78
30. डा. अजय शर्मा , 'नौ दिशाएं', पृ .54
31. डा. अजय शर्मा , 'नौ दिशाएं', पृ .54
32. डा. अजय शर्मा , 'नौ दिशाएं', पृ .55
33. डा. अजय शर्मा , 'नौ दिशाएं', पृ .55
34. डा. अजय शर्मा , 'नौ दिशाएं', पृ .55
35. डा. अजय शर्मा , 'नौ दिशाएं', पृ .56
36. डा. अजय शर्मा , 'नौ दिशाएं', पृ .86
37. डा. अजय शर्मा , 'नौ दिशाएं', पृ .86
38. डा. राम विलास शर्मा,' उपन्यास में यथार्थ और आदर्श की सीमाएँ', पृ .246
39. डा. गिरीराज अग्रवाल,'शोध दिशा', पृ .36
40. डा. पुनम अग्रवाल,' शोध दिशा', पृ .92
41. आचार्य विश्वनाथ प्रसाद,' हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों में अभिव्यक्त इतिहास',पृ .120
42. 42)
43. समाजवादी यथार्थवादी और हिन्दी कथा साहित्य, पृ .25
44. डा. कृष्ण देव शर्मा,' पाश्चात्य काव्य शास्त्र के सिद्धांत', पृ .27
45. www.Debate online. In, ईशान, 31 jul 2012
46. डा. अजय शर्मा , 'नौ दिशाएं', पृ .7
47. डा. अजय शर्मा , 'नौ दिशाएं', पृ .9
48. डा. अजय शर्मा , 'नौ दिशाएं', पृ .10
49. डा. अजय शर्मा , 'नौ दिशाएं', पृ .10
50. डा. अजय शर्मा , 'नौ दिशाएं', पृ .11
51. डा. अजय शर्मा , 'नौ दिशाएं', पृ .14
52. डा. अजय शर्मा , 'नौ दिशाएं', पृ .17
53. डा. अजय शर्मा , 'नौ दिशाएं', पृ .18
54. डा. अजय शर्मा , 'नौ दिशाएं', पृ .29
55. डा. अजय शर्मा , 'नौ दिशाएं', पृ .39
56. डा. अजय शर्मा , 'नौ दिशाएं', पृ .73

अध्याय तीन

डा. अजय शर्मा के उपन्यास 'नौ दिशाएं ' में असामान्य मनोविज्ञान

असामान्य मनोविज्ञान:

असामान्य मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जो मुख्यत: उन व्यक्तियों का अध्ययन करती हैं जो मानसिक रूप से विकृत या रूग्ण होते हैं। सरल शव्दों में उनके व्यवहार में इतनी अधिक भिन्नता होती है कि उन्हें सामान्य व्यक्ति की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता हैं। असामान्य मनोविज्ञान के मुख्यत: दो रूप है प्रथम सैद्धान्तिक तथा द्वितीय व्यावहारिक। सैद्धान्तिक रूप से यह इस बात को स्पष्ट करता हैं कि कौन सी विशेषताओं के कारण अमुक व्यक्ति असामान्य है या उसे कौन सा रोग है। विशिष्ट मानसिक रोगों का वर्गीकरण तथा उनके लक्षणों वर्णन करना भी असामान्य मनोविज्ञान के क्षेत्र में आता है। असामान्य मनोविज्ञान, दूसरे शव्दों में, असामान्य व्यवहार व व्यक्तितत्व के सैद्धान्तिक पक्ष का विस्तृत वर्णन करता हैं। असामान्य मनोविज्ञान का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष व्यावाहारिक भी हैं। अन्य शव्दों में, वह केवल विभिन्न मानसिक व शारीरिक रोगों का वर्णन मात्र ही नहीं करता बल्कि यह भी बताता हैं इनका निदान कैसे हो, कौन कौन सी उपचारत्मक पद्धतियों का उपयोग किया जाय तथा एक सामान्य व्यक्ति अपने मानसिक स्वास्थ्य को किस प्रकार से स्वस्थ रखे। असामान्य मनोविज्ञान इस कारण भी अधिक व्यावाहारिक हैं कि वह यह स्पष्ट करता है कि यह पूर्णत: सम्भव है कि सामान्य व्यक्ति असामान्य हो जाय और यदि असामान्य व्यक्ति का सही उपचार किया जाय तो उसे सामान्य व्यक्ति बनाया जा सकता है। इस प्रकार व्यावाहारिक शाखा से सामान्य व असामान्य दोनों प्रकार के व्यक्तियों को लाभ पहुँचता है।

असामान्य मनोविज्ञान की परिभाषाएँ: समय- समय पर विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने अपने चिंतन,मनन, परीक्षण एंव अध्यनन के आधार पर विभिन्न विचार प्रकट किये हैं। जो कि निम्नलिखित है। जिनको पढने के पश्चायत हम असामान्य मनोविज्ञान को अच्छी तरह से समझ जाएगें

1.सायमण्ड के अनुसार," सामान्य व्यक्ति वह है जो जीवन के संघर्षों एवं विपरीत परिस्थितियों का सामना कर सके और असामान्य व्यक्ति वह है जो साधारण सी कठिनाइयों के प्रति समायोजन करने में असमर्थ हो।" [1]

2. जेम्स ड्रेवर के अनुसार," असामान्य मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जो व्यवहार या मानसिक घटना की विषमताओं का अध्ययन करता है।"[2]

3.आइजेक तथा के अनुसार," असामान्य मनोविज्ञान असामान्य व्यवहार या असामान्य व्यक्तितत्व का अध्ययन है।" [3]

4. पेज के अनुसार,"असामान्य व्यवहार के समूह में वे व्यक्ति रखे जा सकते हैं, जिनमें सीमित बुद्धि, विघटित व्यक्तितत्व और चारित्रिक दोष निहित रहते है।" [4]

5. प्रो.जयसिंह के मतानुसार,"असामान्य मनोविज्ञान एक प्रत्यक्ष विज्ञान है, जो पर्यावरण से सम्बद्ध व्यक्ति की असामान्य अनुभूतियों व व्यवहारों का अध्ययन करता है।" [5]

असामान्य मनोविज्ञान के तत्व: अहं, क्रोध ,संदेहशीलता, ईर्ष्या, कुंठा, अंतर्द्वन्द्व

'नौ दिशाएं' उपन्यास में अंह तत्व की अभिव्यक्ति':

अहं व्यक्ति के चरित्र अथवा व्यक्तितत्व के निर्माण का महत्त्वपूर्ण तत्व है ।मनोविश्लेषकों के मतानुसार सामान्य व्यकितत्व में इड, ईगो, (अहं) और सूपर ईगो (नैतिक अहं) इन तीनो शक्तियों का संतुलन बना रहता है। लेकिन असामान्य व्यक्तितत्व में इन तीनो शक्तियों के संतुलन में व्यतिक्रम उत्पन्न हो जाता है। वैयक्तिक भिन्नता के कारण कुछ व्यक्तियों में अहं अधिक विकसित और प्रबल होता है। बाल्यकालीन परिस्थितियाँ और वातावरण उसके अहं को पुष्ट और तुष्ट करते हैं। यदि पारिवारिक, सामाजिक अथवा अन्य किसी तरह के विधि निषेध अहं की तुष्टि में बाधक होते हैं या अहं पर आघात करते हैं, तो व्यक्ति का व्यवहार असंतुलित हो जाता है। वह पलायनवादी, कांतिकारी या आक्रामक व्यवहार कर अपने अहं की तुष्टि करता है। वह साधारण सामाजिक और परिवेशीय आवश्यकताओं के अनुरूप आचरण करने में असमर्थ रहता है। वह अन्तर्मुखी, आत्ममुखी बन जाता है। डा. अजय शर्मा के उपन्यास नौ दिशाएं के भी अधिकतर पात्र अहं से ग्रसित है। अहं से ग्रसित होने के कारण उनमें पारस्परिक मतभेद भी पाया जाता है। हिन्दी साहित्य-जगत में ऐसे बहुत से साहित्यकार हुए हैं, जिन्होनें अपने साहित्य में अहं को बहुत महत्त्व दिया है। जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी, अज्ञेय, मन्नू भण्डारी, मोहन राकेश, मैत्रेयी पुष्पा, जगदीश चन्द्र माथुर, शिवानी, प्रेमचन्द आदि ऐसे साहित्यकार है जिनके पात्र अहं से ग्रसित होने के कारण असामान्य मनोविज्ञान को प्रर्दशित करते है। जोशी जी के अधिकांश पात्र अहं से पीड़ित असामान्य व्यक्तितत्व के होते है। 'विवेचना' नामक निबन्ध संग्रह में जोशी जी ने अपने असामान्य पात्रों की सजृन प्ररेणा पर ज्यों लिखा है- " मेरे सभी उपन्यासो का प्रधान उद्देश्य व्यक्ति की अहं भाव की एकान्तिकता पर निर्भय होकर प्रहार करने का रहा है। ' घृणामयी, 'सन्यासी, "पर्दे की रानी", 'प्रेत और छाया', 'निर्वासित' इन पांचों उपन्यासों मे मैने इसी दृष्टिकोण को अपनाया है। आधुनिक समाज मे पुरूष की बौद्धिकता ज्यों- ज्यों बढती चली जा रही है त्यों त्यों उसका अहंभाव तीव्र से तीव्र और व्यापक से व्यापक रूप ग्रहण करता जा रहा है। अपने इसी तृप्त ना होने वाले अहंभाव की अस्वाभाविक पूर्ति की चेष्टा में जब उसे पग-पग पर स्वाभाविक असफलता मिलती है, तो बह बौखला उठता है और उसी बौखलाहट की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप वह आत्मविनाश से पहले अपने आस पास के संसार के विनाश की योजना में जुट जाता है।" [6] नन्दकिशोर(सन्यासी), इन्द्रमोहन(पर्दे की रानी), पारसनाथ (प्रेत और छाया), महीप (निर्वासित), नृपेन्द्र रजंन(जिप्सी)

आदि ऐसे ही अहं पीडित असामान्य आचरण के चरित्र होते हैं। नायक पात्रों के अतिरिक्त (लज्जा), निरजंना(पर्दे की रानी), नीलिमा (निर्वासित) आदि प्रमुख स्त्री पात्रों में भी अहं की प्रबलता दिखाई पडती है। डा अजय शर्मा के उपन्यास नौ दिशाएं के पात्र भी अहं से ग्रसित है। नौ दिशाएं उपन्यास के प्रमुख पात्र रजनी, सुरेश, संजीव आदि ऐसे ही पात्र हैं, जिनमें अहं की प्रवृति अधिक हैं, जिसके कारण वह असामान्य व्यवहार को प्रदर्शित करते है। उपन्यास की नायिका रजनी का अहं अपनी चरम सीमा पर हैं, जो इस सवांद के माध्यम से स्पष्ट हो जाता है। " जब आप मुझे अपने परिवार का हिस्सा ही नहीं मानतें तो मैं क्यो पूजूं आपके पित्तरों को? अब पूजूंगी भी नहीं। याद रखना मेरी बात को।[7] इस प्रकार अहं रजनी में स्पष्ट रूप से दिखाई पडता है। अहं के कारण व्यक्ति अपना मानसिक संतुलन खो बैठता है जिसके कारण उसे इस बात का भी अनुमान नहीं रहता कि सामने वाला व्यक्ति उसकी आयु से बड़ा है या छोटा है। जोशी जी के सन्यासी उपन्यास में नंद किशोर भी अहं से ग्रसित व्यक्ति है। उपन्यास में नंदकिशोर की अहं भावना को प्रकट करने बाले अनेक प्रसंग है। उदाहरण के लिए "आगरे मे जंयती के छोटे भाई बिरजू को नंदकिशोर द्वारा दिए गए दस रूपय के नोट को जंयती लौटा देती है तो अहं वादी नंदकिशोर इसे अपना अपमान समझता है। अपने आहत अहं की तृप्ति के लिए बह उस नोट के टुकडे-टुकडे कर के उसे अपने पाँवों तले कुचल डालता है।"[8] इस प्रकार हम कह सकते है जब व्यक्ति का अहं उग्र रूप ले लेता है तो व्यक्ति असामान्य व्यवहार करने लग जाता है। रजनी में सहनशीलता कम होने के कारण उसमें अहं की मात्रा अधिक है। अपनी सास की बात सुनकर वह इस तरह की प्रतिक्रिया व्यक्त करती है, जिसमें अहम ही प्रधान है। 'सासु मां की बात सुनकर रजनी आग- बबूला हो गई और बोली," यह संस्कारों का भाषण मुझे मत दीजिए कि संस्कार किस चिडिया का नाम हैं? "[9] व्यक्ति जब अहं के वश में हो जाता है तो बह अपने नैतिक मूल्यों से गिर जाता है। मैं ही उसके लिए सर्वोपरि हो जाता है। उपन्यास के पुरूष पात्रों में भी अहं अधिक प्रबल है। उपन्यास में संजीव भी अहं के कारण असामान्य व्यक्तितत्व को प्रस्तुत करता है। संजीव अपनी पत्नी को उत्तर देता हुआ कहता है " तुम मुझे डाक्टर को दिखाने के लिए लायी हो या भाषण पिलाने" ? [10] इस प्रकार पति पत्नी मे अहं की मात्रा सबसे अधिक है। अहं से भरपूर मनुष्य कभी भी विवेक से नहीं सोचता, जिसके कारण बह शीघ्र ही आग बबूला हो जाता है। पति-पत्नी का रिशता तभी सफल ह जब वह अपने अहं को त्यागकर विनम्रता, सहनशीलता, त्याग आदि गुणों को अपनाकर एक दूसरे के सुख- दुख के साथी बन कर रहे, तभी जिन्दगी को सुव्यवस्थित ढंग से जिया जा सकता है। लेकिन रजनी और संजीव दोनो इस बात से अनभिज्ञ हैं। जिसके कारण आधे ही रास्ते में उनकी जिंदगी डगमगा जाती है।

'नौ दिशाएं' उपन्यास में क्रोध तत्व की अभिव्यक्ति':

क्रोध, लोभ ,अंहकार, काम तथा मोह यह पांच मनुष्य के मनोविकार हैं। यह प्रत्येक मनुष्य में पाए जाते हैं। कोई भी मनुष्य इन पाँचों से बच नहीं सकता है और यह स्वाभाविक भी है,लेकिन यदि व्यक्ति इन पाँचों मनोविकारों को सीमा से अधिक अर्थात पूर्णन रूप से इनके वश में हो जाता है तो उसका विनाश सम्भव होता है। क्रोध भी इन पाँचों में से एक है। क्रोध मनुष्य के विवेक को विवेकहीन कर देता है। उस की सोचने समझने की शक्ति को क्षीण कर देता है। इतिहास इस बात का साक्षी रहा है जब-जब मनुष्य ने क्रोध किया है तब तब उसका अन्त निश्चित हुआ है। विद्वानों ने क्रोध को मनुष्य का दुश्मन कहा है। क्योंकि यह मनुष्य का एक ऐसा गम्भीर दुश्मन है, जो मनुष्य के अन्दर छुपा रहता है और ना जाने कब उग्र रूप लेकर उसका अन्त कर देता है। 'भगवान कृष्ण क्रोध के बारे मे कहते है," क्रोध से मूढता उत्पन्न होती है, मूढता से स्मृति भ्रांत हो जाती है, स्मृति भ्रांत हो जाने से बुद्धि का नाश हो जाता है और बुद्धि का नाश होने पर प्राणी स्वंय नष्ट हो जाता है।"[11] अर्थात कहने का भाव यह है कि क्रोध से मूर्खता जन्म लेती है, मूर्खता स्मृति को भ्रांत कर देती है, जब स्मृति भ्रांत हो जाती है, तब बुद्धि का नाश हो जाता है और मनुष्य नष्ट हो जाता है। मनुष्य चाहे कितना ही विवेकी, पंडित, महात्मा, ज्ञानी हो जब वह क्रोध कर लेता है तो वह मूर्ख बन जाता है। क्रोध के विषय में अनेक विद्वानों ने अपने विचार प्रकट किए है। जिसको पढ़ने के बाद हमें से ज्ञात हो जायेगा कि क्रोध कितना भयकंर होता है और उसका परिणाम उस से भी भयकंर।

1.'क्रोध मूर्खों के ह्रदय में ही बसता है। अल्बर्ट आइन्स्टाइन

2.क्रोध वह तेज़ाब है जो किसी भी चीज जिसपर वह डाला जाये से ज्यादा उस पात्र को अधिक हानि पहुंचा सकता है जिसमे वह रखा है।

3. मूर्ख मनुष्य क्रोध को जोरशोर से प्रकट करता है-, किंतु बुद्धिमान शांति से उसे वश में करता है। बाइबिल

4.क्रोध में मनुष्य अपने मन की बात नहीं कहता, वह केवल दूसरों का दिल दुखाना चाहता है।" – प्रेमचंद।' [12]

इस प्रकार अनेक महापुरूषों ने अपने अपने दृष्टिकोण के अनुसार क्रोध को परिभाषित किया है। गीता, बाइबिल, कुरान आदि धार्मिक ग्रन्थों में क्रोध को मानव का तथा समाज का शत्रु माना गया है। साहित्यकारो ने भी क्रोध का वर्णन अपने साहित्य में किया है। जगदीश चंद्र ने अपने उपन्यास "धरती धन न अपना" में एक ऐसे पात्र का वर्णन किया है जो क्रोध से भरा हुआ है, जो उसके संवाद द्वारा स्पष्ट हो जाता है। 'चौधरी हरनाम सिंह जीतु को क्रोध में आकर कहता है," सच-सच बता दो। नहीं तो सारे मुहल्ले को इसी चौगान पर नंगा लिटाकर जूते लगाऊँगा।"[13] जब व्यक्ति को क्रोध आता है तो वह अपने सारे संस्कार भूल जाता है तथा उसकी वाणी अपशब्दों से भर जाती है। यही हाल चौधरी हरनाम सिंह का था। डा शर्मा के उपन्यास में भी पात्रों में क्रोध भरा पडा है। उपन्यास का नायक संजीव अपने क्रोध के कारण ही अपने परिवार से अलग हो जाता है।

क्रोध के कारण ही वह अपनी पत्नी रजनी को अपशब्द कहता है। संजीव अपनी पत्नी पर क्रोध करता हुआ कहता है," कुत्ते की दुम कभी सीधी नहीं होती चाहे कुछ भी कर लो।"[14] इस प्रकार जब क्रोध व्यक्ति के सिर पर सवार होता है तो उसे कुछ समझ नहीं रहती। उसका विवेक नष्ट हो जाता है। संजीव भी क्रोध में यह भूल जाता है कि जिसको वह अपशब्द बोल रहा है। वह ओर कोई नहीं व्लकि उसकी पत्नी है। जो उसके जीवन मरण की संगनि है। उसकी अर्दागिनी है। "नरक कुण्ड में बास" कहानी में सामंत, पूंजीबादी तथा अफरशाही तत्वों के गठजोड को दिखाया गया है। जो कि किसानों का शोषण तो करते है साथ साथ क्रोध में भरकर उनकी जाति को भी भला वुरा कहते है। 'नंद सिंह को जब कोई चमार कहता है तब उसे क्रोध आता हैं क्योंकि इस गाँव में कुत्ते को भी चमार कहा जाता है।'[15] नौ दिशाएं उपन्यास में सिर्फ पुरूष पात्र ही क्रोध के वश में नहीं है व्लकि स्त्री पात्र भी इसकी चपेट में है। रजनी जो उपन्यास की प्रमुख पात्रा है अपने क्रोध पर काबू नहीं रख पाती और अपनी सास तक को खरी- खोटी सुना देती है। रजनी को अपनी सास की बातों पर क्रोध आ गया और वह बोली," यह संस्कारों का भाषण मुझे मत दीजिए कि संस्कार किस चिडिया का नाम हैं? बात तूतू, मैं मैं से शुरू हुई थी, गाली गलोच पर उतर आई।"[16]

'नौ दिशाएं उपन्यास में संदेहशीलता तत्व की अभिव्यक्ति':

संदेहशीलता एक मानसिक विकृति है। मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में इस मानसिक विकृत से युक्त पातों की भरमार है। जब व्यक्ति सीमा से अधिक किसी पर संदेह करता है तो उसका मानसिक संतुलन बिगड जाता है। डा अजय शर्मा के उपन्यास नौ दिशाएं के पात्र भी संदेहशीलता से ग्रसित है। संजीव की मां रूकमणि हमेशा अपनी बहू रजनी को संदेह की दृष्टि से देखती है। वह हमेशा ही अपनी बहू पर शक करती रहती है। वह अपने बेटे के कान भरते हुए कहती है," बेटा, रात को तुम्हारी बीवी चोरी- चुपके से दूध पीती है, वह भी रूह अफ़जा डाल कर।"[17] इस संवाद में उसकी संदेहशीलता दिखाई पडती है। वह अपनी बहू पर संदेह की दृष्टि रखती है। इस प्रकार जोशी जी ने भी अपने उपन्यासों में पात्रों की संदेहशीलता का वर्णन किया है। सन्यासी उपन्यास का नायक नन्दकिशोर के पतन का मुख्य कारण उसकी अधिक संदेहशीलता ही है। शांती और बलदेव के विरूध संदेह करने वाला नंदकिशोर शांती से स्पष्ट शब्दों में कहता है," बलदेव के प्रति तुम्हारे मन का जो भाव है, तुम क्या वह समझती हो कि वह मुझसे छिपा है।"[18] "..... तुम मुझसे ऊब कर बलदेव को चाहने लगी हो.... तुमने वह प्रेम की भेंट परोक्ष रूप में बलदेव को ही दी है।" [19] प्रस्तुत संवाद यह स्पष्ट करता है कि नंदकिशोर बलदेव और शांती को इस दृष्टिकोण से देखता है जो उसकी संदेहशीलता को उजागर करती है।

'नौ दिशाएं उपन्यास में ईर्ष्या तत्व की अभिव्यक्ति':

मनुष्य के अंतकरण: में एक ऐसी भी प्रवृत्ति होती है, जिसके कारण वह दूसरों की सफलता देखकर अपने भीतर जलन का अनुभव करता है। इसे' ईर्ष्या' कहते हैं। यह एक मानसिक रोग है, जो मनुष्य मन को सन्तप्त करता रहता है। 'शरीर को सन्तप्त करने वाला रोग तो उपचार से ठीक हो जाता है, पर ईर्ष्या का उपचार सहज नहीं है। शरीर में ताप पैदा करने वाले रोग को रोगी अनुभव करता है और फलस्वरूप वह अपने को अस्वस्थ समझ उसके उपचार के लिए अपने को अस्वस्थ ही अनुभव नहीं करता, उसे दूर करने की चेष्टा का :उसमें सर्वथा अभाव होता है। यही उस रोग को विकट बना देता है। रोग को दूर करने के लिए दो बातें आवश्यक होती हैंएक तो यह अनुभव करना किमैं रोगी हूं और दूसरी उसे दूर करने के लिए चेष्टाशील होना। ईर्ष्या रोग से ग्रसित व्यक्ति में इन दोनों बातों का अभाव होता है।'[20] ईर्ष्या से ग्रसित व्यक्ति न अपने आप को सुखी रख पाता है और न ही दूसरे को सुखी देख पाता है। ईर्ष्या ही मनुष्य के मन को दूषित करती है। जिसके कारण मानव सुमार्ग की जगह कुमार्ग की तरफ बढने लग जाता है। हिन्दी जगत के साहित्यकारों ने अपने साहित्य में ईर्ष्या जैसे मनोविकार का वर्णन किया है। साहित्यकार का मुख्य उद्देश्य मनुष्य की वास्तविक तस्वीर को पाठकों तक लाना होता है। मन्नू भण्डारी की कहानी "जीती बाजी की हार" के पात्र ईष्या से ग्रसित है। कालेज में पढ़ने बाली मुरला, आशा और नलनी तीनों अपने आप को बुद्धिमान समझती है। अपने व्यक्तितत्व को बनाय रखने के लिए वह शादी नहीं करना चाहती। लेकिन कुछ ही समय के बाद आशा और नलिनी अपने फैंसले से हट कर शादी कर लेती है। जब मुरला को यह पता चलता है तो वह ईष्या से भर जाती है और भरे कटाक्ष से भरे वाक्य से कहती है," वह सब तुम लोगो को ही मुबारक हो।"[21] पहले जो उसके बात करने का ढंग था बह अब बदल जाता है क्योंकि उसमें ईष्या का समावेश हो जाता है। नौ दिशाएं के भी पात्र चाहे वह पुरूष है या स्त्री ईष्या जैसे मनोविकार की चपेट में है। रूकमणी अपनी बहू से बहुत ईष्या करती है और अपने बेटे संजीव से कहती है," वाह बच्चू, तुम भी अपनी बीवी की वकालत पर उतर आए। उसकी करतूत सुनाऊं तो आंखें शर्म से झुक जाएंगी।" इस संवाद से यह सिद्ध होता है कि संजीव की मां के मन में अपनी बहू के प्रति कितनी ईष्या है। [22]

'नौ दिशाएं उपन्यास में कुंठा तत्व की अभिव्यक्ति':

असहज जीवन कुंठा को जन्म देता है। जब जीवन का सहज क्रम रूक जाता है तो कुंठा को जन्म मिलता है। व्यक्ति अपनी तीव्र इच्छा या अभिलाषा को पूरा नहीं होता देखता तो वह निराश हो जाता है। यही निराशा मानसिक तनाव को जन्म देती है। यही तनाव उसको चिंतित बना देता है। ऐसे लोग विद्रोहात्मक और तनावग्रस्त दिखाई देते है। अपनी इसी कुंठा के कारण कई बार वह असामान्य व्यवहार करने लग जाते है। उनमें मानसिक विकृति उत्पन्न हो जाती है।

आधुनिक समय में भले ही विज्ञान ने कितनी ही उन्नति क्यों न कर ली हो, लेकिन आधुनिक मानव आज अधिक सीमा में कुंठा से ग्रसित है। मनोवैज्ञानिक उपन्यासकारों ने मानव में बढ़ती इस कुंठा और उसके दुष्परिणामों को अपने पात्रों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। कभी- कभी व्यक्ति अपने आप को असहाय और असुरक्षित महसूस करने लग जाता है। 'क्षय की कुन्ती सावित्री के लिए पैरवी करने के बाद अपने को बहुत हीन मानती है। अपने आदर्शो के हीन होने पर वह कुंठित हो जाती है।'[23] 'नौ दिशाएं' के पात्र भी चाहे वह स्त्री हो या पुरूष कुंठा से ग्रसित है। मैं कितने ही अरमानों को लेकर इस घर में आई थी। लेकिन आप लोगों ने मेरे अरमानों को चकनाचूर कर दिया।"[24] इस प्रकार रजनी को जब यह पता चलता ह कि सब लोगों ने उसके साथ अन्याय किया है तो वह कुंठा से भर जाती है। इसके साथ साथ उसकी वाणी अपशब्दो से भर जाती है। कुंठा व्यक्ति की मानसिकता को प्रभावित करती है। जब व्यक्ति कुंठित होता है तो वह अपने दिमाग में संतुलन नहीं बना पाता जिसके कारण उसकी मानसिकता विकृत हो जाती है जो समाज के लिए हानिकारक सिद्ध होती है।

'नौ दिशाएं उपन्यास में अंतर्द्वन्द्व तत्व की अभिव्यक्ति':

अंतर्द्वन्द्व वह अवस्था है," जिसमें दो या तीन विरोधी प्रेरणाएँ उत्पन्न होती है तथा जिनकी एक साथ तृप्ति संभव नहीं होती।" यह चेतन तथा अचेतन दोनो स्तरो पर हो सकता है। चेतन संघर्ष वह होता है जो पात्रों के चेतन मन में हो , उसके कारणों से भली प्रकार से परिचित होते है। अचेतन सघर्ष वह है, जो पात्रों के अचेतन में सक्रिय है। जिसके कारणों से पात्र अनभिज्ञ है। अधिकांश अंतर्द्वन्द्व चेतन स्तर पर होते है। फ्रायड के अनुसार," अंतर्द्वन्द्व से ही सारे मनस्ताव पैदा होते है।" [25] नौ दिशाएं के पात्र भी चाहे वह स्त्री हो या पुरूष अंतर्द्वन्द्व से ग्रसित है। अंतर्द्वन्द्व से ग्रसित होने के कारण उनमें विवेक की कमी है। जिसके कारण उनमें आपसी मतभेद प्रारम्भ हो जाता है। जब व्यक्ति में विवेक की मात्रा कम हो जाती है तो उसमें सोचने समझने की कमी हो जाती है जिसके कारण उसकी मानसिकता विकृत हो जाती है। मन्नु जी ने भी अपने साहित्य में अंतर्द्वन्द्व को अपने पात्रों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। 'एक कमजोर लड़की की कहानी' की रुप अपने प्रेमी के साथ भागने का निश्च्य करती है लेकिन जब उसे अपने पति का प्रेम तथा प्रशंसा मिलती है तो बह अपने निशिचय से भटक जाती है तथा अंतर्द्वन्द्व की स्थिति में पड़ जाती है। जब इंसान एक ऐसे मोड़ पर आ जाता है जहां उसे कुछ समझ नहीं आता कि वह अब क्या करे किस ओर जाए और किस ओर न जाए। डा. शर्मा ने अपने उपन्यास 'नौ दिशाएं' में इसी अंतर्द्वन्द्व को प्रकट किया है। आज आधुनिकता की दौड़ ने मनुष्य की मानसिकता को बहुत प्रभावित किया है। समाज में व्यक्ति को ऐसी बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है जिसके कारण वह आंतरिक द्वन्द्व में ही पड़ा रहता है। इसी प्रकार नौ दिशाएं के पात्र भी इसी तरह अंतर्द्वन्द्व से पीड़ित है। रजनी और संजीव मे अंतर्द्वन्द्व की स्थिति वनी रहती है। रजनी अपने पति से प्यार भी करती है लेकिन उसके कटु व्यवहार से ग्रसित होकर अपने मायके जाने का फैसला करती है। इस प्रकार उसमें आंतरिक द्वन्द्व चलता रहता है।

सन्दर्भ

1. डा. पदमा अग्रवाल, मनोविश्लेष्ण और मानसिक क्रियाएँ पृ.16
2. आर.एन त शुभ्रा एस.भारद्वाज,मूल मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाएँ पृ.1
3. डॉ. महेश भार्गव तथा डॉ.वीनू भार्गव,‘ मानव विकास का मनोविज्ञान’, पृ.13
4. डॉ. लाभ सिंह तथा डॉ. गोविन्द तिवारी,‘ असामान्य मनोविज्ञान, पृ.22
5. डॉ. लाभ सिंह तथा डॉ. गोविन्द तिवारी,‘ असामान्य मनोविज्ञान, 25
6. इलाचन्द्र जोशी उपन्यास ,‘ सन्यासी’, पृ 266
7. डॉ.अजय शर्मा, नौ दिशाएं पृ 17
8. इलाचन्द्र जोशी उपन्यास,‘ सन्यासी’, पृ 126
9. डॉ.अजय शर्मा, नौ दिशाएं पृ 25
10. डॉ.अजय शर्मा, नौ दिशाएं पृ 17
11. http:// www. Sanskar.com
12. http:// www. Sanskar.com
13. जगदीश चन्द्र माथुर,‘ धरती धन न अपना’, पृ 17
14. डॉ.अजय शर्मा, नौ दिशाएं पृ 20
15. जगदीश चन्द्र माथुर,‘ नरक कुण्ड में बास’, पृ 26
16. डॉ.अजय शर्मा, नौ दिशाएं पृ 30
17. डॉ.अजय शर्मा, नौ दिशाएं पृ 66
18. इलाचन्द्र जोशी उपन्यास,‘ सन्यासी’, पृ 266
19. वही,पृ 277
20. मन्नू भण्डारी,‘ “जीती बाजी की हार” पृ 266
21. डॉ.अजय शर्मा, नौ दिशाएं पृ 50
22. मन्नू भण्डारी,‘ क्षय की कुंती’ पृ 120
23. डॉ.अजय शर्मा, नौ दिशाएं पृ 29
24. फ्रायड,‘मनोविश्लेषण और फ्रायडवाद की रूपरेखा’, पृ 130

अध्याय चार
डा. अजय शर्मा के उपन्यास 'नौ दिशाएं' में नारी मनोविज्ञान

साहित्य का आधार समाज है और मनोविज्ञान का केंद्र व्यक्ति संबंधी विवेचन है। साहित्य समाज के साथ संबंधित होता है तथा मनोविज्ञान व्यक्ति की मानसिकता को प्रदर्शित करता हैं। 'समाज और व्यक्ति का आचरण' संबंधी तालमेल और सजृनात्मक द्वन्द्व ही मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन का केंद्र बिन्दु होता है। उपन्यास का मुख्य विषय मानव जीवन होता है। मानव जीवन में मन का इतना बड़ा स्थान होता है कि कोई भी उपन्यासकार उसकी उपेक्षा नहीं कर सकता है। इसी कारण समस्त उपन्यास साहित्य में मन और उसके विविध क्रिया-कलापों न्यूनाधिक वर्णन आवशय पाया जाता है। फ्रायड, एडलर, युंग आदि पाश्चात्य विद्वानों तथा उनके सिद्धांतों के आविर्भाव के उपरांत उपन्यास में पात्रों के अन्तर्मन का चित्रण अधिकाधिक सूक्ष्म होने लगा है। मनोविज्ञान के माध्यम से व्यक्ति का अंतर्मन अभिव्यक्त होता है। मनुष्य के व्यक्तित्व में अंतवृत्तियों का प्रमुख स्थान है। समस्त बाहरी जगत इन्हीं प्रवृतियों की बाह्राभिव्यक्ति है। मनोविश्लेषण ने मानव अंतर्जगत में चेतन मन के साथ अचेतन मन की स्थिति को रूप दिया है। अचेतन की कल्पना फ्रायड का मूल सिद्धांत है। व्यक्ति की इच्छा शक्ति बाह्राभिव्यक्ति न पाकर अंतर्मुखी हो जाती है और अचेतन में अक्षुण्ण रहकर कुंठाओं एवं अस्पष्ट स्पप्न चित्रों को जन्म देती है। व्यक्ति की कामेच्छाएँ अचेतन के क्षेत्र में प्रवेश कर उनका मानसिक संतुलन नष्ट कर के अराजकता फैला देती है।

हिन्दी उपन्यासकारों ने मनोविज्ञान के इन्हीं सिद्धांतों को कथा साहित्य में प्रस्तुत करने के लिए नारी जीवन को भी नवीन रूप में लिया है। नारी के परंपरागत स्वरूप को त्यागकर, नारी की मानसिक जटिलताओं का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, परीक्षण एवं मूल्याकंन किए जाने लगे है। इस मनोवैज्ञानिक विश्लेषण में स्त्री-पुरुष संबंधों की नई व्याख्याएँ उभरकर आई है। मनोविज्ञान ने आदर्श के स्थान पर यथार्थ को स्थापित किया। व्यक्ति को उसकी संपूर्ण विकृतियों,विसंगतियों, एवं मनोविकारों के साथ उपन्यास साहित्य में प्रस्तुत किया है। सिनेमा जगत में भी ऐसी बहुत सी फिल्में है, जिनमें नारी की मानसिक स्थिति को प्रस्तुत किया गया हैं। विशाल भारद्वाज एक ऐसे निर्देशक है, जिनकी हर फिल्म में अंधेरा रहता है। यह अंधेरा कभी मन का तो कभी समाज का तो कभी रिश्तों का होता है। 'सात खून' एक ऐसी ही फिल्म है, जिसमें नारी की मानसिक स्थिति को स्पष्ट किया गया है। उसके मन में दबी हुई ख्वाहिशें और प्रतिकार है। वह अपने हर पति को पूर्ण चाहती है। प्रेम, समर्पण और वरावरी का भाव चाहती है लेकिन वह उसे प्राप्त नहीं होता। उसे

कदम-कदम पर अपमान ही हासिल होता है, जिससे उसका मन प्रतिशोध की ज्वाला से भर जाता है। फिल्म के अंतिम *दृश्य मे वह अरूण से कहती है,"कि, हर बीबी अपनी शादीशुदा जिंदगी में कभी न कभी अपने शोहर से छुटकारा चाहती हैं।"[1] यह संवाद एक पत्नी की मानसिकता को प्रकट करता है। वह अपने शोहर से इसलिए छुटकारा चाहती है, क्योंकि उसने कभी भी उसे प्रेम नहीं किया, उसका सम्मान नहीं किया, जिसके कारण उसमें हीन भावना पैदा हो जाती है, जो अलगाव का कारण बनती है। नारी भी पुरुष की भांति सम्मान चाहती है, लेकिन पुरुष प्रधान समाज नारी की इस चाह तथा उसके अरमानों का गला घोंट देता है। समय-समय पर अनेक साहित्यकारों ने नारी की पीड़ा को समझा तथा अपनी कलम के माध्यम से उसे सहारा तथा आवाज दी। नारी की मानसिक स्थिति को प्रकट करने में महिला लेखिकाओं का महत्त्वपूर्ण स्थान हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि उन्होंने खुद इस समस्या को झेला है और भोगा हैं। महिला लेखिकाओं में मन्नु भण्डारी, प्रभा खेतान, शिवानी, मैत्री पुष्पा, अनामिका,* मृदुला*गर्ग, महाशवेता देवी, इन्दु बाला आदि के नाम उल्लेखनीय है। महिला साहित्यकारों के अतिरिक्त पुरुष लेखक भी हैं जिन्होनें नारी का मनोवैज्ञानिक* चित्रण करके अपनी अदभुत काव्य कला को प्रकट किया हैं, उन्होंने नारी की पीड़ा, कामवासना, प्रेम आदि का चित्रण बड़े ही कलात्मक ढंग से किया हैं। पुरुष लेखकों में मुंशी प्रेमचंद, मोहन राकेश, जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी, अज्ञेयअजय शर्मा .डा ,राकेश सिन्हा ,जगदीशचंद्र माथुर , का नाम उल्लेखनीय है। डा .अजय शर्मा ने अपने उपन्यास में नारी की मानसिक 'नौ दिशाएं' अवस्था का चित्रण बड़े हीकलात्मक तथा यथार्थ के धरातल पर किया हैं। इससे यह बात सिद्ध हो जाती है कि डाअंतर्मन को परखने में काफी कुशल है। उनके उपन्यास की नारी शर्मा मनुष्य के . आधुनिक नारी का प्रतिनिधित्व करती है।अंतर्द्वन्द्व जैसे मनोविकारों ,विद्रोह ,कुंठा ,अंह ,जो क्रोध, से ग्रसित है। पारिवारिक उपेक्षा तथा पति का व्यवहार उसे इतना मानसिक कष्ट देता है कि से अलग हो जाती है। इसके परिणामस्वरुप उसकी जिंदगी अंजान दिशा आखिर में बह अपने पति जहाँ ,में खो जाती है उसे कोई किनारा नहीं मिलता और वह एक अंजान दिशा में खो जाती है। इस प्रकार अनेक साहित्यकारों ने स्त्री की मनोवैज्ञानिक स्थिति का वर्णन किया है। मन्नु भण्डारी जी की कहानियों के नारी पात्र भी इन्हीं विशेषाताओं सहित चित्रित किए गए हैं। मन्नु जी ने अपनी नारी चरित्रों की सृष्टि उनके बाहरी तथा आंतरिक व्यक्तित्व के यथार्थ चित्रण से ग्रहण किया है। मन्नु भण्डारी जी ने एक जगह लिखा है," लेखकों ने या तो नारी की मूर्ति को अपनी कुंठाओं के अनुसार विकृतियों से तोड़-मरोड़ दिया है या अपनी स्वप्न- नारी की तस्वीर उतारी हैं। वह देवी और दानवी के दो छोरों के बीच टकराती पहली नहीं, हाड-मांस की मानवी भी है, उसे प्राय: एक सिरे नजर अंदाज़ करते रहे हैं।"[2] मन्नु जी के कहने का अर्थ यह है कि लेखक अपनी कुंठाओं और स्वप्नों को नारी के माध्यम से प्रस्तुत करता है। वह नारी के एक ही पक्ष का चित्रण मनोवैज्ञानिक ढंग से करता है जबकि दूसरे पक्ष को नजरअंदाज़ कर देता है। डा. अजय शर्मा ने अपने उपन्यास 'नौ दिशाएं' में नारी के प्रत्येक पक्ष का वर्णन बड़े ही सूक्ष्म तथा मनोवैज्ञानिक ढंग से किया है। एक गृहिणी तथा कामकाजी नारी की मानसिकता का वर्णन उन्होंने आधुनिक सन्दर्भ में किया है, जो कि यथार्थ की अनुभूति कराता है। 'नौ दिशाएं' उपन्यास की प्रमुख पात्रा रजनी हैं, जिसमें अंतर्द्वन्द्व की स्थिति बनी रहती है। यही अंतर्द्वन्द्व उसमें विद्रोह, क्रोध, अंह आदि मनोविकारों को भर देता है। इसके अतिरिक्त उपन्यास की दूसरी महिला पात्र रुकमणि है, जो कि रजनी की सांस है तथा तीसरी पात्र रजनी की स्वंय की अपनी माँ है। प्रत्येक व्यक्ति के सोचने तथा

देखने का दृष्टिकोण अलग होता है। इसी प्रकार इस उपन्यास में भी दोनों महिलाओं की मानसिकता उनके व्यक्तित्त्व को प्रकट करती हैं। डा. अजय शर्मा ने अपने नवीनतम उपन्यास 'नौ दिशाएं' को इस तरह लिखा है, जिनमें उनका कुशल मनोवैज्ञानिक व्यवहार दिखाई देता है। एक नारी की मानसिकता क्या होती है, उसकी क्या-क्या इच्छाएँ होती है, जब उसकी इच्छाओं का गला घोंट दिया जाता है तब उसका मन विरोधाभास से भर जाता है। इन सभी महत्त्वपूर्ण बातों को उन्होंनें मनोविज्ञान के धागे में पिरोकर बड़े ही कलात्मक ढंग से अपने पात्रों के माध्यम से प्रकट किया हैं। नि:संदेह अपनी इस अभिव्यक्ति में वह सफल हुए है। डा. शर्मा की इस मनोवैज्ञानिक कला की प्रशंसा करती हुई हिन्दी की प्रसिद्ध लेखिका चित्रा मुदगल कहती है,"अजय शर्मा का सृजन संसार अपने सहज पाठ में, जटिल सामाजिक विसंगतियों और अंतर्विरोधों की जिन प्रतिकृतियों को सान्द्र संवेदनशील के साथ उकेरने का उपक्रम समाज सापेक्ष सरोकारों और सकारात्मक दृष्टि के संदर्भ में करते है।"[3]

'नौ दिशाएं उपन्यास में अंतर्द्वन्द्व तत्व की अभिव्यक्ति':

अंतर्द्वन्द्व वह अवस्था है, " जिसमें दो या तीन विरोधी प्रेरणाएँ उत्पन्न होती हैं तथा जिनकी एक साथ तृप्ति संभव नहीं होती।"[4] यदि दूसरे शब्दों में देखा जाए तो हम कह सकते है कि जब व्यक्ति असमंजस की स्थिति में होता है। जब दो विरोधी विचारधाराएँ उसे घेर लेती है अर्थात वह एक ऐसे चौराहे पर आकर खड़ा हो जाता है, जहाँ उसे यह पता नहीं चलता कि वह किस ओर मूड़े तब वह अंतर्द्वन्द्व की स्थिति में फंस जाता है। यह चेतन तथा अचेतन दोनों स्तरों पर हो सकता है। चेतन संघर्ष वह है,जो पात्रों के चेतन मन में हो, उसके कारणों से भली प्रकार से परिचित है। अचेतन संघर्ष वह है, जो पात्रों के अचेतन मन में सक्रिय है जिसके कारण से पात्र अनभिज्ञ हैं। अधिकांश अंतर्द्वन्द्व चेतन स्तर पर होते है। फ्रायड के अनुसार," अंतर्द्वन्द्व से ही सारे मनस्ताप पैदा होते है। यह सब द्वन्द्व संवेग की शक्ति पर निर्भर करता है।"[5] 'नौ दिशाएं' उपन्यास की पात्रा रजनी भी अंतर्द्वन्द्व की स्थिति में फंसी रहती है। इसी अंतर्द्वन्द्व की स्थिति के कारण उसका मानसिक असंतुलन बना रहता है। रजनी की मां उसके गुस्से को समझ गई और उसे शांत होने के लिए गुज़ारिश करने लगी। "रजनी मन ही मन अपने जेठ को कोस रही थी कि उसने तो उसकी सारी जिंदगी ही खराब कर दी है।" [6] इस संवाद में रजनी का अंतर्द्वन्द्व दिखाई पडता है। यह अंतर्द्वन्द्व क्रोध के रुप में उसके व्यवहार में भी दिखाई दे रहा है। इसी प्रकार का अंतर्द्वन्द्व लेखिका मन्नू भण्डारी ने अपनी रचना ' एक कमजोर लडकी की कहानी' में भी प्रकट किया है। कहानी की नायिका रुपा अपने प्रेमी के साथ भागने का निश्चय करती है लेकिन अपने पति से प्रेम मिलने के बाद अपने निश्चय से विचलित हो जाती है। इस प्रकार वह दो विरोधी धारणाओं में घिर जाती है तथा अंतर्द्वन्द्व में पड़ जाती है। जब नारी को अपने ससुराल से कोई सम्मान नहीं मिलता, चाहे वह घर का कितना काम क्यों ना करती हो। तव उसकी मानसिकता बदल जाती है। उसमे पलायन की प्रवृति आ जाती है। रजनी में भी पलायन की प्रवति आ जाती है। जब उसे बात-बात पर ताने मिलते हैं तो वह घर से जाने का निश्चय कर लेती है। इसी प्रकार जब वह अपने घर में आ

जाती है तब उसका पति संजीव भी वहाँ आ जाता है और उसे घर जाने के लिए कहता है, लेकिन रजनी उसकी एक नहीं सुनती है। संजीव अपने डाक्टर दोस्त और उसकी पत्नी को समझौते के लिए कहता है। ' दोनो कई तरह की दलीले देकर रजनी को ससुराल के लिए राजी कर लेते हैं।' [7] जब व्यक्ति अपने द्वन्द्व को बाहरी रूप से प्रकट नहीं करता ,उसको अपने भीतर ही रखता है तो उसमें अन्तर्द्वन्द्व की स्थिति बन जाती है। इसी प्रकार रजनी को जब उसकी जेठानी कटु वचन कहती है तो उसके मन में द्वन्द्व की स्थिति बन जाती है। वह कहती है,' उठो महारानी, सुबह के नाश्ते का समय हो गया है।" [8] अपनी जेठानी के व्यंगात्मक वचनों से रजनी को गुस्सा तो बहुत आता है लेकिन वह उसे अपने मन में रखती है, बाहर प्रकट नहीं करती। यही गुस्सा उसके मन मे अंतर्द्वन्द्व को जन्म देता है।

'नौ दिशाएं उपन्यास में ईर्ष्या तत्व की अभिव्यक्ति':

ईर्ष्या मनुष्य की एक स्वभाविक विशेषता है। प्रत्येक मनुष्य में ईर्ष्या का भाव पाया जाता है। जब मनुष्य में ईर्ष्या का संचार अधिक मात्रा में होना शुरू हो जाता है,तब वह साधारण से असाधारण हो जाता है। उसमें मानसिक विकृति उत्पन्न हो जाती है। यदि उसकी मानसिक विकृति को दूर न किया जाए तो वह स्वंय तथा समाज के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकता है। ईर्ष्या एक भावना है और शब्द आम तौर पर विचारों और असुरक्षा की भावना को दर्शाता है। ईर्ष्या क्रोध, आक्रोश, अपर्याप्तता, लाचारी और घृणा के रूप में भावनाओं का एक संयोजन होता है। ईर्ष्या मानवीय रिश्तों में एक विशिष्ट अनुभव है। ईर्ष्या अक्सर विशेष रूप से मजबूत भावनाओं की एक श्रृंखला का रूप होता है और एक सार्वभौमिक मानवीय अनुभव के रूप में निर्माण की जाती है। यह कई कलात्मक कार्यों का विषय रहता है। मनोवैज्ञानिकों ने ईर्ष्या के कई मॉडल का प्रस्ताव किया है। समाजशास्त्रीयों ने दिखाया है कि सांस्कृतिक मान्यता और मूल्य एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जीव कारकों ने पहचान की है कि प्रभाव अनजाने में हो सकता है। धर्मशास्त्रियों ने धार्मिक विचारों की पेशकश की है। ईर्ष्या भावनाओं के कई अलग अलग प्रकार के शामिल एक जटिल भावना है। ईर्ष्या एक आवश्यक भावना है क्योंकि यह सामाजिक बंधनों को बरकरार रखता है। ईर्ष्या के कारण प्यार किया जाता है जो एक के संबंध में सुरक्षा की भावना की कमी के कारण होता है जो भावनात्मक चिंता का एक विशेष रूप है। ईर्ष्या अधिक बच्चों में पाई जाती है गुस्से और डर दोनों के कारण। यह सुरक्षा की भावना की कमी से निकलती है। ईर्ष्या स्नेह के मौजूद न होने के कारण होता है। ईर्ष्यालु बच्चा एक प्यार के साथी के बीच उसकी उसके रिश्ते में असुरक्षित महसूस करता है, और प्यार और स्नेह को खोने का डर होता है। इस कारण संयुक्त परिवार में भाई बहन के बीच, ईर्ष्या सामान्य होता है। व्यस्कों में ईर्ष्या काम के मनोबल और उत्साह की कमी होने के वजह से देखा जाता है। कई लोगों का मानना है कि यह हर दिन का अनुभव है, लेकिन लोग इसके प्रभाव पर कभी ध्यान नहीं देते। ईर्ष्या का सबसे आम धारणा नकारात्मक है। यह अगर गंभीरता से लिया जाता है तो चोट पहुँचा सकता है। ईर्ष्या एक बेहतर

होने का प्रयास करने के लिए प्रेरित कर सकता है। ईर्ष्या एक तटस्थ और अप्रभावी भावना हो सकती है। ईर्ष्या एक ऐसा अनुभव है जो कई लोगों को इसके साथ रखता है। यह उपयोगी हानिकारक या बेकार हो सकता है। बहुत से लोगों को यह भावना गंभीर नहीं लगती। यह झूठ, धोखा, चोरी और अपने साथी आदमी की ओर अन्य हानिकारक कृत्यों प्रदर्शन करने के लिए पुरुषों का नेतृत्व देती है। ईर्ष्या एक आम भावना है लेकिन अभी भी एक मजबूत भावना है। ईर्ष्या एक मानसिक कैंसर है। हम ईर्ष्या महसूस करतें हैं क्योंकि हम मानव हैं और इसलिए भी क्योंकि दुनिया आज लालची लोगों से भरी हुई हैं। ईर्ष्या भावनात्मक रूप से या मानसिक रुप से अलग ढंग से, या तो शारीरिक रूप से मनुष्य को प्रभावित करता है। ईर्ष्या पैदा करने वाले विचारों की पहचान आम-तौर पर आसान होता है। ईर्ष्या ही हमारे जीवन में दुष्ट उपस्थिति को एक तरह से पर ले जा सकता है। ईर्ष्या हमारे नियंत्रण में नहीं है। सच में, यह हर कोई एक बिंदु या किसी अन्य पर अनुभव है कि एक प्राकृतिक, सहज भावना है। ईर्ष्या की भावना के लिए मुख्य कारण अपनी क्षमताओं या कौशल के बारे में संदेह करना है। एक गरीब आत्म छवि होना ईर्ष्या का एक और कारण है। क्या आप बदसूरत लग रही हैं? या आपको लगता है कि सुंदर नहीं हैं, तो संभावना है कि आप ईर्ष्या की भावना का अनुभव कर रहें हो। असुरक्षा की भावना भी ईर्ष्या का कारण होती है। ईर्ष्या मन की एक पूरी तरह नकारात्मक भावन ह। सामान्य और असामान्यईर्ष्या सबसे : अच्छा दो मुख्य श्रेणियों में बांटा जा सकता है। परिवार ईर्ष्या, सहोदर स्पर्द्धा ईर्ष्या के इस प्रकार के एक ट्रेडमार्क विशेषता है। असामान्य ईर्ष्या अक्सर, रुग्ण मानसिक रोग, हो गया हो या चिंतित ईर्ष्या के कारण होता है। ईर्ष्या दो लोगों के एक सामाजिक या व्यक्तिगत संबंधों का हिस्सा है। ईर्ष्या का एक और कारण दोस्ती में असुरक्षा महसूस करना है। लगभग हर दूसरे भावना और रिश्ते समस्या की तरह, ईर्ष्या भारी व्यक्तिगत कारक से प्रभावित है। कुछ लोग दूसरों की तुलना में ईर्ष्या से ग्रस्त हैं। ईर्ष्या हमेशा एक नकारात्मक भावना नहीं है। मगर जब यह भावना कुछ ज्यादा हो जाए तो बेहद विनाशकारी हो जाती है। हिन्दी साहित्यकारों ने ईर्ष्या जैसे मनोविकार को अपने पात्रों के माध्यम से बड़े ही मनोवैज्ञानिक ढंग से व्यक्त किया हैं। मोहन राकेश, मन्नू भण्डारी, शिवानी, इन्दू बाला, जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी, डा. अजय शर्मा के नाम उल्लेखनीय हैं। इन उपन्यासकारों ने अपने लेखन कौशल के आधार पर अपने पात्रों का चित्रण ऐसा किया है कि वह यथार्थ के साथ मेल खाता हैं। मन्नू भण्डारी ने अपनी कहानी ' एक बार और' मे एक ऐसी पात्रा का वर्णन किया है, जो ईर्ष्या की भावना से ग्रसित है। जो इस संवाद से स्पष्ट हो जाता है। सहेली सुषमा कहती है," तू अभी भी समझती हैं कि तू उसे प्यार नहीं प्रेस्टीज है, कुचला हुआ आत्मसम्मान, तुझे कुंज नहीं मिला तो तू अपने को बर्बाद कर भी संभव नहीं होने देगी कि वह मधु को मिले।" [9] इस संवाद को यदि ध्यान से देखा जाए तो यह बात सिद्ध होती है कि सुषमा जो कि विन्नी की सहेली है। बिन्नी की बात को कहती है। वह अपने शब्दो में कहती है कि कुंज यदि तुम्हारा नहीं हुआ तो तू उसे मधु का भी होने नहीं देगी। इस में विन्नी की अपनी सहेली मधु के प्रति ईर्ष्या की भावना दिखाई देती है। डा. अजय शर्मा ने भी अपने बहुचर्चित उपन्यास नौ दिशाए में ईर्ष्या जैसे मनोविकार का वर्णन किया है। इसके साथ उन्होंने इस बात को भी सिद्ध

किया है कि जब ईर्ष्या सीमा से अधिक बढ जाती है तो पारिवारिक रिश्ते टूटने शुरु हो जाते हैं। 'नौ दिशाएं' उपन्यास के छोटे-बड़े सभी स्त्री पात्र ईर्ष्या से ग्रसित हैं जो कि आधुनिक युग का प्रतिनिधित्व करते हैं। उपन्यास की प्रमुख पात्रा रजनी और उसकी सास में ईर्ष्या की मात्रा सीमा से अधिक हैं, जिसके कारण उनमें तर्क-वितर्क होता ही रहता हैं, जो पारिवारिक विखण्डन का कारण बनता हैं।

रुकमणि 'नौ दिशाएं' उपन्यास की गौण पात्रा है। वह उपन्यास के नायक संजीव की मां है तथा रजनी की सास है। रुकमणि में ईर्ष्या के अतिरिक्त क्रोध भी विद्यमान हैं। उसे अपनी बहू रजनी की प्रत्येक बात गलत लगती है चाहे वह सही ही क्यों न हो। जब रजनी की तबीयत खराब हो जाती है तो उसकी सास ईर्ष्या से भरे शब्दों में कहती है,"ड्रामा मत किया कर, तुमने तो अभी एक बच्चा भी नहीं जना।" [10] इस सवांद को यदि देखा जाए तो इसमें ईर्ष्या के अतिरिक्त अंह भी दिखाई दे रहा है। एक स्त्री को कभी भी दूसरी स्त्री से इस प्रकार अनैतिक तौर से बात नहीं करनी चाहिए। रुकमणि की ईर्ष्या तो बढ़ती ही चली जाती है। घर की बड़ी सदस्य होने के नाते उसे चाहिए कि अपने परिवार में सुख शांति रखे लेकिन उसकी ईर्ष्या की भावना उसे ऐसे करने नहीं देती। उसे अपनी बहू रजनी से इतनी ईर्ष्या है कि वह अपने बेटे संजीव को भी उसके विरुद्ध करने के लिए तैयार करती है। निम्नलिखित संवाद इसी बात को दर्शाता है। ' बेटे की बात सुनते मां ने कहा,' वाह बच्चू, तुम भी अपनी बीवी की वकालत पर उतर आए।' [11] एक मां होने के नाते उसे चाहिए कि यदि उसका बेटा अपनी पत्नी की बात का समर्थन करता है। यदि उसकी पत्नी गलत है तो उसे अपनी बुद्धिमत्ता से उसे समझाना चाहिए। इस प्रकार बात को राई का पहाड़ नहीं बना लेना चाहिए।

रुकमणि दोहरे व्यक्तित्व की महिला है। उसे अपनी बहू रजनी से इसलिए ईर्ष्या है क्योंकि रजनी उस से तर्क-वितर्क करने लगती है। वह उस दिन का इंतजार करती रहती है कि कब उसकी बहू कोई गलती करे और उसे उसके विरुद्ध बात करने का मौका मिले। रुकमणि की इसी ईर्ष्या की आग के कारण पारिवारिक विखण्डन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। ईर्ष्या की आग में रुकमणि इतनी अंधी हो चुकी है कि वह चाहती है कि उसकी बहू रजनी खाने पीने की चीजे भी उस से मांग कर खाये। एक दिन रात को रजनी की तबीयत खराब थी। उसने बिना पूछे एक गिलास दूध का पी लिया। लेकिन अगले दिन ही रजनी की सास ने पूरे परिवार को इक्टठा कर के अपनी बहू पर आरोप लगाने शुरु कर दिए। अपने परिवार के सामने वह उच्च स्वर में कहने लगी,'न जाने भगवान ने हमें कैसी औरत से वास्ता डाल दिया है, जो ख़ाने-पीने की चीज़ें भी चुराकर खाती है।' [12] रुकमणि की इस निम्न स्तर की मानसिकता को देख कर कोई भी उसे बुद्धिमान स्त्री नही कह सकता। यदि उसकी बहू रजनी ने एक दूध का गिलास पी भी लिया तो इसमें क्या कयामत आ गई। वह उसकी अपनी बहू है कोई दूसरी स्त्री नहीं। लेकिन रुकमणि मजबूर है क्योंकि इसके पीछे उसकी विकृत मानसिकता और ईर्ष्या की भावना है। रुकमणि है तो रजनी की सास लेकिन कभी सास होने का कर्त्तव्य उसने नही निभाया। जब रजनी की तबीयत अधिक खराब हो जाती है तो

उसका पति संजीव उसे अस्तपताल में ले जाता है। अस्तपताल में रजनी के मायके वाले भी आ जाते हैं। अपनी बहू की सेवा न करनी पड़े तो उस समय रुकमणि सबके सामने कहती है,'बहन जी आप इस हालत मे इसे अपने साथ ही ले जाइए, क्योंकि ऐसी हालत में माँ के बिना बेटी का दर्द कौन समझ सकता है?' [13] यह संवाद इस बात को स्पष्ट करता है कि रुकमणि में बिल्ल्कुल भी ममता नहीं है। यदि उसमें थोडी बहुत भी ममता होती तो शायद वह कभी भी ऐसी बात ना कहती। इसके अतिरिक्त उसके कहे गए यह शब्द 'मा के अलावा बेटी का दर्द कौन समझ सकता है?' उस पर लांछन लगाने के लिए पर्याप्त है। क्या रजनी उसकी बेटी नहीं है? क्या रजनी उसको मां कहकर नहीं पुकारती? यह सभी बाते रुकमणि के निम्नस्तर के व्यक्तित्व और उसकी रुग्न मानसिकता को दर्शाती है।

रजनी 'नौ दिशाएं 'उपन्यास की प्रमुख पात्रा है। वह संजीव की पत्नी है और रुकमणि की बहू है। रजनी आधुनिक युग की स्त्री का प्रतिनिधित्व करती है। सहनशीलता का उसमें आभाव है, जिसके कारण उसमें क्रोध, ईर्ष्या जैसे मनोविकारों की प्रधानता हैं। रजनी का अपने पति और अपनी सास से तर्क-वितर्क चलता है। घर में इस प्रकार की परिस्थितियाँ बन गई है कि घर का प्रत्येक सदस्य रजनी के व्यवहार से आहत है और रजनी घर के सदस्यो से दुखी हैं। रजनी का अपनी सास रुकमणि से बहुत बार झगडा होता रहता है। रजनी को अपनी सास की किसी बात पर क्रोध आ जाता है तो वह कहती है[14] इस संवाद में रजनी का क्रोध और ईर्ष्या का भाव दिखाई दे रहा है। रजनी अपनी ईर्ष्या की अग्नि मे यह भी भूल जाती है कि किस तरह वह अपनी सास से बात कर रही है। इसके अतिरिक्त घर का कोई भी सदस्य हो,चाहे उसका पति संजीव ही क्यों ना हो, प्रत्येक को रजनी की ईर्ष्या की आग में जलना पड़ता है। अपनी ईर्ष्या और क्रोध के कारण रजनी इस हद तक चली जाती है, जो उसके संजीव को कहे गए शब्दों से स्पष्ट हो जाता है। रजनी अपने पति संजीव को कहती है,' जिस दिन मैं सोच लूंगी कि मुझे कोई दूसरा मर्द करना है, तो उसी दिन कर लूंगी। एक विवाहित स्त्री को इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग कदापि नहीं करना चाहिए। रजनी ने अपनी ईर्ष्या की आग में अन्धी होकर स्त्री-पुरुष के पवित्र बन्धन का अपमान किया है। लेकिन ईर्ष्या और क्रोध की आग इन्सान की बुद्धि को नष्ट कर देती है। जब व्यक्ति में ईर्ष्या जैसे मनोविकार का प्रवेश होता है तो इसके साथ-साथ अन्य मनोविकार जैसे संदेंह, क्रोध आदि मनोविकार भी उत्पन्न होने लगते हैं, जो व्यक्ति के पतन का कारण बनते है। रजनी का भी अपने पति संजीव पर सीमा से अधिक संदेंह करना उनके दाम्पत्य जीवन को नष्ट करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। रजनी द्वारा अपने पति को कहे गए यह शब्द 'मैं तुम्हें खुले आम कहती हूँ , जाओ अपनी भाभी के पास' [15] दाम्पत्य जीवन को एक ऐसी दिशा की तरफ मोड़ देते है, जहाँ व्यक्ति को कुछ हासिल नहीं होता। पति-पत्नी में प्रेम का होना अति आवश्यक है। प्रेम के बिना तो जीवन नहीं जीया जा सकता है। दाम्पत्य जीवन में ईर्ष्या जैस अवगुण का होना इस पवित्र रिश्ते को नरक में धकेलने के समान है। राम और सीता आज मनुष्य के लिए क्यों आदर्श है क्योंकि उनका रिश्ता प्रेम, सहनशीलता पर आधारित था।

'नौ दिशाएं उपन्यास में अहं: तत्व की अभिव्यक्ति':

प्रत्येक व्यक्ति में अहं का भाव पाया जाता है। कुछ व्यक्तियों में अहं कम होता है तथा कुछ व्यक्तियों में अहं की मात्रा अधिक होती है। 'अहंकार से मनुष्य की बुद्धि नष्ट हो जाती है। अहंकार से ज्ञान का नाश हो जाता है।'[16] अहंकार होने से मनुष्य के सब काम बिगड़ जाते है।अहं को अग्रेंजी भाषा में Ego, Pride आदि नामों से पुकारा जाता है। जब- जब व्यक्ति में अहं का भाव जाग्रत होता है तब-तब उसकी बुद्धि नष्ट हो जाती है। अहं के आने से मनुष्य में सहनशीलता, प्रेम, धैर्य आदि सदगुणों का आलोप हो जाता हैं। अहं को अहंकार, घमण्ड आदि नामों से भी जाना जाता हैं। अहंकार का अर्थ होता हैं = मैं का होना। 'अहंकार को इस प्रकार से समझा जा सकता है 'अहं = अहंकार = कार +'मैं का होना " = द्वैत भाव अद्वैत = भाव की अस्वीकारता मैं हूँ =।' [17] जब व्यक्ति मैं में होता है तो वह दूसरे की सत्ता को स्वीकार नहीं करता। दूसरे शब्दों में हम कह सकते है कि परमात्मा की सत्ता को अस्वीकार करना। अहं ही व्यक्ति के पतन का कारण बनता है। इतिहास इस बात का साक्षी रहा है जब-जब व्यक्ति ने अहं किया है तब-तब उसका पतन निश्चित ही हुआ है। उदाहरणस्वरुप रावण जैसा महान विद्वान भी अपने अहं के कारण मृत्यु को प्राप्त हुआ। दर्पण जल और स्फाटक में प्रकाशित सूर्य का प्रतिबिम्ब सभी ने देखा है। इस सत्य भी कोई अनभिज्ञ नहीं है कि सूर्य के प्रतिबिम्ब का अस्तित्व सूर्य का कारण ही दिखलाई देता है। वस्तुतः प्रतिबिम्ब का अपना कोई अस्तित्व नहीं है अब ऐसी दशा में प्रतिबिम्ब अपने को सूर्य मान बैठे तो यह उसकी भूल ही होगी। जीवात्मा का भी अपना अस्तित्व कुछ नहीं है। वह भी शरीर रूपी दर्पण में परमात्मा का प्रतिबिम्ब मात्र है। यदि मनुष्य स्वतः अपने अस्तित्व को अपनी विशेषता मान बैठे तो यह उसकी भी मूल होगी। किन्तु खेद है कि अज्ञान के कारण मनुष्य यह भूल करता है। उसे समझना तो यह चाहिए कि उसके अंतःकरण में जो परमात्म नाम का तत्व विराजमान है, उसी की विद्यमानता शरीर में चेतना उत्पन्न करती है, जिसके बल पर मनुष्य सारे विचार और व्यवहार करता है। परमात्म जब अपनी इस चेतना को अंतर्हित कर लेता है, तब यह चलता फिरता चेतन शरीर जड़ होकर मिट्टी बन जाता है। किन्तु मनुष्य सोचता यह है कि उसका शरीर अपना है, उसको चेतना अपनी है, अपनी सत्ता से ही वह सारे कार्य व्यवहार करता है। यह मनुष्य का मिथ्या अहंकार है। अहंकार और लोभ एक दूसरे के अभिन्न साथी है। जहाँ एक होगा, वहाँ दूसरे का होना अनिवार्य है। अहं के दोष से मनुष्य का लोभ इस सीमा तक बढ़ जाता है कि वह संसार की प्रत्येक वस्तु पर एकाधिकार चाहने लगता है। उसकी अधिकार लिप्सा असीमित हो जाती है। वह संसार के सूक्ष्म साधनोँ का लाभ केवल स्वयं ही उठाना चाहता है, किसी को उसमें भागीदार होते नहीं देख सकता। यदि कोई अपने गुणों, परिश्रम और पुरुषार्थ से उन्नति, विकास करता भी है तो अहंकारी को ऐसा आभास होता है, जैसे वह उन्नति शील व्यक्ति उसके अधिकार में हस्तक्षेप कर रहा है। उसकी सम्पत्ति और साधनों का भागीदार बन रहा है। और इस मति दोष के कारण वह बड़ा असहनशील हो उठता है। यदि शक्ति होती है तो वह उस बढ़ते हुए व्यक्ति को

गिराने मिटाने का प्रयत्न करता है, नहीं तो जल-भुनकर मन ही मन कुढ़ता रहता है। इन दोनों अवस्थाओं में अहंकारी व्यक्ति अपनी ही हानि किया करता है। दूसरे को पीछे खींचने और धकेलने वाला कब तक क्षमा किया जा सकता है। एक दिन लोग उसके इस अपराध के विरोध में खड़े हो जाते है और उसके अहंकार को चूर चूर करके ही दम लेते है। 'जैसा कि दुर्योधन, कंस, शिशुपाल, हिटलर, नैपोलियन आदि आततायियों के विषय में लोगों ने किया। इन अनुचित लोगों को अहंकार बढ़ता गया, अधिकार, विस्तार और आधिपत्य की भावना बलवती हो गई। समाज पहले तो सद्भावनापूर्ण सहन करता रहा, किन्तु जब सहनशीलता की सीमा खत्म हो गई, समाज उठा और उन शक्तिमत अहंकारियों को शीघ्र ही धूल में मिलाकर सदा सर्वदा के लिए मिटा डाला।' [18] निर्बल अहंकारी जो समाज का कुछ बिगाड़ नहीं पाता अपने मन में ही जलता भुनता और क्षोभ करता रहता है। अपना हृदय जलाता, शक्ति नष्ट करता और आत्मा के बंधन दृढ़ करता हुआ लोक परलोक नष्ट करता रहता है। जीवन में शाँति तो उसके लिए दुर्लभ हो ही जाती है, परलोक में भी लोक के अनुरूप नरक भोगा करता है और पुनर्जन्म में अन्य योनियों का अधिकारी बनकर युग युग तक दण्ड भोगा करता है। एक अहंकार दोष के कारण मनुष्य को ऐसी कौन सी यातना है जो भोगनी नहीं पड़ती। अहंकार में अकल्याण ही अकल्याण है उससे किसी प्रकार के श्रेय की आशा नहीं की जा सकती। इस विषधर से जितना बचा जा सकें उतना ही मंगल है।

अकारण अहंकार करने वाले व्यक्ति तो एक प्रकार से अभागे ही होते है। व्यक्तियों का अहंकार न केवल विकार ही होता है, बल्कि वह एक रोग भी होता है, जो जीवन के विकास पर धरना देकर बैठ जाता है सारी प्रगतियों के द्वार बन्द कर देता है। इसी प्रकार के निस्तार अहंकारी प्रायः अपराधी बन जाया करते है। प्रगति तो उनकी अपने इस रोग के कारण नहीं होती है और दोश ये समाज के मत्थे मड़ा करते हैं। बुद्धि भ्रम के कारण क्रोध करते हैं और संघर्ष उत्पन्न कर उसमें फँस जाते है। ऐसे अहंकारियों की कामनायें बड़ी चढ़ी होती हैँ, उनकी पूर्ति की क्षमता होती नहीं, वही निदान अपराध पथ पर बढ़ जाया करते है। अकारण अहंकार करने वाला व्यक्ति अपनी जितनी हानि किया करता है, उतनी शायद एक पागल व्यक्ति भी नहीं करता। जब व्यक्ति अहंकार को ग्रहण करता है, तब उसका भविष्य तो भयानक बनता ही है, वर्तमान भी ध्वस्त हो जाता है। इस दोष के कारण समाज का असहयोग होते ही सारे रास्ते बन्द हो जाते है। सम्पत्ति निकम्मी होकर पड़ी रहती है, किसी काम नहीं आती। सम्पत्ति की सक्रियता भी तो समाज के सहयोग पर ही निर्भर रहती है। जब समाज का सहयोग ही उठ जायेगा तो सम्पत्ति ही क्या काम बना सकती है? जीवन में आयात का मार्ग बन्द होते ही निर्यात आरम्भ हो जाता है, ऐसा नियम है। निदान धीरे धीरे सारी सम्पत्ति निकल जाती है। इस प्रकार वर्षों का संचय किया हुआ, अतीत का फल भी नष्ट हो जाता है। साधन सम्पन्न का पतन होते ही समाज में उसकी असहनीय अप्रतिष्ठा होने लगती है। लोग पहले जितना उसका मान सम्मान और आदर सत्कार किया करते थे, उसी अनुपात से अवमानना करने लगते है। आदर पाकर अपमान मिलने पर कितनी पीड़ा कितना दुख और कितना

आत्म संताप मिलता होगा, इसको तो कोई भुक्त भोगी ही जान सकता है। अहंकार भयानक शत्रु के समान होता है। इससे क्या रिक्त और क्या सम्पन्न सभी व्यक्तियों को सावधान रहना चाहिए। यह जिसको अपने वश में कर लेता है, उसे सदा के लिए नष्ट कर डालता है।

हिन्दी साहित्य-जगत में ऐसे बहुत से साहित्यकार हुए हैं, जिन्होनें अपने साहित्य में अहं को बहुत महत्त्व दिया है। जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी, अज्ञेय, मन्नू भण्डारी, मोहन राकेश, मैत्रेयी पुष्पा, जगदीश चन्द्र माथुर, शिवानी, प्रेमचन्द आदि ऐसे साहित्यकार है जिनके पात्र अहं से ग्रसित होने के कारण असामान्य मनोविज्ञान को प्रर्दशित करते है। जोशी जी के अधिकांश पात्र अहं से पीड़ित असामान्य व्यक्तितत्व के होते है। 'विवेचना' नामक निबन्ध संग्रह में जोशी जी ने अपने असामान्य पात्रों की सजृन प्ररेणा पर ज्यों लिखा है- " मेरे सभी उपन्यासो का प्रधान उद्देश्य व्यक्ति की अहं भाव की एकान्तिकता पर निर्भय होकर प्रहार करने का रहा है। ' घृणामयी, 'सन्यासी, "पर्दे की रानी", 'प्रेत और छाया', 'निर्वासित' इन पांचों उपन्यासों मे मैने इसी दृष्टिकोण को अपनाया है।'[19] आधुनिक समाज मे पुरूष की बौद्धिकता ज्यों- ज्यों बढती चली जा रही है त्यों त्यों उसका अहंभाव तीव्र से तीव्र और व्यापक से व्यापक रूप ग्रहण करता जा रहा है। अपने इसी तृप्त ना होने वाले अहंभाव की अस्वाभाविक पूर्ति की चेष्टा में जब उसे पग-पग पर स्वाभाविक असफलता मिलती है, तो बह बौखला उठता है और उसी बौखलाहट की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप वह आत्मविनाश से पहले अपने आस पास के संसार के विनाश की योजना में जुट जाता है। नन्दकिशोर(सन्यासी), इन्द्रमोहन(पर्दे की रानी), पारसनाथ (प्रेत और छाया), महीप (निर्वासित), नृपेन्द्र रजंन(जिप्सी) आदि ऐसे ही अहं पीडित असामान्य आचरण के चरित्र हैं। नायक पात्रों के अतिरिक्त लज्जा (लज्जा), निरजंना(पर्दे की रानी), नीलिमा (निर्वासित) आदि प्रमुख स्त्री पात्रों में भी अहं की प्रबलता दिखाई पडती है। इसके अतिरिक्त हिन्दी की प्रसिद्ध लेखिका मन्नू भण्डारी की कहानियों के अधिकतर पात्र जिनमें स्त्री पात्रों की संख्या अधिक है अहं से ग्रसित हैं।मन्नू जी की कहानियाँ 'एक कमजोर लड़की', 'एखाने आकाश नाई', ' बंद दरवाजों का साथ',' बाँहों का घेरा', ' घुटन', 'कील और कसक',' यही सच है',' सजा' आदि कहानियों में उन्होंने नारी के अहं को अपने पात्रों के माध्यम से बहुत ही सशक्त दंग से अभिव्यक्त किया है। डा. अजय शर्मा ने भी अपने उपन्यास 'नौ दिशाएं' में अहं जैसे मनोविकार को अपने पात्रों के द्वारा बहुत कलात्मक ढंग से प्रकट किया है। डा. अजय शर्मा की मनोवैज्ञानिक लेखनी की प्रशंसा करती हुई डा नीरू कहती है," डा. शर्मा की औपन्यासिक यात्रा यशपाल, अश्क, मोहन राकेश, गुरुदत्त की परंपरा की सशक्त- ध्वजवाहक है।" [20] डा. नीरू का कहना है कि जो काम मोहन राकेश, गुरुदत्त, यशपाल तथा हिन्दी के अन्य लेखको ने किया है। डा. शर्मा ने उस काम को उच्च स्तर पर पँहुचाया है अर्थात उन्होने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया हैं।

रुकमणि 'नौ दिशाएं' उपन्यास की गौण पात्रा है। वह उपन्यास के नायक संजीव की मां है तथा रजनी की सास है। रूकमणि घर की सबसे बड़ी सदस्य है, लेकिन उसमें बड़ो जैसा कोई भी गुण विद्यमान नहीं है। अपने अहं के कारण ही उसका घर टूट जाता है। अपनी बहू रजनी से तर्क – वितर्क करने से वह कभी पीछे नहीं हटती। जिसके परिणामस्वरुप दोनों ही मानसिक रूप से परेशान रहती हैं। शास्त्रों में कहा गया है कि सहनशीलता व्यक्ति का आभूषण है और एक नारी में

धैर्य पुरुष से अधिक होता है, लेकिन रूकमणि में सब कुछ उल्ट है। वह कभी भी यह सहन नहीं करती कि कोई दूसरा उसके सामने बोले चाहे वह सही ही क्यों न हो। अपने अहं के कारण उसमें दया की भावना का भी लोप हो गया है। अपनी बहू की तबीयत खराब होने पर वह उसे ढांढस देने की बजाए उल्टा उसे अहं से भरे शब्दों में कहती है,"ड्रामा मत किया कर, तुमने तो अभी एक बच्चा भी नहीं जना।" [21] रूकमणि अपने अहं के कारण इतनी अंधी हो जाती है उसे यह भी पता नहीं चलता कि जिस को वह कटु वचन बोल रही है, वह उसकी अपनी बहू है अर्थात अपनी बेटी है। जब व्यक्ति में अहं का प्रसार होता है तो साथ ही अन्य मनोविकार भी व्यक्ति में प्रवेश करने लगते है। जिस से उसे अपने और पराए की समझ नहीं रहती। उसकी बुद्धि नष्ट हो जाती है। यही हाल इस समय रूकमणि का था। अहं के प्रभाव में जब कोई भी व्यक्ति आता है चाहे वह पुरुष है या स्त्री उसमें लालच, स्वार्थीपन अपने आप ही आ जाता है। एक औरत दूसरी औरत की किस तरह दुश्मन बन जाती है। यह हम रूकमणि के चरित्र से भली भांति समझ सकते है। अपने बेटे को अपनी ही बहू के विरुद्ध करने के लिए वह कहती है," बेटा रात को तुम्हारी बीवी चोरी-चुपके से दूध पीती है, वह भी रूह अफ़ज़ा डालकर।" [22] यदि रूकमणि की बात का गहन अध्ययन किया जाए तो इस से एक बात सामने यह आती है कि एक तो उसकी बहू बीमार है और यदि उसने दूध पी भी लिया तो इससे क्या हो गया। लेकिन यदि मनोज्ञानिक नजरिए से देखा जाए तो यह बात सामने आती है कि एक अहंवादी व्यक्ति यह कभी नहीं चाहेगा कि दूसरा व्यक्ति उससे बिना पूछे, उसकी कोई भी वस्तु का प्रयोग करे। यही दशा रूकमणि की थी। रूकमणि एक मां है और एक मा को चाही यदि कोई गलती करता है तो उसे उचित मार्ग दिखाए, लेकिन अपने अहं के वश में होने के कारण रूकमणि स्वयं ही अनुचित मार्ग पर चल रही है। वह दूसरों को सही रास्ता कहाँ से दिखाई गी। जब उसने देखा कि उसका बेटा संजीव अपनी बीवी की बात का समर्थन कर रहा है तो रूकमणि तिलमिला उठती है और अपने बेटे के कान भरते हुए कहती है," वाह बच्चू, तुम भी अपनी बीवी की वकालत पर उतर आए।" [23] जब व्यक्ति की सोच पर अहं का प्रभाव पड़ जाता है तो वह अपनी बात को सिद्ध और सही करने के लिए किसी भी हद तक जा सकता है। रूकमणि ने भी अपनी बात को सही ठहराने के लिए झुठ का सहार लिया। जब मनुष्य में मैं शब्द का प्रसार अधिक मात्रा में होने लगता है तो वह किसी की भी बात को सुनने को तैयार नहीं होता। वह सिर्फ अपनी बात को ही सर्वोपरि मानता है। रूकमणि और रजनी में किसी बात को लेकर तर्क-वितर्क होने लगता है। रजनी कहती है कि यदि डाक्टर नहीं होता तो मैं कभी भी इस घर में नहीं आती। डाक्टर के कहने पर ही मै इस घर में आई हूँ। रूकमणि यह सुनते ही भड़क जाती है और कहती है," याद रखना डाक्टर हमारे रिश्ते है, तुम्हारे नहीं। जरूरत पड़ी तो वह हमारा साथ देगा, तुम्हारा नहीं।" [24] इस संवाद रुकमणि की अहंवादी प्रवृति प्रकट हो रही है। एक अहं से प्रभावित व्यक्ति यह कभी सहन नहीं कर पाएगा कि उसका जान पहचान वाला उसके दुश्मन का साथ दे।

रजनी मुख पात्रा है। वह संजीव की पत्नी है और रुकमणि की बहू है। उपन्यास की प्र' नौ दिशाएं' रजनी आधुनिक युग की स्त्री का प्रतिनिधित्व करतीहै। सहनशीलता तथा धैर्य का उसमें आभाव हैईर्ष्या जैसे मनोविकारों की प्रधानता हैं। रजनी का अपने पति ,क्रोध ,जिसके कारण उसमें अहं , वितर्क चलता हैं। अपने अहं के कारण ही पहले वह अपने परिवार से -और अपनी सास से तर्क अलग हो जाती है। लेकिन अपने अहं की अधिक संतुष्टि के लिए अतं में वह अपने पति संजीव को

भी छोड़ देती है। रजनी यह खुद अनुभव करती है कि उसमें अहं की मात्रा अधिक है। उसके द्वारा कहे गए यह शब्द ",एक बार सारी ईगो बाहर निकाल कर जीरो होकर उस घर में प्रवेश करेगी। " [25] उसकी बात का समर्थन करते है। शास्त्रों में स्त्री को सहनशील तथा दया की मूर्ति बताया गया है। लेकिन उपन्यास में रजनी एक आधुनिक महिला के रुप में पाठकों के सामने आती है। उसमें क्रोधसे मनोविकार है। जिसके कारण वह उसी प्रकार का आचरण करती है। अभिमान जै ,ईर्ष्या , रजनी अपने अहं के कारण परिवार कि किसी भी सद्स्य के सामने नहीं झुकती। उसका अपनी सास से बहुत बार झगडा होता है। यह झगडे की नींव अहं में है। रजनी को अपनी सास रूकमणि की किसी बात पर गुस्सा आ जाता है और उसका अहं क्रोध में परिवर्तित हो जाता है। वह अपनी सास को कहती है ",सारा दिन घर में बैठकर खाने और खाट तोड़ने के सिवा काम ही क्या हैं।[26] रजनी जब यह शब्द अपनी सास को कहती है तो उसे विल्लकुल भी लज्जा का अनुभव नहीं होता। उसकी सास एक तो उमर से उस से बड़ी हैउसकी मां दूसरा वह , के समान है। लेकिन जब मनुष्य पर अभिमान सवार हो जाता है तो व्यक्ति छोटा बड़ा -नहीं देखता। विवेक व्यक्ति को सोचने समझने तथा उचित निर्णय लेने की शक्ति प्रदान करता है। लेकिन जब मनुष्य मैं करने लगता है अर्थात घमण्ड का वस्त्र धारण कर लेता है तो वही व्यक्ति विवेकहीन हो जाता है। रजनी की भी यही स्थिति थी। जब रजनी के अहं को चोट लगती है तो वह तिलमिला उठती है और कहती है ", यह संस्कारों का भाषण मुझे मत दीजिए कि संस्कार किस चिड़िया का नाम है "?[27] अहंवादी मनुष्य कभी भी यह नहीं चाहेगा कि कोई दूसरा उसे शिक्षा दे। सहनशीलता विन्र ,धैर्य ,प्रेम ,मता वह सदगुण है जो मनुष्य को देवता बना देते है। लेकिन यदि व्यक्ति में इन गुणों का अभाव हो जाए तो मनुष्य दैत्य बन जाता हैं। रजनी की अपनी सास से लेकर अपने पति संजीव तक तर्क-वितर्क होता रहता है। सहनशीलता के अभाव के कारण वह अपने पति से भी अलग हो जाती है। शास्त्रो मे कहा गया है कि पति की सेवा करना पत्नी का कर्त्तव्य है। लेकिन जिस स्त्री में धैर्य, प्रेम का अभाव है उसका व्यवहार निम्न स्तर का होगा। रजनी अपनी पति संजीव का आदर तो क्या उस से ठीक ढंग से बात भी नहीं करती। रजनी द्वारा अपने पति को कहे गए यह शब्द," ज्यादा बक-बक करने की ज़रूरत नहीं है।" [28] उसकी घटिया मानसिकता तथा उसके निम्न स्तर के नैतिक आचरण को प्रस्तुत करते हैं। एक भारतीय नारी की पहचान उसके नैतिक व्यवहार से होती है। लेकिन रजनी ने भारतीय नारी की छबि को धूमिल करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। अन्धा व्यक्ति भी देख सकता है लेकिन अंह से ग्रसित व्यक्ति आखों के वावजूद भी नही देख सकता। अभिमानी व्यक्ति यह कभी नहीं चाहेगा किसी दूसरे से उसकी तुलना की जाए। क्योंकि वह अपने आप को सब में कुशल मानता है। यही हाल रजनी का था। उसे भी कदापि यह पसंद नहीं था कि उसका पति संजीव अपनी भाभी की तारीफ करे। अपनी ननद की तारीफ सुनकर रजनी के अहं पर गहरी चोट लगती है और वह अपने पति से कहती है जाओ अपनी भाभी के पास। वही तुम्हें मालपूए बनाकर खिलाएगी। मुझे तो कुछ बनाना नहीं आता। इतना कहने पर भी जब उसके अहं की अग्नि शांत नहीं होती तो वह उच्च स्वर में कहती है," अरे उसकी औकात ही क्या है? मेरी जूती के बराबर भी नहीं है।" [29] आधुनिकता आने से स्त्री स्वतंत्र हो गई है। इसके साथ- साथ शिक्षा के प्रसार ने उसे और भी स्वतंत्र कर दिया है। उसे आज अपने अधिकारों की पहचान है। शिक्षा तो

मनुष्य को एक नैतिक मार्ग दिखाती है। उसमे धैर्य, विश्वास, सहनशीलता आदि गुणों का विकास करती है। लेकिन कुछ लोग ऐसे होते है जो अपने अहं के लिए शिक्षा को माध्यम बनाते हैं। जो सर्वदा गल्त है। रजनी भी पढी लिखी है। वह जानती है कि एक औरत के क्या-क्या अधिकार होते है। शिक्षा को अपने अहं का माध्यम बनाती हुई वह संजीव से कहती है," गांव की गंवार औरत नहीं हूं, जो तुम्हारे पावं की जूती बनकर रहूंगी। दहेज के केस में सबकों जेल की सलाखों के पीछे नहीं किया वर्ना सब लोग वहां बैठकर चक्की पीस रहे होते।" [30] रजनी शिक्षित नारी है। लेकिन अहं का प्रभाव होने के कारण वह अपने अधिकारों का प्रयोग नकारात्मक दिशा में कर रही है। पति-पत्नी में किसी एक का सहनशील होना अतिआवश्यक है। तभी दाम्पत्य जीवन चल पाएगा। लेकिन यहाँ सब कुछ उल्ट है। संजीव कभी एक पल के लिए चुप हो भी जाता है लेकिन रजनी का अहं उसे चुप होने नहीं देता। रजनी जब आवेग में आती है तो ऐसा लगता है कि वह स्वंय नहीं बोल रही उसका अहं बोल रहा है। रजनी अपने पति से कहती है," अरे जा, यह धमकी किसी ओर को देना।" [31] एक नारी कभी भी अपने पति से इस प्रकार से बात नही करती। लेकिन जिस स्त्री में अहं की प्रधानता है। वह इस की परवाह नहीं करती और अपने अहं की संतुष्टि करती है। ईगो के कारण ही व्यक्ति दूसरे को नीचा दिखाता है। अपने आप को सिद्ध करने के लिए वह अपशब्द बोलता है, नकारात्मक कार्यों की सहायता लेता हैं। दाम्पत्य जीवन में प्रेम का होना अति आवश्यक है। खेद की बात है कि जिस स्त्री-पुरुष में अहं की प्रधानता है। वहाँ दाम्पत्य जीवन नष्ट हो जाता है। अपने असामान्य व्यवहार के कारण रजनी अपनी जीभा पर नियत्रण नहीं कर पाती तथा अहं से भरे शब्दों से संजीव को कहती है," अगर तुम सोचते हो कि मैं तुम्हें तलाक दे दूंगी, तो तुम बहुत बड़ी गलतफहमी मे जी रहे हो। यहीं मरोगे मेरी चौगट पर, कहीं मरने भी नहीं दूंगी।" [32] जो स्त्री अपनी पति से इस प्रकार का व्यवहार करती है। उसे कदम- कदम पर अपशब्द और धमकियां देती है। उसकी मानसिकता को भली प्रकार से देखा जा सकता है। रजनी और संजीव दोनों पति-पत्नी होने के बावजूद भी एक दूसरे से अलग थे। ये अलगाव की नींव ईगो में थी। डाक्टर भी अंत में रजनी से कहता है," भाभी जी, बुरा मत मानना, जिद्द तो आप दोनों में थी। ईगो से आप दोनो ही भरे हुए थे।" [33] डाक्टर के कहने का अर्थ यह है कि जब तक पति-पत्नी में अहं नष्ट नहीं होता तब तक वह अंजान दिशा में ही भटकते रहगे।

'नौ दिशाएं उपन्यास में क्रोध तत्व की अभिव्यक्ति':

क्रोध करना मनुष्य की स्वाभाविक प्रक्रिया है।लेकिन इससे एक सकारात्मक तरीके से निपटना बहुत महत्वपूर्ण है। अनियंत्रित क्रोध आपके स्वास्थ्य और रिश्तों दोनों पर बुरा प्रभाव डाल सकता है। क्रोध शब्द आते ही माथे पर तनाव से उभर आने वाली लकीरें एकाएक दिमाग के पर्दे पर पदर्शित होने लगती हैं। ना तो क्रोध करने वाला और ना ही उसके सामने वाला इस अवस्था से प्रसन्न होता हैं। ये एक ऐसी अभिव्यक्ति है, जो कोई पसन्द नहीं करता लेकिन ऐसा हो जाता है। इसके नुक्सान से हम सब वाकिफ हैं और इसके प्रभाव से हम सब बचना चाहते हैं। क्रोध

समस्या तब बनता है, जब अकारण हो और किसी पर अकारण ही निकले। ये एक चैन रिएक्शन की तरह पहले आप से फिर आपके पास के लोगों में परिवर्तित होता है। प्रत्येक मानव में क्रोध, लोभ ,अंहकार, काम तथा मोह यह पांच मनोविकार पाए जाते हैं। क्रोध को अंग्रेजी भाषा में Anger कहा जाता है। क्रोध जब सीमा से अधिक वढ़ जाता है तो यह विनाशकारी हो जाता है। शास्त्रों में कहा गया है कि यदि मनुष्य का कोई शत्रु है तो वह क्रोध है। इतिहास इस बात का साक्षी रहा है कि जब-जब व्यक्ति ने क्रोध किया है तब-तब उसका नाश हुआ हैं। रावण, शिशुपाल, कंस, दुर्योधन जैसे महायोद्धा भी अपने क्रोध के कारण ही मृत्यु को प्राप्त हुए। क्रोध मनुष्य के विवेक को विवेकहीन कर देता है। उस की सोचने समझने की शक्ति को क्षीण कर देता है। जब व्यक्ति पर क्रोध का प्रभाव होता है तो वह अपने सारे नैतिक आदर्शो को भूल जाता हैं। क्रोध से मनुष्य की वाणी अपशब्दों से भर जाती है। "क्रोध में की गई गलती का अंत पश्चाताप पर होता है।" [34] क्रोध में आकर व्यक्ति कई बार ऐसी घटना को अंजाम दे देता है। जिस से उसका भविष्य अंधकार मे चला जाता है। बाल्मीकि रामायण में क्रोध जैसे भयकंर मनोविकार के बारे में कहा गया है कि

" क्रोध प्राणहरः शत्रुः क्रोधऽमित्रमुखो रिपुः।

क्रोधोऽसि महातीक्षणः सर्व क्रोधोऽर्षति॥

त्पते यतते चैव यच्च दानं प्रयच्छति।

क्रोधेन सर्व हरति तस्मात क्रोधं विवजयेत्॥" [35]

अर्थात क्रोध प्राण हरण करने वाला शत्रु, क्रोध अमित्र मुखधारी बैरी है -, क्रोध महा तीक्ष्ण तलवार है, क्रोध सब प्रकार से गिराने वाला है, क्रोध तप, संयम, और दान सभी हरण कर लेता है। अतएव, क्रोध को छोड़ देना चाहिए।

एकबार आये हुए क्रोध में कितने सालों के तप और संयम को भस्मीभूत करने की ताकात है ? यदि कोई ऐसा प्रश्न करें, तो जवाब यह है कितप और संयम का - उत्कृष्ट काल है देशोन पूर्व क्रोड वर्ष।इतने दीर्घ कालमें तप और संयम की जो साधना कर सकते हैं, उस साधना को भस्मीभूत करने की ताकत एकबार के आये हुए क्रोध में है। भगवान कृष्ण क्रोध के बारे मे कहते है," क्रोध से मूढता उत्पन्न होती है, मूढता से स्मृति भ्रांत हो जाती है, स्मृति भ्रांत हो जाने से बुद्धि का नाश हो जाता है और बुद्धि का नाश होने पर प्राणी स्वंय नष्ट हो जाता है।"[36] अर्थात कहने का भाव यह है कि क्रोध से मूर्खता जन्म लेती है, मूर्खता स्मृति को भ्रांत कर देती है, जब स्मृति भ्रांत हो जाती है, तब बुद्धि का नाश हो जाता है और मनुष्य नष्ट हो जाता है। मनुष्य चाहे कितना ही विवेकी, पंडित, महात्मा, ज्ञानी हो जब वह क्रोध कर लेता है तो वह मूर्ख बन जाता है। क्रोध के

विषय में अनेक विद्वानों ने अपने विचार प्रकट किए है। जिसको पढ़ने के बाद हमें से ज्ञात हो जायेगा कि क्रोध कितना भयकंर होता है और उसका परिणाम उस से भी भयकंर।

क्रोध की परिभाषाएँ:

1. 'तुम अपने क्रोध के लिए दंड नहीं पाओगे, तुम अपने क्रोध द्वारा दंड पाओगे। गौतम बुद्ध
2. जो मन की पीड़ा को स्पष्ट रूप में नहीं कह सकता, उसी को क्रोध अधिक आता है ।रवीन्द्रनाथ ठाकुर।' [37]

इस प्रकार अनेक महापुरूषों ने अपने अपने दृष्टिकोण के अनुसार क्रोध को परिभाषित किया है। गीता, बाइबिल, कुरान आदि धार्मिक ग्रन्थों में क्रोध को मानव का तथा समाज का शत्रु माना गया है। क्रोध का वर्णन सिर्फ धार्मिक ग्रंथों में ही नहीं बल्कि साहित्य में भी मिलता हैं। हिन्दी साहित्यकारों ने क्रोध जैसे मनोविकार का वर्णन अपने साहित्य के माध्यम से किया हैं। साहित्यकार का मुख्य उद्देश्य समाज का कल्याण होता है। समाज का कल्याण तभी हो सकता है, जब क्रोध जैसे मनोविकार को दूर किया जाए। जगदीश चंद्र ने अपने उपन्यास "धरती धन न अपना" में एक ऐसे पात्र का वर्णन किया है जो क्रोध से भरा हुआ है, जो उसके संवाद द्वारा स्पष्ट हो जाता है।'चौधरी हरनाम सिंह जीतु को क्रोध में आकर कहता है," सच-सच बता दो। नहीं तो सारे मुहल्ले को इसी चौगान पर नंगा लिटाकर जूते लगाऊँगा।"[38] जब व्यक्ति को क्रोध आता है तो वह अपने सारे संस्कार भूल जाता है तथा उसकी वाणी अपशब्दों से भर जाती है। यही हाल चौधरी हरनाम सिंह का था। डा. अजय शर्मा के उपन्यास 'नौ दिशाएं' की पात्रा रजनी भी क्रोध के वश में है। शास्त्रों में स्त्री को सहनशील, विन्रम तथा दया की मूर्ति बताया गया है। लेकिन रजनी में यह सदगुण नहीं है। डा. शर्मा आधुनिक युग के लेखक है। आधुनिकता ने किस प्रकार से मनुष्य में परिवर्तन ला दिया है। आधुनिकता की दौड़ में मनुष्य इतना आगे निकल गया है कि उसे अपने सारे संस्कार ही भूल गए है। 'नौ दिशाए' उपन्यास इसका सशक्त उदाहरण है। डा. शर्मा के बारे में प्रो. रजनीश बहादर सिहं लिखते है," अजय शर्मा शहरी मध्यवर्गीय जीवन को चित्रित करने वाला एक सफल कहानीकार है।" [39] अजय शर्मा की लेखनी में वह अदभूत कला है, जो उनकी कहानियों तथा उपन्यासों में देखने को मिलती है। यदि स्त्री में विन्रमता नहीं है तो वह कभी भी दूसरे की बात को सहन नहीं कर पाएगी। रजनी ने अपने पति संजीव को गुस्से में कहा," तुमसे मैंने मश्वरा नहीं मांगा।" [40] रजनी द्वारा कहे गए यह शब्द इस बात की ओर इशारा करते है कि रजनी एक स्वतंत्र विचारों वाली स्त्री है, लेकिन इस स्वतंत्रता में अह तथा क्रोध का आभास होता हैं जो पति-पत्नी में नफरत को जन्म देता है। क्रोध में मनुष्य अपने सारे संस्कार भूल जाता है। यही हाल रजनी का था। रजनी को जब अपनी सास की बातों पर बहुत क्रोध आ जाता है तो वह आग-बबूला होकर कहती है," यह संस्कारों का भाषण मुझे मत दीजिए कि संस्कार किस चिडिया का नाम हैं? बात तूतू, मैं मैं से शुरू हुई थी, गाली गलोच पर उतर

आई।"[41] यह स्वभाविक है, जब व्यक्ति अपने क्रोध की सीमा पार कर लेता है तो उसकी वाणी विगड़ जाती है और वह छोटा-बडा कुछ नहीं देखता। क्रोध व्यक्ति में अहं को जन्म देता है। क्रोधी व्यक्ति सिर्फ मैं में ही रहता है। सहनशीलता, धैर्य, विन्रमता जैसे सदगुणों के बारे में वह कभी सोच भी नहीं सकता। इसलिए वह किसी के आगे झुकता भी नहीं है चाहे कुछ भी हो जाए। ऐसी ही आदत रजनी में भी थी। क्योंकि वह क्रोध के आवेश में सदैव रहती थी। एक दिन घर में चायपत्ती खत्म हो जाने पर संजीव अपनी पत्नी रजनी को पड़ोसियों से मांग लाने के लिए कहता है। उसी समय अहं से ग्रसित रजनी बहुत ऊंचे स्वर में कहती है," मैं किसी के आगे हाथ फैलाने नहीं जाऊंगी।" [42] पति-पत्नी में तो क्रोध जैसा मनोविकार कदापि नहीं होना चाहिए नहीं तो उनके दाम्पत्य जीवन का विनाश संभव है। सफल दाम्पत्य जीवन का सूत्र यही है कि एक को दूसरे के समक्ष झुकना ही पड़ता है। तभी जिंदगी चल पाएगी। पत्नी को चाहिए कि सारी पुरानी बातों को भूलकर भविष्य की चिंता करे। लेकिन रजनी का क्रोध उसे ऐसा नहीं करने दे रहा था। संजीव सब कुछ भूलकर रजनी को अपनी विवाहिक वर्षगांठ पर कार्ड देता है ताकि उनमें प्रेम बना रहे। लेकिन रजनी अपने अहं तथा क्रोध के कारण संजीव को कहती है," यह उपदेश देने की मुझे कोई ज़रूरत नहीं है। तुम्हारे तो सारे खानदान की यही आदत है।"[43] क्रोध की आग व्यक्ति को पल-पल जलाती है। दूसरा चाहे उसके हित की बात ही क्यों ना कर रहा हो। लेकिन क्रोध की अग्नि में अंधा व्यक्ति स्वयं ही अपना अहित कर बैठता है। क्रोध जब व्यक्ति पर सवार होता है तो व्यक्ति सिर्फ क्रोधित नहीं होता बल्कि संदेह की आदत भी उसमें आ जाती है। जिसके कारण उसका मानसिक संतुलन असंतुलित हो जाता है।

सन्दर्भ

1. www.jagran.com/entertainment, संदीप कुमार, 19 Feb. 2011
2. मन्नू भण्डारी, मेरी प्रिय कहानियों की भूमिका से उद्धत
3. डा. अजय शर्मा, 'नौ दिशाएं',
4. ब्राउन जे, 'एक साइकोडायनेमिक्स ऑफ एबनोर्मल बिहेवियर', पृ. 230
5. डॉ. डी एन श्रीवास्तव, 'फ़्रायड मनोविश्लेषण', पृ. 51
6. डा. अजय शर्मा, 'नौ दिशाएं', पृ. 20
7. डा अजय शर्मा, 'नौ दिशाएं', पृ. 23
8. डा. अजय शर्मा, 'नौ दिशाएं', पृ. 24
9. मन्नू भण्डारी, नायक खलनायक विदूषक (संग्रह), पृ. 325
10. डा. अजय शर्मा, 'नौ दिशाएं', पृ. 9
11. डा. अजय शर्मा, 'नौ दिशाएं', पृ. 11
12. डा. अजय शर्मा, 'नौ दिशाएं', पृ. 12
13. डा. अजय शर्मा, 'नौ दिशाएं', पृ. 20, 21
14. डा. अजय शर्मा, 'नौ दिशाएं', पृ. 27
15. डा. अजय शर्मा, 'नौ दिशाएं', पृ. 38
16. http://hindi.webdunia.com/indian-religion-sant-pravachan, संजीव महेता, 7 Mar.2012
17. https://spiritualvilla.wordpress.com, गुलशन हरभगवान पिपलानी, 7 Feb, 2012
18. http://literature.awgp.org/akhandjyoti/edition,6 Jun, 2004
19. इलाचन्द्र जोशी उपन्यास' सन्यासी', पृ. 266
20. डा. अजय शर्मा, 'नौ दिशाएं',
21. डा. अजय शर्मा, 'नौ दिशाएं', पृ. 9
22. डा. अजय शर्मा, 'नौ दिशाएं', पृ. 11
23. डा. अजय शर्मा, 'नौ दिशाएं', पृ. 11
24. डा. अजय शर्मा, 'नौ दिशाएं', पृ. 26
25. डा. अजय शर्मा, 'नौ दिशाएं', पृ. 25
26. डा. अजय शर्मा, 'नौ दिशाएं', पृ. 10
27. डा. अजय शर्मा, 'नौ दिशाएं', पृ. 27
28. डा. अजय शर्मा, 'नौ दिशाएं', पृ. 37
29. डा. अजय शर्मा, 'नौ दिशाएं', पृ. 38
30. डा. अजय शर्मा, 'नौ दिशाएं', पृ. 62
31. डा. अजय शर्मा, 'नौ दिशाएं', पृ. 62
32. डा. अजय शर्मा, 'नौ दिशाएं', पृ. 62

33. डा. अजय शर्मा, 'नौ दिशाएं', पृ. 90
34. http://www.jagran.com/spiritual, पंडित आचार्य वत्स
35. http://literature.awgp.org/akhandjyoti, 9 May, 1950
36. श्रीमद भगवद गीता, कर्मयोग (अध्याय-3) श्लोक-3
37. http://bharatdiscovery.org/india
38. जगदीश चन्द्र माथुर उपन्यास,' नरक कुण्ड में बास', पृ. 71
39. डा. अजय शर्मा, 'नौ दिशाएं',
40. डा. अजय शर्मा, 'नौ दिशाएं', पृ. 14
41. डा. अजय शर्मा, 'नौ दिशाएं', पृ. 27
42. डा. अजय शर्मा, 'नौ दिशाएं', पृ. 46
43. डा. अजय शर्मा, 'नौ दिशाएं', पृ. 56

अध्याय पांच

डा. अजय शर्मा के उपन्यास 'नौ दिशाएं' में समाज-मनोविज्ञान

समाज-मनोविज्ञान:

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। अपनी विविध आवश्यकताओं के लिए मनुष्य दूसरे व्यक्तियों से, समूहों से, समुदायों से अन्तःक्रियात्मक सम्बन्ध स्थापित करता है। व्यक्ति के व्यवहार एवं समाज में गहरा सम्बन्ध होता है। सदस्यों के बीच आपसी सम्बन्ध उनके परस्पर व्यवहार पर निर्भर करते हैं। मनुष्य के विचारों, व्यवहारों एवं क्रियाओं का प्रभाव एक दूसरे पर पड़ता है। व्यक्ति का व्यवहार सर्वदा एक समान नही होता है। एक ही व्यक्ति कई रूपों में व्यवहार करता हुआ पाया जाता है। उसके विचार, भाव तथा व्यवहार विविध परिस्थितियों में प्रभावित भी होते रहते हैं। स्पष्ट है कि मानव व्यवहार के विविध पक्ष होते हैं। मनुष्य दूसरों के बारे में अलग-अलग तरह से सोचता तथा प्रभावित होता है। सामाजिक मनोविज्ञान व्यक्ति के व्यवहारों का वैज्ञानिक अध्ययन है। ऐतिहासिक रूप से इसके विकास में समाजशास्त्र और मनोविज्ञान दोनों का ही योगदान है। समाज मनोविज्ञान का अर्थ होता है समाज का विज्ञान। जो विज्ञान व्यक्तियों के मनो का अध्ययन करता हैं वह समाज मनोविज्ञान है। समाज मनोविज्ञान मनोविज्ञान की एक महत्वपूर्ण शाखा है, जिसके अंर्तगत व्यक्ति के मानसिक जीवन एवं चरित्र का अध्ययन सामाजिक परिस्थितियों के आधार पर किया जाता है। समाज मनोविज्ञान को अंग्रेजी में (Social Psychology) कहते है। मानव के जन्म से लेकर मृत्यु तक की सब मानसिक प्रकियाएँ एवं प्रवृतियाँ विभिन्न सामाजिक घटकों से प्रभावित रहती है। मनोविज्ञान की तरह ही समाज मनोज्ञान का केन्द्र बिन्दु मानव का जीवन ही है। बिना मानव के मनोविज्ञान का कोई अस्तित्व ही नहीं रह जाता। जहां मानव है वहां मनोविज्ञान तथा जहां मनोविज्ञान है वहां मानव की सत्ता अनिर्वाय है। समाज मनोविज्ञान विशेष रूप से उस मानवीय व्यवहार पर अध्ययन करता है, जो दूसरो को उत्पन्न करता है अथवा दूसरे व्यक्तियों के व्यवहार द्वारा उददीप्त होकर अनुक्रिया के रूप में किया जाता है। समाज मनोविज्ञान व्यक्ति के व्यवहार का विवेचन सामाजिक दशा और मानवीय अन्त: क्रियाओं के संदर्भ में करता है। व्यक्ति के जटिल मानसिक जीवन को सामाजिक पर्यावरण किस प्रकार स्थापित करता है, उसकी आदतो में किस प्रकार के प्रभाव डालता है, इन सभी प्रश्नों का उत्तर समाज मनोविज्ञान ही दे सकता है। इस प्रकार यह वह विज्ञान है,जो समाज में व्यक्ति के व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन करता है। इस तरह समाज में रहने वाले व्यक्ति को समझने का विज्ञान ही वास्तव में समाज मनोज्ञान कहलाता है।

यह विज्ञान व्यक्ति और समाज की पारस्परिक प्रतिक्रियाओं और इनसे प्रभावित व्यक्ति की भावनाओं, संवेगों, अनुभवो और विचारों का विशेष रूप से अनुशीलन रहता है। मनुष्य समाज तथा उसमें मनुष्य की प्रकति व व्यवहार को आधारभूत मानते हुए मनोवैज्ञानिकों ने समाज मनोविज्ञान को अपने अपने ढंगो से परिभाषित किया है।

समाज मनोविज्ञान की परिभाषाएं:

वी.वी अकोलकर के अनुसार," समाज मनोविज्ञान व्यक्ति के सामाजिक पर्यावरण के विशेष संदर्भ में व्यक्ति के मानसक जीवन और व्यवहार का अध्ययन है।" [1] सामाजिक पर्यावरण के विशिष्ट संदर्भ में व्यक्ति के मानसिक जीवन और व्यवहार के अध्ययन को ही वह समाज मनोविज्ञान के नाम से पुकारते है। वातावरण ही व्यक्ति की क्रियाओं, व्यवहारों तथा अनुभवों को प्रभावित करता है।

सामाजिक मनोविज्ञान (Social Psychology) मनोविज्ञान की वह शाखा है, जिसके अन्तर्गत इस तथ्य का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है कि किसी दूसरे व्यक्ति की वास्तविक, काल्पनिक, अथवा प्रच्छन्न उपस्थिति हमारे विचार, संवेग अथवा व्यवहार को किस प्रकार से प्रभावित करती है। " [2]

क्रेच एवं क्रेच के अनुसार,"समाज में व्यक्तियों के व्यवहार के प्रत्येक पहलू से समाज मनोविज्ञान का संबंध है। व्यापक रूप से समाज मनोविज्ञान को समाज मे व्यक्ति के व्यवहार के विज्ञान के रूप में ही स्वीकार करते हैं।" [3]

प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक किम्बल यंग का कहना है कि,"व्यक्ति की अन्तक्रियात्मक प्रक्रियाओं के अध्ययन से समाज मनोविज्ञान का संबंध है।" [4] इस परिभाषा के अनुसार समाज मनोवैज्ञानिक व्यक्तियों के एक-दूसरे के साथ प्रतिक्रिया का अध्ययन करता है।

क्रच और क्रच फील्ड के अनुसार,"समाज मनोविज्ञान की परिभाषा अंतर्वैयक्ति व्यवहार की घटनाओं के विज्ञान के रूप में की जाती है। [5]

इन परिभाषाओं से यह पता चलता है कि समाज मनोविज्ञान ही उन सभी अंत:क्रियाओं का अध्ययन करता है जो मनुष्यों और समूहों के बीच होती है। समाज मनोविज्ञान के बारे में शेरिफ और शेरिफ का मत है," सामाजिक उददीपकों के बारे में व्यक्ति के अनुभवो और व्यवहारों का वैज्ञानिक अध्ययन समाज मनोविज्ञान हैं।" [6]

व्यवहार जो सामाज के संदर्भ में परिलक्षित होता है, समाज मनोविज्ञान के अध्ययन का केन्द्र बिन्दु है।

किंबल यंग के अनुसार व्यक्ति स्वयं दूसरे व्यक्तियों से प्रभावित रहता है तथा उस व्यक्ति को भी प्रभावित करता है। विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों के व्यवहार विभिन्न प्रकार के होते है, क्योंकि हर व्यक्ति की निजी विचारधाराएँ, भावनाएँ, संवेग तथा आदते हैं।

कुप्पुस्वामी इसी बात का समर्थन करते हुए कहते है कि," समाज मनोविज्ञान सामाजिक परिस्थितियों में व्यक्तियों की अन्तक्रियाओं द्वारा उत्पन्न संबंधों का अधययन करता है। संक्षेप में इसका समबन्ध समाज में व्यक्ति के विचारों, भावनाओ तथा कार्यो से है।" [7]

डा. के. एन शर्मा ने भी समाज मनोविज्ञान को परिभाषित करते हुए लिखा है," समाज मनोविज्ञान अपनी विशिष्ट पद्धतियों द्वारा मनुष्य व्यवहार का अध्ययन करता है। इन पद्धतियों का आधार वैज्ञानिक है जो मनुष्य व्यवहारो का व्यक्तिगत वर्णन करता है।" [8] डा. शर्मा की

परिभाषा को यदि ध्यान से देखा जाए तो एक बात सामने आती है कि समाज मनोविज्ञान मनुष्य प्रकति के व्यवहारों का अध्ययन करता है जो मनुष्य को समाज में गतिमान रहने में योगदान देते है।

जितनी भी यहां परिभाषाएं दी है उन सभी में व्यक्ति की समाज के साथ प्रतिक्रिया पर बल दिया है। व्यक्तिगत व्यवहार उस समय, जबकि व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों के साथ प्रतिक्रिया करता है। यह समझने के लिए एक व्यक्ति किसी विशेष सामाजिक परिस्थिति में किस प्रकार का व्यवहार करेगा, इसका अध्ययन आवश्यक है। वही समाज मनोविज्ञान कहलाता है। निष्कर्ष रूप से कह सकते है कि समाज मनोविज्ञान व्यक्ति के व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन है, जब वह दूसरे व्यक्तियों के संपर्क में आता है तो सामाजिक समूहों के साथ प्रतिक्रिया करता है।

सामाजिक मनोविज्ञान की प्रकृति

सामाजिक मनोविज्ञान की प्रकृति वैज्ञानिक है। जब हम किसी भी विषय को वैज्ञानिक कहते हैं, तो उसकी कुछ विशेषताएँ (मूल्य) होती हैं, और उन विशेषताओं के साथ ही साथ उस विषय के अध्ययन के अन्तर्गत विभिन्न विधियाँ होती हैं, जिनका प्रयोग सम्बन्धित विषयों के अध्ययन में किया जाता है रौबर्ट ए. बैरन तथा डॉन बायर्न ने इन विशेषताओं को इस प्रकार बताया है, किसी भी विषय के वैज्ञानिक होने के लिए वे आवश्यक हैं:

1 यथार्थता

2 विषयपरकता

3 संशयवादिता और

4 तटस्थता।

इन चारों को स्पष्ट करते हुए उनका कहना है कि

यथार्थता से अभिप्राय दुनिया (जिसके अन्तर्गत सामाजिक व्यवहार व विचार आता है) के बारे में यथासम्भव सावधानीपूर्वक, स्पष्ट व त्रुटिरहित तरीके से जानकारी हासिल करने एवं मूल्याँकन करने के प्रति वचनबद्धता से है।

विषयपरकता से तात्पर्य यथासम्भव पूर्वाग्रहरहित जानकारी प्राप्त करने एवं मूल्यांकन करने के प्रति वचनबद्धता से है।

संशयवादिता से तात्पर्य तथ्यों का सही रूप में स्वीकार करने के प्रति वचनबद्धता ताकि उसे बार-बार सत्यापित किया जा सके, से है ।

तटस्थता का अभिप्राय अपने दृष्टिकोण, चाहे वो कितना भी दृढ़ हो, को बदलने के प्रति वचनबद्धता से है, यदि मौजूदा साक्ष्य यह बताता है कि ये दृष्टिकोण गलत है। सामाजिक मनोविज्ञान एक विषय के रूप में उपरोक्त मूल्यों से गहन रूप से सम्बद्ध है। विविध विषयों से सम्बन्धित अध्ययनों के लिए इसमें वैज्ञानिक तरीकों को अपनाया जाता है।

इसकी वास्तविक प्रकृति और वैज्ञानिकता की पुष्टि शेरिफ और शेरिफ के इस कथन से होती है कि,''सामाजिक मनोविज्ञान केवल विभिन्न प्रकार की अवधारणाओं को अपना लेने के कारण ही 'सामाजिक' नही हो गया है, अपितु वास्तविकता तो यह है कि सामान्य मनोविज्ञान की प्रामाणिक अवधारणाओं को सामाजिक क्षेत्र में विस्तृत करके या उपयोग में लाकर ही सामाजिक मनोविज्ञान 'सामाजिक' विज्ञान बन पाया है।''[9]

समाज-मनोविज्ञान का इतिहास:

समाज मनोविज्ञान वर्तमान काल की देन जरुर है, फिर भी इसमें कोई संदेह नहीं है कि इसकी जड़े पुरातन काल से ही विधयमान रही है। प्लेटो और अरस्तू उन पाश्चात्य विचारकों में से प्रमुख एवं प्रथम है, जिन्होनें मानव की सामाजिक प्रकति पर प्रकाश डाला। किन्तु समाज मनोविज्ञान का विकास 19 वी शताव्दी के अंत एवं 20 वी शताब्दी के आरम्भ में स्टीन्थल, टारेड, रासँ तथा मैक्डूगल से होता है। मैक्डूगल द्वारा प्रकाशित पुस्तक **" इन्ट्रोडक्शन टु सोशल सायकॉलोजी"** द्वारा समाज मनोविज्ञान के क्षेत्र में एक नये युग का आरम्भ होता है। वर्तमान समय में समाज मनोविज्ञान का विकास प्रयोगात्मक दिशा में हो रहा है। समाज मनोविज्ञान का विषय व्यक्ति और समाज का अध्ययन है। इसी प्रकार समाज मनोविज्ञान की प्रवत्तियों में समय-समय पर परिवर्तन होते रहते है।

समाज-मनोविज्ञान का महत्व:

समाज मनोविज्ञान का महत्व वैश्वीकरण के इस दौर में निरन्तर बढ़ता ही जा रहा है। उदारीकरण, निजीकरण तथा वैश्वीकरण ने जो सामाजिक आर्थिक प्रभाव उत्पन्न किए हैं, उनके परिप्रेक्ष्य में देखा जाये तो हम यह पाते हैं कि सामाजिक मनोविज्ञान उस समस्त परिस्थितियों, घटनाओं एवं समस्याओं का अध्ययन करता है, जो इनके कारण उत्पन्न हुई है। सामाज मनोविज्ञान के महत्व को उसकी अध्ययन वस्तु के आधार पर अलगअलग रूप से प्रस्तुत करके स्पष्ट किया जा - सकता है।

व्यक्ति को समझने में सहायक:

सामाज मनोविज्ञान व्यक्ति के सम्बन्ध में वास्तविक और वैज्ञानिक ज्ञान करवाता है। सामाज मनोविज्ञान के द्वारा ही संस्कृति और व्यक्तित्व में सम्बन्ध, सामाजीकरण, सीखने की प्रक्रिया, सामाजिक व्यवहार, वैयक्तिक विभिन्नताएँ, उद्वेगात्मक व्यवहार, स्मरण शक्ति, प्रत्यक्षीकरण, नेतृत्व क्षमता इत्यादि से सम्बन्धित वास्तविक जानकारी प्राप्त होती है। व्यक्ति से सम्बन्धित अनेकों भ्रान्त धारणाएँ इसके द्वारा समाप्त हो गई। समाज और व्यक्ति के अन्तर्सम्बन्धों तथा अन्तर्निर्भरता को उजागर करके सामाजिक मनोविज्ञान ने यह प्रमाणित कर दिया कि दोनों की पारस्परिक अन्तर्क्रियाओं के आधार पर ही व्यक्ति के व्यवहारों का निर्धारण होता है। समाज विरोधी व्यवहार के सामाजिक तथा मानसिक कारणों को उजागर करके उन व्यक्तियों के उपचार को सामाजिक मनोविज्ञान ने सम्भव बनाया है। वैयक्तिक विघटन से सम्बन्धित विविध पक्षों की

जानकारी भी इसके द्वारा प्राप्त होती है। इतना ही नहीं उपयुक्त सामाजीकरण तथा व्यक्ति और समाज के सम्बन्धों के महत्व को भी सामाजिक मनोविज्ञान ने अभिव्यक्त करके योगदान किया है। सामाजिक मनोविज्ञान व्यक्तित्व के अलगअलग प्रकारों तथा व्यक्ति विशेष के व्यवहार- को समझने में योगदान करता है। अच्छे व्यक्तित्व का विकास कैसे हो, सकारात्मक सोच कैसे आये, जीवन में आयी निराशा तथा कुण्ठा कैसे दूर हो और इन सभी परिस्थितियों के क्या कारण हैं, को सामाजिक मनोविज्ञान द्वारा ही जाना जा सकता है और परिवर्तित किया जा सकता है। तनाव से बचाने में भी इसका योगदान है।

समाज सुधारकों एवं प्रशासकों के लिए:

सामाज मनोविज्ञान के अध्ययन द्वारा समाज सुधारकों को तो लाभ प्राप्त होता ही है, यह प्रशासकों को भी विविध तरह से लाभ पहुँचाता है। समाज में व्याप्त विविध कुरीतियों, बुराईयों, विचलित व्यवहारों एवं आपराधिक गतिविधियों, समस्याओं, सामाजिक तनावों, साम्प्रदायिक दंगों, जातिगत दंगो, वर्ग संघर्षों इत्यादि के कारणों तथा उनको रोकने के उपायों की जानकारी सामाजिक मनोविज्ञान के अध्ययन के द्वारा समाज सुधारकों तथा प्रशासकों को होती है, जिसके द्वारा उन्हें इन समस्याओं को दूर करने में सहायता मिलती है।अक्सर अफवाहों के चलते न केवल सामाजिक तनाव फैल जाता है अपितु कानून और व्यवस्था की गंभीर समस्या पैदा हो जाती है। सामाज मनोविज्ञान का अध्ययन अफवाहों को समझने तथा उसके कारगर उपायों को अपनाने का ज्ञान प्रदान करता है।

समाज मनोविज्ञान का क्षेत्र :

उपर्यक्त विवेचन यह स्पष्ट करता है कि समाज मनोविज्ञान का क्षेत्र अति विशाल है। यह व्यक्ति और समाज दोनों का अध्ययन करता है। जब कोई व्यक्ति अपने आप को किसी दूसरे व्यक्तियों के संपर्क में पाता है या किसी सामाजिक परिस्थिति मे अपने आप को पाता है तो खड़ी होने बाली समस्या समाज मनोविज्ञान के क्षेत्र में आती है।

सामाजीकरण
सामाजिक अन्तक्रिया
सामाजिक मानक
नेतत्व
सामाजिक परिवर्तन

सामाजीकरण:

प्रत्येक शिशु जन्म के समय एक संगठित शारीरिक ढांचा मात्र होता है। वह न तो अपने बारे में जानता है, न ही समाज के बारे में। घर में, समाज में उसे किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए, यह सब उसे घरपरिवार के सदस्यों-, रिश्तेदारोंपरिचितों के आचरण और उनके बताने- से सीखने को मिलता है। इस प्रकार समाज में वह अपनी भूमिका निभाने लायक बनता है। सीखने की यह प्रक्रिया समाज विज्ञान में और मनोविज्ञान में समाजीकरण कहलाती है। वी.वी.अकोलकर के

अनुसार," सामाजीकरण एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यवहार के परंपरागत प्रतिमानों को व्यक्ति ग्रहण करता है।" [10]

सामाजिक अन्त:क्रिया

समाज मनोविज्ञान एक व्यक्ति के अनुभव एवं व्यवहारजो सामाजिक उत्तेजक परिस्थितियों के , का वै ,संबध में होते हैज्ञानिक अध्ययन है। व्यक्ति का संबध उसके वातावरण के साथ किस प्रकार का होता हैइस संबंध मे भी यह प्रकाश डालता है। जब हम व्यक्ति विशेष के व्यवहार का , अध्ययन दूसरे व्यक्तियो के व्यवहार के परिप्रेक्ष्य में करते हैं तो हम सामाजिक अन्तक्रियों पर ही अपना ध्यान केन्द्रित करते है। एक व्यक्ति के अनुभव एंव व्यवहार पर दूसरे व्यक्ति के अनुभवों पर जो प्रभाव पड़ता है उनके अध्ययन पर ही सामाजिक अन्तक्रियों की हमारी अवधारणा निर्भर है। किबल यंग सामाजिक अन्तक्रिया की परिभाषा देते हुए कहते है कि," अन्तक्रिया उस तथ्य की ओर संकेत करती है जिससे एक व्यक्ति का प्रत्युत्तर या उसकी शारीरिक गतिविधियाँ दूसरे के लिए उत्तेजक बनती है और यह दूसरा व्यक्ति अब अपनी वारी में पहले को उचित जवाब देता हैं।" [11]

सामाजिक मानक:

सामाजिक मानकों के द्वारा समाज में व्यक्ति के व्यवहार को नियंत्रित किया जाता है। ये मानक व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करते है। परंपराप्रथा तथा फैशन आदि सामाजिक ,कानून ,रूढि , मानकों के अनेक रूप है।

परंपरा:

परंपरा को हम सामाजिक आनुवंशिकता भी कह सकते है। परंपरा से अभिप्राय उन सभी विचारों , तथा प्रथाअओं से है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को ,व्यवहार की आदतोंहस्तान्तरित होती रहती है। हृदयनारायण दीक्षित लिखते है ",व्यक्ति और समाज अविभाज्य हैंव्यक्ति के सचेत या अचेत . कर्मो के प्रभाव समाज पर पड़ते हैंसामाजिक परंपरा ., बंधन या निषेध के प्रभाव व्यक्ति पर भी पड़ते हैं।"[12] परंपरा के बारे मे पश्चिमी विद्वान ड्रेवर का विचार है ",यह कानूनप्रथा , कहानी , तथा किंवदन्ती का ऐसासंग्रह है जो मौखिक रूप से एक पीढी से दूसरी पीढी को हस्तान्तरित करती है।" [13]

कानून: कानून की सबसे आम परिभाषा आचरण, आम तौर पर सरकारों द्वारा एक व्यक्तियों के अधिकारों की रक्षा करने के लिए, लागू का एक नियम है। कानून या विधि का मतलब है मनुष्य के

व्यवहार को नियंत्रित और संचालित करने वाले नियमों, हिदायतों, पाबंदियों और हकों की संहिता। लेकिन यह भूमिका तो नैतिक, धार्मिक और अन्य सामाजिक संहिताओं की भी होती है। दरअसल, कानून इन संहिताओं से कई मायनों में अलग है। पहली बात तो यह है कि कानून सरकार द्वारा बनाया जाता है लेकिन समाज में उसे सभी के ऊपर समान रूप से लागू किया जाता है। दूसरे, 'राज्य की इच्छा' का रूप ले कर वह अन्य सभी सामाजिक नियमों और मानकों पर प्राथमिकता प्राप्त कर लेता है। तीसरे, कानून अनिवार्य होता है। पालन न करने वाले लोगों के लिए दण्ड की व्यवस्था होती है।" कानून द्वारा व्यक्ति के अधिकारों को सुरक्षित किया जाता है तथा उसके जीवन को जीने योग्य बनाया जाता है।" [14]

नेतृत्व:

नेतृत्व वह व्यवहार है जो अनुयायियों की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली होता है। एक अच्छा नेता समाज को बदल सकता है उसे एक नवीन दिशा दे सकता है। स्मिथ ने नेतृत्व के संबंध में अपने विचार प्रस्तुत किए है। "स्मिथ ने कहा है यदि किसी व्यक्ति के पास सुन्दर -बहुमूल्य घड़ी है और वह सही तरह से काम नही करती है तो वह उसे मामूली घड़ीसाज को सही करने के लिए नहीं देगा। घड़ी की जितनी बारीक कारीगरी होगी, उसे ठीक करने के लिए भी उतना ही चतुर कारीगर होना चाहिए। कारखाने या फैक्ट्री के विषय में भी यही बात है। कोई भी मशीन इतनी जटिल और नाजुक नहीं और न ही इतना चातुर्यपूर्ण संचालन चाहती है, जितना प्रगतिशील प्रबंध नीति। यह आवश्यक नहीं कि प्रबंध नीति प्रगतिशील हो। आवश्यकता इस बात की होती है कि प्रबंध नीति सुचारू रूप से हो, यदि सुचारू रूप से प्रबंध नीति चलेगी तो प्रगति अपने आप होने लगेगी।" [15]

अंत मे कहा जा सकता है कि समाज मनोविज्ञान मानव मनोविज्ञान की एक महत्त्वपूर्ण शाखा है। अनेक विद्वान यह मानते है कि समाज मनोविज्ञान व्यक्ति का सामाजिक वातावरण में अध्ययन करता है। समाज मनोविज्ञान के द्वारा ही असामाजिक तत्त्वों का समाधान करके सामाज को विकसित किया जा सकता है।

डा. अजय शर्मा के उपन्यास 'नौ दिशाएं' में समाज-मनोविज्ञान:

समाज मनोविज्ञान के अंतर्गत समाज के लोगों के विचारों, रीति-रिवाजों, प्रथाओं आदि का अध्ययन किया जाता हैं। साहित्यकार समाज के साथ संबंधित होता है। समाज का हित करना उसका मुख्य उद्देश्य होता है। अपने इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए वह साहित्य का निर्माण करता है तथा अपने पात्रों के माध्यम से समाज की विकृति को दूर करता है। जैसा समाज होगा वैसा ही देश होगा। इसलिए देश की उन्नति के लिए समाज का स्वस्थय होना अति आवश्यक हैं। डा. शर्मा पंजाब की उन साहित्यकारों में से एक है जिन्होनें अपनी लेखनी को जनता की भलाई के रूप में प्रयोग किया। उन्होने ऐसी-ऐसी रचनाओं का निर्माण किया जो समाज में नवीन चेतना लाने में

सहायक हुई। 'लकीर के आर पार', 'चेहरा और परछाई',' खुली हुई खिड़की', 'आकाश का सच', तथा 'नौ दिशाएं' ऐसे ही उपन्यास हैं जिनमें समाज की वास्तविक तस्वीर को उन्होनें प्रकट किया हैं। निशिकांत ठाकुर डा. शर्मा की लेखनी की प्रशंसा करते हुए लिखते है," डा. शर्मा का उपन्यास 'बसरा की गलियां कई दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। आजकल विश्व जिन समस्याओं से दो चार हो रहा है उसकी औपान्यासिक अभिव्यक्ति इस कृति में बखूबी हुई है।"[16] वास्तविक लेखक उसी को कहा जा सकता है, जो समाज की समस्याओं को प्रकट करे। 'नौ दिशाएं' उपन्यास में समाज मनोविज्ञान प्रकट हुआ है।

अन्त:क्रियाओं का अर्थ

सामाजिक व्यवहार की उत्पत्ति व्यक्ति एवं सामाजिक परिस्थिति के बीच होने बाली अन्तक्रिया के परिणामस्वरूप होती है। इसलिए सामाजिक मनोविज्ञान को सामाजिक अन्तक्रिया या अन्तर्वैयक्तिक व्यवहार घटना(Interpersonal Behavior Event) के रूप में परिभाषित किया जाता है। दूसरे शव्दों में हम कह सकते है कि एक या दो व्यक्तियों के साथ जब संबंध व्यक्तिगत स्तर पर स्थापित होते हैं तो यह व्यक्ति से व्यक्ति के बीच की अन्तक्रिया होती है। इस प्रकार के संबंध संख्या की दृष्टि से सीमित होते हैं, इसलिए इन्हें अन्तर्वैयक्तिक संबंध कहा जाता है। पति-पत्नी, मात-पिता, भाई और बहन, पिता और पुत्र, माता और पुत्र, भाई और भाई, मित्र और मित्र के बीच जो अन्तक्रियायें होती है, वह सब व्यक्ति से व्यक्ति के बीच की अन्तक्रियायें है। व्यक्ति के व्यक्ति के संबंध स्नेह ,सहयोग तथा अत्यधिक घनिष्टठा पर आधृत है।

व्यक्ति समूह की अन्तक्रिया में व्यक्ति किसी समूह के संपर्क में आता है तथा उसके प्रति प्रतिक्रिया करता है। यहाँ व्यक्ति को समूह से उत्तेजना मिलती है और प्रतिक्रियात्मक व्यवहार समूह के दूसरे व्यक्तियों को प्रभावित भी करता हैं। व्यक्ति अपने परिवार, जाति, धर्म ,आस – पड़ोस आदि से अपना संबंध स्थापित करता है। यह संबंध उसके व्यक्तितत्व को प्रभावित करता है। समूह - समूह की अन्तक्रिया दो गाँव के निवासियों, अथवा एक गावँ की विभिन्न जातियों, दो परिवारो, दो राजनैतिक दलों तथा दो युद्ध क ने बाली सेनाओं के बीच होती है। इस संबंध में मैत्री, सहयोग, विश्वास आदि की घनिष्टठता के अतिरिक्त उन विशेषताओं का भी आभाव होता है जो व्यक्ति-व्यक्ति के संबंध एवं व्यक्ति समूहों के संबंधों में पाई जाती है।

सामाजिक अन्तक्रिया की परिभाषाएं:

1.शेरिफ एवं शेरिफ के अनुसार,"सामाजिक परिस्थितियों में व्यक्तियों के बीच होने वाला आदान – प्रदान अन्त:क्रिया प्रक्रम कहा जाता है।" [17] अर्थात सामाजिक परिस्थितियों में व्यक्ति जो भी कार्य करता है उसमें अंत:क्रिया बनी ही रहती है।

2.न्यूकाम्ब के अनुसार,"यह एक ऐसा प्रक्रम है जिसके द्वारा कोई व्यक्ति उन व्यक्तियों को अनुभूत करता है तथा उनके प्रति अनुक्रिया करता है।" [18]

3.गिलिन एवं गिलिन ने सामाजिक अन्तक्रिया की परिभाषा इस प्रकार दी है," सामाजिक अन्तक्रिया से तात्पर्य व्यक्ति एवं व्यक्ति, समूह एवं समूह और समूह एवं व्यक्ति के बीच पाए जाने वाले सभी प्रकार के सामाजिक संबंधों से हैं।" [19]
जब व्यक्ति का व्यक्ति के साथ तथा समाज का व्यक्ति के साथ संबंध स्थापित हो जाता है तो सामाजिक अन्तक्रिया की प्रक्रिया आरम्भ हो जाती है।

'नौ दिशाएं उपन्यास में सामाजिक अन्त:क्रियाओं का अध्ययन':

अन्त:क्रियाओं का मूलाधार मानवीय संबंध है। "समाज मनोवैज्ञानिकों ने संचार, सहयोग, समझौता, द्वन्द्व, प्रतिस्पर्धा तथा प्रभुत्व आदि अन्तक्रिया के विभिन्न रूपों पर प्रकाश डाला है।" [20] राम काव्यों में राम और सीता, लक्ष्मण और ऊर्मिला तथा भरत और माण्डवी में पति- पत्नी का संबंध है। राम का लक्ष्मण और भरत के साथ भाई-भाई का संबंध है। राम और दशरथ में बाप-बेटे का संबंध है। समाज मनोविज्ञान के अंतर्गत यह सारे संबंध व्यक्ति –व्यक्ति संबंधों के साथ संबंधित है। क्योंकि व्यक्ति और व्यक्ति के बीच की अन्तक्रिया में मैत्री, प्रेम, विश्वास तथा सहयोग की घनिष्टठता विधयमान रहती है। 'नौ दिशाएं' उपन्यास में भी अन्तक्रियाओं का वर्णन मिलता है। उपन्यास के सभी पात्र किसी न किसी रूप से एक- दूसरे के साथ संबंधित है। उदाहरणस्वरूप उपन्यास की नायिका रजनी तथा नायक संजीव पति-पत्नी है। इसी प्रकार संजीव तथा उसकी मां का मा-बेटे का संबंध है। रजनी तथा सुरेश का भाई और वहन का संबंध है। संजीव तथा डाक्टर का दोस्त का संबंध है। कहने का अर्थ यह है कि प्रत्येक व्यक्ति का किसी न किसी के साथ कोई न कोई रिश्ता आवश्य है जो सामाजिक अन्त:क्रियाओं का अध्ययन कराता है। 'नौ दिशाएं' उपन्यास में संजीव और रजनी का संबंध प्रेम, सहानुभूति तथा सहयोग की घनिष्टठता पर आधारित है। पति-पत्नी में प्रेम,सहानुभूति, विश्वास का होना अति आवश्यक है। पति-पत्नी का रिशता समाज के लिए एक आदर्श रूप प्रस्तुत करता है। उपन्यास में संजीव का अपनी पत्नी के प्रति प्रेम का उदाहरण उनके रिशते को मजबूती प्रदान करता है।," तुम केवल आंखे बंद कर लो। देखो आज हम दोनों के बीच कोई नहीं है। केवल तुम हो और मैं हूं।[21] इस प्रकार समाज में प्रत्येक व्यक्ति का किसी न किसी के साथ सम्बन्ध आवश्य ही होता है। इसी प्रकार संजीव का उपन्यास में अपनी मां के साथ मां-पुत्र का संबंध है। जो कि प्रेम, करूणा पर आधारित है। संजीव द्वारा कहे गए शब्द मां-पुत्र के संबंध को प्रस्तुत करते है।" जो सुख मां के आंचल में मिलता है, वह कही नहीं मिलता। मां के आंचल के बिना सब सुख अधूरे है।" [22] इस संवाद से संजीव का मातृ-भक्ति प्रकट होती है। इसी प्रकार संजीव की मां भी उसे उतना ही प्रेम करती है जो उसके संवाद से स्पष्ट हो जाता है।" तू मेरा बेटा है, मैं तेरी मां हूं, यह रिश्ता तो हमेशा रहना ही है।" [23] इस वाक्य में एक मां की ममता, करूणा, प्रेम तथा वात्स्यल प्रकट हो रहा है। इस प्रकार समाज में प्रत्येक व्यक्ति का किसी न किसी के साथ संबंध होता है। यही संबंध उस रिशते को प्रकट करता है जो मनुष्य दूसरे

के साथ स्थापित करता है। जब व्यक्ति –व्यक्ति के संबंधों में द्वन्द्व आ जाता है तो अन्तक्रियायें संघर्ष से भर जाती है। समाज में केवल मधुर संबंधों के लोग ही नही रहते। इसके विपरीत ऐसे लोग भी होते है जिनकी विचारधाराएं आपस में मेल नहीं खाती और विद्रोह की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। उपन्यास में भी व्यक्ति-व्यक्ति के बीच संघर्ष उत्पन्न हो जाता है। संजीव और उसके साले सुरेश की विचारधारा में द्वन्द्व रहता है। दोनों एक दूसरे को नीचा दिखाने की कोशिश करते रहते है। सुरेश क्रोधित होकर सभी के सामने कहता है," पता नहीं स्याले को समझ क्यों नहीं आती कोई बात?" [24] इस प्रकार जब व्यक्ति-व्यक्ति में आपसी द्वन्द्व पैदा हो जाता है तो उनकी वाणी विद्रोह से भर जाती है।

'नौ दिशाएं उपन्यास में नेतृत्व तत्त्व का अध्ययन':

किसी व्यक्ति में नेतृत्व का गुण होना एक प्रतिभा है। प्रत्येक व्यक्ति में यह गुण नहीं होता। जिन व्यक्तियों में भी यह गुण होता है वह समाज में अपनी बुद्धिमता के बल पर आदर पाते हैं। डा. अजय शर्मा ने अपने उपन्यास 'नौ दिशाएं' में नेतृत्व तत्त्व को अपने पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। एक सफल नेता अपने अपने समाज के लोगों को नई दिशा प्रदान करता है। डा. शर्मा ने नौ दिशाएं उपन्यास में संजीव के दोस्त डाक्टर को एक सफल नेता के रूप में प्रस्तुत किया है। जिसमें अदभूत नेतृत्त्व की शक्ति है। संजीव जब भी उदास होता है तब वह डाक्टर के पास आ जाता है। संजीव का जब अपनी पत्नी रजनी से झगड़ा हो जाता था तब डाक्टर उसका सही मार्गदर्शन करता है। डाक्टर द्वारा कहे गए शब्द एक कुशल नेतृत्व को प्रस्तुत करते है। [25] जब कोई व्यक्ति रास्ते से भटक जाता है तो उसे सही रास्ते पर ले जाना एक नेता का कार्य होता है। नेतृत्व के गुणों का बहुत से हिन्दी काव्यों में वर्णन किया गया है जैसे "शम्बूक", अग्नि-लीक काव्यों मे राम को एक कुशल नेता के रूप में चित्रित किया गया है। " लोकनायक वही है जो संवेदना का मर्म समझे, धर्म और अधर्म समझे।"[26] यही एक कुशल नेता का गुण है। दूसरे की मानसिकता को बदलना आसान कार्य नहीं होता लेकिन एक कुशल तथा बुद्धिमान नेता यह कार्य कर सकता है। डाक्टर भी संजीव की मानसिकता को बदलने में सफल हो गया। संजीव के कहे हुए शब्द "तुम ठीक कहते हो।" [27] इस वात की पुष्टि करते है कि संजीव अपने नेता की वात से प्रभावित है। आम मनुष्य विपत्ति के समय अपना हौसला छोड़ देता है लेकिन एक नेता विपत्ति के समय भी अपने बुद्धिमता से उस मुसीबत का डट कर सामना करता है। संजीव जब परिस्थितियों के समक्ष घुटने टेक देता है तो उसका डाक्टर दोस्त उसे हौसला देता है और कहता है।[28] यदि व्यक्ति को एक कुशल नेतृत्व का साथ मिल जाता है तो उसका जीवन रोशनी से भर जाता है। 'नौ दिशाएं' उपन्यास में डाक्टर एक कुशल नेता का प्रतिनिधित्व करता है। वह संजीव और रजनी की टूटती हुई जिंदगी को फिर से बसाने के लिए काफी प्रत्यन करता है ताकि दोनों की गृहस्थी बस जाएं। वह दोनों को समझाता हुआ कहता है कि,"छोटी- छोटी बातें ही महाभारत का कारण बनती है।

इसलिए हमें छोटी- छोटी बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए।"[29] पति-पत्नी की ज़िंदगी तो विपरीत दिशाओं की तरह है। लेकिन इसके बावजूद भी आपको बैलेंस बनाकर रखना चाहिए।जिस पर जिंदगी की गाड़ी हमेशा चलती रहे। यदि दाम्पत्य जीवन में पति-पत्नी छोटी-छोटी बातों को लेकर लड़े तो शीघ्र ही दाम्पत्य जीवन नष्ट हो जाता है। दोनो में आत्म- समर्पण की भावना होनी चाहिए। दोनो को एक-दूसरे के विचारों का सम्मान करना चाहिए। जब दोनो एक-दूसरे से अलग हो जाते है तो डाक्टर एक नेता की भांति रजनी को उसके अंह पर कटाक्ष करता हुआ कहता है।[30] नेता की सोच स्वतन्त्र होनी चाहिए तभी वह उचित निर्णय ले सकता है। डाक्टर के व्यक्तित्व से रजनी की मां भी प्रभावित है। वह उसे एक ऐसा नेता मानती है ओ विपरीत को भी सही में बदल दे।वह उसे कहती है," अगर तुम संजीव और रजनी को फिर से मिलवा दोगे तो तुम दोस्ती के कर्ज से मुक्त हो जाओगे।" [31] डाक्टर आकाश संजीव का बहुत पुराना दोस्त है। वह एक नेक तथा दिल का साफ व्यक्ति है। रजनी की मां यह जानती है तथा उसे दोनों का रिश्ता फिर से मिलाने के लिए कहती है। आकाश प्रत्येक बात को गहराई से सोचता है त भी कहता है। वह छोटी-छोटी बातों को विनाश कारण मानता है। वह अपनी पत्नी से कहत है," तुम इसे ड्रामा कहती हो। इन छोटी-छोटी घटनाओं से ही तो बड़ी घटनाओं का अंदेशा हो जाता है। बात दिखने में ही भले साधारण हो, लेकिन सोलह आने सच है। यह अनुमाण प्रमाण की बात है। मेरा ऐसा अनुमान है, ठीक उसी तरह जैसे धुएं को देखकर अग्नि का अनुमान लगाया जा सकता है। किसी वृक्ष को देखकर उसके बीज का अनुमान लगाया जा सकता है।यही नहीं किसी प्रेग्नेंट लेडी को देखकर संभोग का अनुमान लगाया जा सकता है।" [32] उपन्यास में डाक्टर एक ऐसा पात्र है जिसे बातों में कोई नहीं जीत सकता है। वह बात ही इस ढंग से करता है कि सामने बाला व्यक्ति हैरान रह जाता है। डाक्टर की पत्नी को भी पता है कि बातों में इन से कोई नही जीत सकता है। इसलिए वह कहती है," अरे बाबा,बातें बनाना कोई आपसे सीखे।" [33] डाक्टर की पत्नी ने भी अपने पति के नेतृत्व गुण को धारण किया हुआ है। वह भी किसी को सलाह दिए बिना नहीं रह सकती है। जब संजीव और रजनी डाक्टर के घर आते है तो उसकी पत्नी यह अनुमान लगा लेती है कि दोनो मिया-बीवी में कुछ न कुछ तो हुआ है। वह दोनो को कहती है," सबकी प्रकृति अलग-अलग है। बस यह जिंदगी की गाड़ी है ऐसे ही चलती है। कभी मियां की मान ली, तो कभी अपनी मनवा ली।" [34] ऐसी बात तो वही व्यक्ति कर सकता है जिसके पास कुशल बुद्धि है और कुशल नेतृत्व है।उपन्यास में लेखक ने रजनी को भी एक सफल नेता के रूप में चित्रित किया है। वह स्वयं निर्णय लेती है और अपने पथ पर अग्रसर होती है। वह अपनी बेटी का पालन-पोषण करती है और कहती है-

" मैं अपनी बेटी को बड़ा करूंगी। उसे पढ़ा-लिखा कर उसे किसी चीज़ की कमी महसूस नहीं होने दूंगी।" [35] इस प्रकार रजनी एक मां के रूप में अपनी बेटी का नेतृत्व करती है। नेतृत्व व्यक्ति का मार्गदर्शन करता है उसे उचित मार्ग दिखाता है। यदि व्यक्ति को सही समय पर सही नेता मिल जाए तो उसका जीवन सफल है। महाभारत का युद्ध इसका सश्क्त उदाहरण है। कौरवो की संख्या

पांड्वो से अधिक थी लेकिन उनके पास कोई भी कुशल नेता नहीं था परन्तु पांड्वो के पास भगवान माधव का कुशल नेतृत्व था। इसलिए उनकी विजय हुई। एक कुशल नेता ही समय आने पर अपने लोगों ऐसा नेतृत्व प्रदान करता है जिस से उनकी जीत पक्की होती है। नेता कि सोच दूरदर्शी होती है वह वर्तमान के साथ-साथ भविष्य की चिंता करता है ताकि आने वाला समय अच्छा निकले।

संदर्भ

1. V.v akolkar, 'social psychology', P.3
2. Allport, 'The historical background of, social psychology' P.27
3. David krech, 'Theory and problems of social psychology', P.5
4. Kimbal young, 'Hand book of social psychology', P.1
5. David krech, 'Individual in society a textbook of social psychology', P.3
6. Delamater,' social psychology', P.8
7. James T. Tedeschi,' Introduction of social psychology', P.5
8. डा. एस के शर्मा,' समाज मनोविज्ञान एवं सिद्धांत', पृ. 4
9. https:// Wikipedia.org/ समाज मनोविज्ञान,11 sep,2016.
10. V.v akolkar, 'social psychology', P.130
11. Kimbal young, , 'Hand book of social psychology', P.1,2
12. www.samaylive.com,15,jun,2014.
13. James drever,' Dictionary of Psychology', P.192
14. R.M, maclver,' society', P.175
15. John smith,' Labour party leader', P.144
16. डा. अजय शर्मा,' बसरा की गलियां', पृ 4
17. डा. आर.एन. सिंह,' आधुनिक सामाजिक मनोविज्ञान,' पृ 45
18. डा. आर.एन. सिंह,' आधुनिक सामाजिक मनोविज्ञान,' पृ 60
19. डा. आर.एन. सिंह,' आधुनिक सामाजिक मनोविज्ञान,' पृ 63
20. Henry lindgren,' Introducton of social psychology', P.8,9
21. डा. अजय शर्मा,'नौ दिशाएं', पृ 55
22. डा. अजय शर्मा,'नौ दिशाएं', पृ 41
23. डा. अजय शर्मा,'नौ दिशाएं', पृ 41
24. डा. अजय शर्मा,'नौ दिशाएं', पृ 19
25. डा. अजय शर्मा,'नौ दिशाएं', पृ 50
26. जगदीश गुप्ता,' शम्बूक', पृ 48

27. डा. अजय शर्मा,'नौ दिशाएं', पृ 71
28. डा. अजय शर्मा,'नौ दिशाएं', पृ 80
29. डा. अजय शर्मा,'नौ दिशाएं', पृ 70
30. डा. अजय शर्मा,'नौ दिशाएं', पृ 91
31 डा. अजय शर्मा,'नौ दिशाएं', पृ 66
32 डा. अजय शर्मा,'नौ दिशाएं', पृ 69
33 डा. अजय शर्मा,'नौ दिशाएं', पृ 70
34 डा. अजय शर्मा,'नौ दिशाएं', पृ 70
35 डा. अजय शर्मा,'नौ दिशाएं', पृ 86

उपसंहार

प्रस्तुत शोधकार्य से उपलब्ध निकर्षो को उपसंहार के अंतर्गत सारांश रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। हिन्दी साहित्य में उपन्यास विधा का अपना अलग महत्त्व है। मानव जीवन के प्रत्येक पहलू को चित्रित करने में उपन्यास हमेशा ही सफल रहा है। इसका फलक

अधिक बड़ा होने के कारण यह मानव जीवन का विशाल वर्णन करता है। अध्याय एक उपन्यास और मनोविज्ञान का आपसी घनिष्ट संबंध है। दोनो ही मनुष्य के जीवन के साथ संबंधित है और उसका चित्रण करने में सक्ष्म है। फ्रायड, एडलर, युंग आदि मनोवैज्ञानिकों के प्रमुख तत्त्वों को आधार बनाकर मनुष्य के मन का विश्लेषण करने में जैनेंद्र, इलाचंद्र जोशी, मोहन राकेश, मन्नू भण्डारी, उषा प्रियंवदा आदि के नाम प्रमुख हैं। इन्ही मनोवैज्ञानिकों रचनाकारों में डा. अजय शर्मा का नाम भी प्रमुख है। डा शर्मा ने अपनी मनोवैज्ञानिक लेखनी से पाठकों को अत्यन्त प्रभावित किया। मानव मन की कुंठाओं, पीड़ाओं, अवसादों का वर्णन उन्होनें बड़े ही सशक्त ढंग से किया है। अपनी रचनाओं के माध्यम से उन्होनें समाज के यथार्थ को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया। आम जिंदगीं में मनुष्य किस प्रकार मानसिक विकृतियों का शिकार हो जाता है का वर्णन उन्होनें 'नौ दिशाएं' उपन्यास में बखूवी से किया है। एक डाक्टर होने के बाजूद मनोचिकित्सक के रूप में पात्रों के आन्तरिक द्वन्द्व को प्रस्तुत करना उनकी अदभूत कला का उदाहरण है। चेहरा और परछाई', 'खुली हुई खिड़की','आकाश का सच','बसरा की गलियां','काल कथा','शहर पर लगी आंखें' तथा नौ दिशाएं ऐसे ही उपन्यास हैं जिनमें उन्होंने मानव मन की अनुभूतियों को अपनी मनोवैज्ञानिक लेखनी के माध्यम से पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। समकालीन समाज की नब्ज को आत्मसात करने में वह सक्षम दिखाई देते है। यदि मनुष्य की मानसिकता को ना समझा जाए तो उसमें अनेक प्रकार की मानसिक विकृतियाँ उत्पन्न हो जाती है। शर्मा जी ने अपने उपन्यास में समाज के लोगों की निम्नस्तर की मानसिकता को प्रकट किया हैं। कोई भी व्यक्ति अपने जीवन में बिना संघर्ष के खास नहीं बन सकता। लेखक अपनी लेखनी के माध्यम से ही संघर्ष करता है और समाज में व्यापत कुरीतियों पर प्रहार करता है। अध्याय दो में सामान्य मनोविज्ञान से संबंधित है। 'नौ दिशाए' उपन्यास में सामान्य मनोविज्ञान पर्याप्त मात्रा में आया है। डा शर्मा पात्रों के सामान्य मनोविज्ञान को प्रस्तुत करने में सफल रहे। सामान्य मनोविज्ञान के तत्व जैसे कि सहनशीलता, प्रेम और यर्थाथ उनके पात्रों के व्यवहार में प्रदर्शित हुआ है। सहनशीलता उनके पात्रों में देखने को मिलती है। जब व्यक्ति सहनशील होता है तो वह समाज के लिए एक आदर्श बन जाता है। सहनशीलता व्यक्ति का एक ऐसा आभूषण है जिसे ना तो कोई चोर चुरा सकता है और ना ही यह कभी गुम हो सकता है। जब तक मनुष्य का जीवन है तब तक सहनशीलता उसके साथ ही रहती है। आज लोगों में सहनशीलता की कमी हो गई है। बात-बात पर लोग एक-दूसरे के साथ लड़ने लगते है। जिस से समाज का अहित होता है। लेखक समाज के साथ गहन रूप से जुड़ा होता है। समाज की विसंगतियों को दूर करना उसका मौलिक कर्तव्य बन जाता है। डा. शर्मा ने भी समाज के लोगों को शिक्षा देने के लिए अपने पात्रो को सहनशीलता के आभूषण में सजाया है। उनके पात्र जिनमें रजनी, रूकमणि, संजीव, आकाश लोगों को सहनशीलता की प्रेरणा देते हैं। जिस भी कृति में यथार्थ होता है वह लोगों को बहुत प्रभावित करता है। सत्य को अपने साहित्य में प्रकट करना एक अनोखी कला है। शर्मा जी ने भी अपने उपन्यास 'नौ दिशाएं' के माध्यम से वास्तविकता को लोगों तक पहुचायाँ है ताकि समाज का कल्याण हो सके और लोग समाज की विकृतियों से अवगत हो सके। आज जो समाज में हो रहा है उसका वैसा ही चित्रण उन्होनें अपने पात्रों के माध्यम से किया है। उनके पात्र समाज में घट रही घटनाओं की जानकारी अपने संवादो के माध्यम से पाठकों को देते हैं। जिस से उनको नवीन

जानकारी मिल सके और वह आनी वाली समस्याओं से अवगत हो सके। लेखक इसमें पूर्ण रूप से सफल हुआ है। प्रेम के बिना जीवन व्यर्थ है। जिस भी रचना में प्रेम का आभाव है वह अपूर्ण है। प्रेम से ही संसार को जीता जा सकता है। डा.शर्मा ने प्रेम को आधार बनाकर समाज के लोगों को एक नई सोच दी है। उनका मानना है कि प्रेम से दुनिया के हर इंसान का दिल जीता जा सकता है। उनके उपन्यास के पात्र प्रेम के माध्यम से लोगों को यह संदेश देते है कि प्रेम से पराए को भी अपना बनाया जा सकता है। प्रेम ही जीवन का आधार है। अध्याय तीन में नौ दिशाएं' उपन्यास में असामान्य मनोविज्ञान को प्रस्तुत किया गया है। इस अध्याय में असामान्य मनोविज्ञान के भरपूर रूप से उजागर हुआ है । पात्रों की मन: स्थिति का वर्णन करने में लेखक पूरी तरह से सफल हुआ है। क्रोध ,संदेहशीलता, ईष्या कुंठा, अंतर्द्वन्द्व जिस भी व्यक्ति में आ जाते है वह व्यक्ति मानसिक रूप से बीमार हो जाता है। वह सामान्य से असामान्य हो जाता है। वह खूद तो अपने लिए हानिकारक होत है साथ ही समाज के लिए भी घातक सिद्ध होता है। डा अजय शर्मा के अपने उपन्यास नौ दिशाएं में अपने पात्रों के माध्यम से इस असामान्य मनोविज्ञान के तत्वों को उजागर किया है। रजनी, सुरेश, संजीव तथा रूकमणि ऐसे ही पात्र है जो असामान्य व्यवहार कर स्वयं तो दुखी होते है साथ ही समाज पर भी गलत प्रभाव डालते है। क्रोध ,संदेहशीलता, ईष्या कुंठा, अंतर्द्वन्द्व के कारण वह अपना जीवन नर्क बना लेते है। लेखक ने इन पात्रों के माध्यम से समाज के लोगों को यह संदेश दिया है कि यदि व्यक्ति में इन अवगुणों का समावेश हो जाता है तो वह समाज में रहने के योग्य नहीं रहता। अपनी मनोवैज्ञानिक लेखनी से उन्होनें समाज का चित्रण अपने पात्रों के माध्यम से उजागर किया है। अध्याय चार में 'नौ दिशाएं' उपन्यास में नारी मनोविज्ञान' को प्रस्तुत किया गया है। नारी की पीड़ा, दमित कामवासना, क्रोध,तथा अहं को प्रकट करने मे लेखक पूर्णत: सफल हुआ है। नारी मनोविज्ञान क्या होता है तथा नारी की मानसिकता में कैसे परिवर्तन आता है का वर्णन डा. शर्मा ने बहुत ही सूक्ष्म ढंग से किया है। नारी के मनोभावों को समझने में तथा उसको प्रकट करने में वह सफल हुए है। उन्होनें अपनी उपन्यास की नायिका रजनी के माध्यम से उस भारतीय नारी की तस्वीर को प्रकट किया है जिसमें वास्तविकता के दर्शन होते है। एक नारी की पीड़ा क्या होती है जब वह अपने पति से अलग हो जाती है और अपनी बेटी का पालन-पोषण दिन-रात मेहनत कर के करती है का वर्णन करने में उनकी लेखनी सफल हुई है। इस के साथ-साथ उन्होनें इस बात की ओर भी संकेत किया है कि जब एक स्त्री पर अंह, क्रोध का आवरण अधिक हो जाता है तो सहनशील कहीं जाने बाली नारी पतन की ओर अग्रसर होने लगती है। रजनी के माध्यम से उन्होनें इसी बात को उजागर किया है। यदि स्त्री को सभी सुख चाहिए तो उसे इन अवगुणों को त्यागना पड़ेगा और सहनशीलता का आवरण ओड़ना पड़ेगा। अकेली स्त्री और अकेला पुरूष समाज का निर्माण नहीं कर सकते। इसलिए उनको साथ-साथ रहना चाहिए। यदि स्त्री-पुरूष में प्रेम है तो वह दसों दिशाओं के स्वामी हैं। अध्याय पांच में समाज मनोविज्ञान को प्रस्तुत किया गया है। जब व्यक्ति की मानसिकता विकृत हो जाती है तो वह स्वंय तथा समाज के लिए हानिकारक सिद्ध हो जाता है। लेखक ने अपने उपन्यास में समाज मनोविज्ञान का प्रयोग किया है तथा समाज की विकृतियों को दूर कर के एक आदर्श स्थापित कर अपनी मनोवैज्ञानिक लेखनी का परिचय दिया है। समाज

मनोविज्ञान के महत्त्वपूर्ण तत्त्वों जैसे कि अन्त:किग्राओं, नेतृत्व का परिचय उनके उपन्यास में देखने को मिलता है। समाज तभी विकास कर पाएगा यदि उसके लोग मेहनती, ईमानदार्म बुद्धिमान होगें। डा.शर्मा ने अपने पात्रों में इसी गुण का विकास किया है। उनके पात्र परिस्थितियों के समक्ष हार नहीं मानते ब्लकि मेहनत और लगन के साथ परिस्थितियों का मुकावला करते है। जिस से पाठक को नई सोच तथा कुछ करने की प्ररेणा मिलती है। उपन्यास की नायिका को उन्होनें एक ऐसी स्त्री के रूप में चित्रित किया है जो कठिनाईयों के बाद भी अपने लिए नई दिशा की खोज कर लेती है जो आज के समाज के लिए प्ररेणा है।

साक्षात्कार

डॉ. अजय शर्मा के उपन्यास 'नौ दिशाएं पर शोध कार्य कर के मैं अपने आपको भाग्यशाली मानता हूँ। उनके साहित्य सृजन को गहराई से अध्ययन करने पर उनके व्यक्तित्व से मैं प्रभावित हुआ। उनसे

मुलाकात कर बातचीत करने की लालसा बहुत दिनों से मन में थी। आखिर 1 अगस्त 2016 को मैने जांलधर शहर (पंजाब) जाकर आदरणीय डॉ. अजय शर्मा जी से साक्षात्कार किया तो उनके विचारों और अनुभव कथनों को सुनकर मैं अपने शोध कार्य में उपस्थित शंकाओं का समाधान कर सका। शर्मा जी ने अपने कथन से मेरी उल्झनों को आईने की तरह स्पष्ट कर दिया। उन्होंने मेरे हर एक प्रश्न को ध्यान से सुनकर मेरी शंकाओं का समाधान किया। निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तरों के द्वारा मैं अपना शोध कार्य को सम्पन्न कर पाया हूँ।

1.विकास: एक डाक्टर होने के वाबजूद आपने लेखन कला को अपनाया इसका प्रमुख कारण क्या है?

डॉ. अजय शर्मा: लेखन की कला प्रत्येक व्यक्ति में हो सकती है। एक चाय वाला, रिक्शे वाला भी लिख सकता है। लेखन तो भावो की अभिव्यक्ति है। जिसके पास भाव है वह लेखक है और जो भावो को कला के माध्यम से प्रकट करता है वह कलाकार है।

2.विकास: आपका प्रथम उपन्यास कौन सा है जिसने आपको उपन्यासकार के रूप में प्रसिद्धि दिलाई?

डॉ. अजय शर्मा: मेरा प्रथम उपन्यास 'चेहरा और परछाई' है। यह फिल्मी दुनिया पर आधारित है। जिसका नायक अपना घर छोड़ कर मायानगरी पहूँच जाता है, लेकिन निराशा के अलावा उसे कुछ हासिल नहीं होता।

3.विकास: सबसे पहले आपने पंजाबी भाषा में लिखना आरम्भ किया उसके बाद हिन्दी भाषा को अपना लिया। इसके पीछे क्या कारण है?

डॉ. अजय शर्मा: पंजाबी मेरी मातृ भाषा है और हिन्दी मेरी राष्टभाषा है। इसलिए मैं दोनो भाषाओं का सम्मान करता हूँ। 'लकीर दे आर पार' मेरा प्रथम पंजाबी भाषा में लिखा हुआ कहानी संग्रह है जो 1998 में प्रकाशित हुआ। उसके बाद मेरे सभी उपन्यास हिन्दी भाषा में है।

4. विकास: आपके उपन्यास के पात्र यर्थाथ से संबंधित है। इसकी प्ररेणा आपको कहां से मिली?

डॉ. अजय शर्मा: साहित्यकार का मुख्य उद्देश्य समाज का कल्याण होता है। यदि कही कुछ गल्त हो रहा है तो उसको उजागर करना उसका मुख्य उद्देश्य होता है। अपने आस-पास के परिवेश से मुझे प्ररेणा मिली।

5. विकास: लेखन के बाद आपको कैसा महसूस होता है?

डॉ. अजय शर्मा: लेखन के बाद तो अच्छा ही महसूस होता है लेकिन जब तक काम पूरा नहीं होता और रचना प्रकाशित नहीं होती तब तक चिंता बनी रहती है।

6. विकास: उपन्यासों में आपने पंजाबी भाषा के मुहावरों का प्रयोग किया है। इस पर आपके क्या विचार है?

डॉ. अजय शर्मा: मैं पंजाब का रहने बाला हूँ। जब भी मैं लिखता हूँ तो मातृ भाषा के मुहावरे मेरी जुबान पर अपने आप आ जाते है।

7. विकास: आपके उपन्यासों का मुख्य उद्देश्य क्या है और आप समाज में किस प्रकार का परिवर्तन चाहते है?

डॉ. अजय शर्मा: समाज का अधिक से अधिक कल्याण हो यही मेरे उपन्यासों का मुख्य उद्देश्य है। लेखक समाज में परिवर्तन नहीं ला सकता। परिवर्तन लाना तो नेताओं का काम है। मैं तो अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज का मार्गदर्शन कर सकता हूँ।

8.विकास: आपने अपने उपन्यास का नाम नौ दिशाएं क्यों रखा है? इसके अर्थ को स्पष्ट करे?

डॉ. अजय शर्मा: मेरा यह उपन्यास दिशाओं पर आधारित है। हमारे शास्त्रों में दस दिशाओं का वर्णन मिलता है। आकाश और धरा दोनो मिलकर दसवी दिशा का निर्माण करते है। आकाश को मैनें पुरूष तथा स्त्री को मैने धरा के रूप में लिया है, लेकिन मेरे उपन्यास में स्त्री और पुरूष दोनो एक –दूसरे के विपरीत है। वह दोनो एक –दूसरे के विचारों के विरोधी है। इसी कारण उनका मिलाप नहीं हो पाता और वह नौ दिशाओं में ही विचरते रहते है। आकाश और धरा एक –दूसरे के पूरक होते हुए भी आपस में घनिष्ट रूप से जुडे हुए है। इसी प्रकार जब स्त्री और पुरूष एक हो जाते है तो दसो दिशाओं के मालिक हो जाते है।

9. विकास: नौ दिशाएं उपन्यास के माध्यम से आपने टूटते दाम्पत्य जीवन की समस्या को प्रभावी ढंग से उठाया है। इस विषय के आकर्षण का क्या कारण है?

डॉ. अजय शर्मा: आज हमारे जीवन पर पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव अधिक है जिसके कारण हम अपने नैतिक मूल्यो को भूलते जा रहे है। आज स्त्री पुरूष के पैरो की जूती नहीं है। उसे अपने सब अधिकारों का ज्ञान है। दाम्पत्य जीवन का मुख्य आधार पति-पत्नी का आपसी प्रेम है।

10. विकास: अपनी रचनाओं के माध्यम से आप समाज की मानसिक विकृतियों को कैसे दूर करेगें?

डॉ. अजय शर्मा: साहित्यकार का मुख्य उद्देश्य समाज कल्याण होता है। उसकी कलम ही उसका शस्त्र होता है। अपनी कलम के माध्यम से ही वह सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार करता है।

11. विकास: आपका नवीनतम उपन्यास कौन सा है?

डॉ. अजय शर्मा: मेरा नवीनतन उपन्यास 'कागद कलम ना लिखणहार' है। यह पत्रकारिकता की दुनिया पर आधारित है । इसमें मैने अखबारी दुनिया की सच्चाई और राष्ट्रीय त्रासदी दर्शाया है। उपन्यास की भाषा अगर बारीकी से देखें तो हिंदी में विकास होता दिखता है।मैने पंजाबी और उर्दू

के शब्दों को अपनी बनावट देकर निखारा है।मैने बड़े ही सुंदर शब्दों में पत्रकारिता और साहित्य का रिश्ता बयां किया है।

12. विकास: वर्तमान समय में आप क्या कर रहे हो?

डॉ. अजय शर्मा: जैसा कि मैने आपको पहले बताया कि मुझे पत्रकारिकता का बहुत शौक है। इसलिए मैं लेखन के साथ-साथ अखवारी दुनिया के साथ भी संबंधित हूँ। वर्तमान समय में मै दैनिक सवेरा' समाचार पत्र में मुख्य सम्पादक के रूप में कार्य कर रहा हूँ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ

1. शर्मा, अजय,"नौ दिशाएं", जालंधर, साहित्य सिलसिला प्रकाशन, 2011.

सहायक ग्रंथ

1. उपाध्याय, देवराज,"आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और मनोविज्ञान", इलाहाबाद, साहित्य भवन प्राईवेट लिमिटेड, 1969.
2. उपाध्याय, देवराज,"जैनेंद्र के उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन'',दिल्ली, पूर्वादय प्रकाशन, 1968.
3. एस,गुरुमूर्ति,"समय भारत के सूर्योदय का", दिल्ली, प्रभात प्रकाशन,2010.
4. तिवारी, आर.पी तथा डी.पी शुक्ला,"भारतीय नारी वर्तमान समस्यायें और भावी समाधान", दिल्ली, पी.एच. आई बुक हाउस, 2011.
5. दुबे, हरिशंकर," महिला उपन्यासकारों की नारी: प्रकृति एवं पीड़ा के आयाम", कानपूर,अमन प्रकाशन, 2012.
6. देवी,आशापूर्णा, "कसौटी उपन्यास", नई दिल्ली,प्रभात प्रकाशन, 2010.
7. बेदी, हरमहेन्द्र सिंह तथा सुधा जितेन्द्र (सं),"अजय शर्मा का कथा-संसार", जालंधर,साहित्य सिलसिला प्रकाशन, 2010.
8. भण्डारी, मन्नू,"आपका बंटी उपन्यास", नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन,2009.
9. भाटिया, हंसराज,"सरल मनोविज्ञान", दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2005.
10. भारद्वाज, मैथिली प्रसाद,"पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धान्त", चण्डीगढ़, हरियाणा साहित्य अकादमी, 1988.
11. भार्गव, महेश तथा मीनू भार्गव,"मानव विकास का मनोविज्ञान'', आगरा, एच.पी.भार्गव बुक हाउस, 2008.
12. मिश्र, बृज कुमार," मानस रोग असामान्य मनोविज्ञान", दिल्ली, पी.एच. आई बुक हाउस, 2011.
13. मिश्र, बृज कुमार,"मनोविज्ञान मानव व्यवहार का अध्ययन", दिल्ली, पी.एच. आई बुक हाउस, 2012.
14. यादव,रावसाहेब,"मोहन राकेश की कहानियों में नारी चरित्र", नई दिल्ली, चंद्रलोक प्रकाशन, 2008.

15. शर्मा, अजय, "बसरा की गलियां", जालंधर,आस्था प्रकाशन, 2004.
16. शर्मा, एस.एन "आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान के आधार", आगरा, एच.पी.भार्गव बुक हाउस, 2011.
17. शर्मा, एस.एन, ''आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान के आधार'', आगरा,एच.पी.भार्गव बुक हाउस, 2011.
18. शास्त्री, नारायण,"भारतीय मनोविज्ञान", वाराणसी, विश्वविधालय प्रकाशन, 2007.
19. श्रीवास्तव, डी एन," फ़्रायड मनोविश्लेषण", दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्ज, 2010.
20. श्रीवास्तव, डी एन,"व्यक्तित्व का मनोविज्ञान",आगरा,अग्रवाल पब्लिकेशन्स, 2012.
21. सहगल, मनमोहन तथा हुक्मचंद राजपाल,"इन्दु बाली और उनका रचना संसार", कश्मीरी गेट दिल्ली,आत्मारम एन्ड संस, 1991.
22. सिंघई, अशोक (सं)," पाण्डुलिपि विमर्श", छत्तीसगढ़, प्रमोद वर्मा स्मृति संस्थान,2010.
23. सिंह, अरूण कुमार तथा आशीष कुमार सिंह, "मनोविज्ञान के सम्प्रदाय एवं इतिहास", आगरा,अग्रवाल पब्लिकेशन्स, 2012.
24. सिंह,आर.एन,"समाज मनोविज्ञान",आगरा,एच.पी.भार्गव बुक हाउस, 2007.
25. सिहं,आर.एन तथा शोभा एस.भारद्वाज,"मूल मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाएँ", आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, 2012.
26. सुलेमान, मुहम्मद तथा तौवाव,"असामान्य मनोविज्ञान विषय और व्याख्या', आगरा,एच.पी.भार्गव बुक हाउस, 2011.
27. स्याल, अशोक,"खामोश सिसकियां", जालंधर, स्याल जी इम्प्रैशनज, 2011.
28. दिनकर,रामधारी सिंह,"साहित्य और समाज",इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, 2008.
29. यादव, राजेन्द्र,"आदमी की निगाह में औरत", नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2007
30. राकेश,मोहन,"आधे-अधूरे नाटक", दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2015.

शोध ग्रंथ

1. कुमार, सतीश,“ आधुनिक हिन्दी रामकाव्य में समाज मनोविज्ञान की भूमिका”, पी.एच.डी, थीसिस, महात्मा गांधी विश्वविद्यालय,1992.
2. जान, मौली,“ जैनेन्द्र के उपन्यासों में नारी पात्र,” पी.एच.डी थीसिस, महात्मा गांधी विश्वविद्यालय,1993
3. जोण, अगस्टिन,“इलाचन्द्र जोशी के उपन्यासों में चरित्र- चित्रण: मनोवैज्ञानिक परिपेक्ष्य”, पी.एच.डी, थीसिस, महात्मा गांधी विश्वविद्यालय,1992.
4. जोस्फ़, कोच्चुराणी,“ मन्नू भण्डारी की कहानियों में नारी मनोविज्ञान”,पी.एच.डी थीसिस, महात्मा गांधी विश्वविद्यालय,2013.
5. पी.एन, ज्योति,“ मनोविश्लेणात्मक उपन्यासों के संदर्भ में जैनेन्द्र कुमार का कृतित्व, पी.एच.डी थीसिस, महात्मा गांधी विश्वविद्यालय, 1993
6. सिंह, सलेश कुमार, “वृन्दावनलाल वर्मा के ऐतिहासिक उपन्यासों में नारी मनोविज्ञान”, पी.एच.डी थीसिस,वी.बी पूर्वाचंल विश्वविद्यालय, 2012
7. सी, कुन्जुंजमा,“ जैनेन्द्र के उपन्यासों में नारी मनोविज्ञान”, पी.एच.डी थीसिस, महात्मा गांधी विश्वविद्यालय, 1998

हिन्दी कोश

1तिवारी, भोलानाथ (सं),“बृहत पर्यावाची कोश,” इलाहाबाद,1992.

2 दास, शामसुन्दर (सं),“हिन्दी शब्दसागर,” वाराणसी , 1928.

3 प्रसाद कालिका (सं),“मानविकी परिभाषाकि कोश,” दिल्ली ,राजकमल प्रकाशन, 1965

4 वर्मा, रामचंद्र (सं),“मानक हिन्दी कोश,“ प्रयाग, हिन्दी साहित्यसम्मेलन,1966

5 नगेन्द्र (सं),“मानविकी परिभाषिक कोश”, दिल्ली राजकमल प्रकाशन, 1965

अँग्रेजी कोश

1. " Encyolopaedia Britanca,'' vol-19,1951
2. Arthur (ED), "Sanskrit English dictionary'', Macdonell, 1893
3. Drever, James,"A dictionary of psychology", vol-5, 1952
4. Simpson, John,"The Oxford English Dictionary", vol-1,1884

पत्रिकाएँ

1. गौतम, पंकज (सं),"सबके दावेदार" , अंक60-, त्रैमासिक पत्रिका, आज़मगढ़, अगस्त 2008
2. चंद्र,सुभाष (सं)," देस हरियाणा", अकं-2, त्रैमासिक पत्रिका ,कुरुक्षेत्र, नम्बर-दिसम्बर, 2015
3. चंद्र,सुभाष (सं)," देस हरियाणा", अकं-6, त्रैमासिक पत्रिका,कुरुक्षेत्र,जुलाई-अगस्त, 2016
4. राजपाल, हुकुमचंद (सं),"सरोकार-शब्द" , अंक21-, त्रैमासिक पत्रिका, पटियाला, जुलाई-अगस्त, 2008
5. राजपाल, हुकुमचंद (सं),"सरोकार-शब्द" , अंक-38, त्रैमासिक पत्रिका, पटियाला,जनवरी-मार्च,2013
6. सुरजन, सर्वमित्रा (सं),"अक्षर पर्व", अकं-12, नई दिल्ली, मई, 2014